



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड ३—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

नई दिल्ली, शनिवार, मई २५, २०१३/ज्येष्ठ ४, १९३५

NEW DELHI, SATURDAY, MAY 25, 2013/JYAISTHA 4, 1935

रक्षोपाय महानिदेशक

(सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क)

अधिसूचना

नई दिल्ली, २५ मई, २०१३

विषय : ३०४ ग्रेड के स्टेनलेस स्टील हाट रोल्ड फ्लैट उत्पादों के चीन जन. गण. से भारत को आयातों के संबंध में रक्षोपाय जांच-अंतिम जांच परिणाम के संबंध में।

सा.का.नि. ३३८(अ).—

क. प्रक्रिया

१. चीन जन.गण से भारत में "३०० श्रृंखला की स्टेनलेस स्टील के हाट रोल्ड फ्लैट उत्पादों" के संवर्धित आयातों द्वारा कारित बाजार विकृति और बाजार विकृति की चुनौती से "३०० श्रृंखला की स्टेनलेस स्टील के हाट रोल्ड फ्लैट उत्पादों" के घरेलू उत्पादकों की रक्षा करने के लिए "३०० श्रृंखला की स्टेनलेस स्टील के हाट रोल्ड फ्लैट उत्पादों" के आयात पर रक्षोपाय शुल्क अधिरोपण करने के लिए सीमाशुल्क प्रशुल्क (परिवर्ती उत्पाद विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क) नियमावली, २००२ के नियम ५ के अंतर्गत मै. जिन्दल स्टेनलेस स्टील, १२ भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली-११००६६ द्वारा मेरे समक्ष एक आवेदन पत्र दायर किया गया है।

२. इस बात से सनुष्ट होते हुए कि नियम ५ की जरूरतों को पूरा कर लिया गया था, चीन जन.गण से ३०० श्रृंखला के स्टेनलेस स्टील के हाट रोल्ड फ्लैट उत्पादों के आयात के लिए रक्षोपाय जांच दिनांक २६ जून, २०१२ की अधिसूचना के तहत प्रारंभ की गई थी और उसी दिन भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था।

3. दिनांक 26 जून, 2012 के जांच शुरुआत नोटिस की एक प्रति घरेलू उद्योग द्वारा दायर आवेदनपत्र के अगोपनीय पाठ की एक प्रति सहित, केन्द्रीय सरकार के वाणिज्य मंत्रालय तथा अन्य संबंधित मंत्रालयों, चीन जन.गण की सरकार को नई दिल्ली स्थित उनके राजदूतावास के जरिए, तथा निम्नलिखित अन्य हितबद्ध पक्षकारों को रक्षोपाय नियमावली,02 के नियम 6(2) और 6 (3) के अनुसार प्रेषित की गई।

घरेलू उत्पादक

क. मै. जिन्दल स्टेनलेस स्टील लिमिटेड, 12 भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली-110066
 ख. भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड, इस्पात भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
 ग. शाह अलायज, शाह अलायज कारपोरेट हाउस सोला-कलोल रोड, सन्तोज ता. कलोल,
 जिला-गांधीनगर, गुजरात

आयातक

क. रत्नामणि मेटल्स एंड ट्यूब्ज एंड सर्व, सर्व सं. 474, ग्राम भीमसार तानजार, निकट-
 गांधीधाम, जिला-कच्छ, पिन 370240
 ख. भंडारी फ्वाइल्स एंड ट्यूब्स लिमिटेड, प्लाट सं. डी1-डी4, फेज-1 इण्डस्ट्रियल एरिया,
 एबी रोड, देवास (म.प्र.)
 ग. प्रकाश स्टीलेज लिमिटेड, प्लाट नं. 26, सेक्टर के डब्लयू सी, कलमबोली नवी मुम्बई,
 महाराष्ट्र
 घ. राजेन्द्र मैकेनिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड, 11, कामा इंडस्ट्रियल एस्टेट गोरेगांव ईस्ट,
 मुम्बई
 ड. फीनिक्स फ्वाइल्स प्रा. लिमिटेड प्लाट नं.3, विस्तार क्षेत्र, न्यू जी आई डीसी,
 उम्बरगांव, जिला-वलसाड, गुजरात
 च. डोमेट ट्रेडिंग प्रा. लिमिटेड, प्लाट सं. 1867, रोड नं. 25, केडब्लयूसी स्टील वेअर
 हाउसिंग काम्प्लेक्स, कलमबोली, महाराष्ट्र
 छ. संगीता मेटल (इंडिया) 26/24, 68/1, भूतल सिन्धी लेन, मुम्बई।
 ज. रहमानी स्टील हाउस 65/73, सीपी टैक रोड, मुम्बई
 झ. निशांत इनफिल प्रा. लिमिटेड 7, तालध्वन भुवन, प्रथम तल, आफ सं.1, तृतीय
 पंजरापोल लेन, मुम्बई
 झ. एसी स्टील शाप लाहिडी बिल्डिंग, भूतल 282 एस वी रोड 5वर खजवाडी लेन का
 कोना, मुम्बई

ट. कलालिटी फवाइल्स (इंडिया) प्रा. लिमिटेड 3, औद्योगिक विकास कालोनी, हिसार, हरियाणा

निर्यातक

- क. ताइयुआन लोहा एवं इस्पात (ग्रुप) कम्पनी लिमिटेड सं.2 जियानकाओपिंग ताइयुआन, शांकशी 30003, चीन
- ख. लियान्गझांग स्टेलनलेस स्टील कारपोरेशन न.1, लियांगझांग रोड, ईस्ट सेक्सन, इकनामिक टेक्नालोजी डिवलपमेंट जोन, गुआंगझोऊ 510760 चीन
- ग. बाओस्टील टावर, 370 पुडिआन रोड, शंघाई 200122 चीन
- घ. जिउक्वान आयरन एंड स्टील (ग्रुप) कम्पनी लिमिटेड सं. 12, जियान्गुआन डांग रोड, जियांगुआन, गान्सू
- ड. झान्गजियांगांग पोहांग स्टेनलेस स्टील कंपनी लिमिटेड, डाक्सिन रिवर साइड रोड, झान्गजिआंगांग सिटी, जियांगस, प्राविन्स, चीन

एसोसिएशन्स:-

- क. प्रासेस प्लांट एंड मशीनरी एसोसिएशन आफ इंडिया (पीपीएमए) 002 लोहा भवन, 91/93, पीडी मेल्लो रोड, मस्जिद (ई) मुम्बई-400034, भारत
- ख. अखिल भारतीय स्टेनलेस स्टील इंडस्ट्रीज एसोसिएशन (ए आई एस एस आई ए) 302, अरुण चैम्बर्स, मदन मोहन मालवीय रोड, मुम्बई, महाराष्ट्र-400034 भारत
- ग. स्टेलनलेस स्टील एक्सपोर्टर्स वेल्फेयर एसोसिएशन, पीडी-4ए पीतमपुरा, दिल्ली-110088 भारत
- घ. मै. दि तमिलनाडु स्टेनलेस स्टील मर्चन्ट्स एंड मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन, 13 रघुनायकुलु स्ट्रीट, द्वितीय तल, पार्क टाउन, चेन्नई-600003

4. चीन जन.गण के ज्ञात निर्यातकों, उपलब्ध जानकारी के अनुसार-चीन जन.गण की सरकार सहित भारत में ज्ञात आयातकों/उपयोक्ताओं तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रश्नावलियां इस अनुरोध के साथ भेजी गई कि वे इस जांच शुरुआत नोटिस के 30 दिन के अंदर अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करें।

5. (क) मैसर्स संगीता मेटल (इंडिया) 26/24, 68/1 (एफ/एच) भूतल, सिन्धी लेन, मुम्बई (ख) ताइयुआन आयरन एंड स्टील (ग्रुप) कम्पनी लिमिटेड सं.2, जियांगकाओपिंग

ताइयुआन, शांगसो 30003 चीन और (ग) लियांगझांग स्टेनलेस स्टील कारपोरेशन नं.1 लियांगझांग रोड, ईस्ट सेक्सन, इकनामिक टेक्नालोजी डिवलपमेंट जोन, गुआंगझोऊ 510760 चीन को प्रेषित जांच शुरुआत नोटिस वापस प्राप्त हो गए क्योंकि डाक प्राधिकारियों द्वारा उन्हें अधूरा पता, अथवा बिना पते के छोड़ गए आदि टिप्पणियों सहित उन्हें वापस कर दिया गया। तब, वापस आए नोटिसों की प्रतियां निदेशालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा कर दी गई।

6. चीन आयरन एंड स्टील एसोसिएशन (सीआईएसए), चीन, वाणिज्य मंत्रालय, चीन सरकार, चीन तथा तमिलनाडु स्टेनलेस स्टील मर्चन्ट्स एंड मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन से अनुरोध प्राप्त हुआ कि उन्हें हितबद्ध पक्षकार माना जाए। सभी अनुरोध स्वीकार कर लिए गए।

7. आवेदनकर्ता द्वारा प्रस्तुत जानकारी का यथासंभव सीमा तक घरेलू उत्पादकों के संयंत्रों का स्थल दौरा करके सत्यापन किया गया। इस सत्यापन रिपोर्ट का अगोपनीय पाठ सार्वजनिक फाइल में रखा गया।

8. इस निदेशालय द्वारा भेजी गई प्रश्नावलियों का निम्नलिखित पक्षकारों ने प्रत्युत्तर दिया

- क. मै. रेमी एडिस्टाहल ट्यूबुलर्स लिमिटेड, मुम्बई
- ख. मै. रामानी स्टील हाउस, मुम्बई
- ग. मै. केआर ट्रेड प्रैक्टिसेस, एडवोकेट्स एंड लीगल कन्सलेन्ट्स (मैसर्स दि तमिलनाडु स्टेनलेस स्टील मर्चन्ट्स एंड मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन की ओर से)
- घ. मै. भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड
- ड. आफ फेयर ट्रेड ब्यूरो, वाणिज्य मंत्रालय, चीन जनवादी गणराज्य की सरकार चीन जन.गण तथा चीन आयरन एंड स्टील एसोसिएशन, चीन की ओर से श्री राजीव जैन।
- च. मै. जे एस एल स्टेनलेस स्टील लिमिटेड की ओर से टीपीएम कन्सलटेन्ट्स श्री ए के गुप्ता
- छ. मै. आल इंडिया स्टेलनलेस स्टील एम्पोर्ट्स एसोसिएशन की ओर से मै. लक्ष्मी कुमारन तथा श्रीधरन

9. घरेलू उद्योग सहित सभी हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त अथवा अवाप्त अगोपनीय सूचना को निरीक्षण तथा एक हितबद्ध पक्षकार के विचारों पर अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा टिप्पणियां प्रस्तुत किए जाने के लिए सार्वजनिक फाइल में रखा गया। प्रारंभिक जांच परिणाम में

उपयुक्त निर्धारण करने के लिए किए गये सभी निवेदनों पर पहले ही विचार किया जा चुका है।

10. यह देखा जाता है कि जांच शुरुआत का नोटिस सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के सीमाशुल्क उपशीर्षक सं. 721911, 721912, 721913, 721914, 721921, 721922, 721923, 721924, 722011, 722012 के अंतर्गत वर्गीकृत न्यूनतम 6 प्रतिशत के निकिल (एन आई) संघटक, मालीब्लेनम, टाइटैनियम जैसे अन्य अलायिंग तत्वों की उपस्थिति युक्त अथवा उसके बिना अनिवार्यतः क्रोमियम युक्त सभी आस्टीनिटिक ग्रेडों के (सभी चौड़ाई की) 300 श्रृंखला की स्टैनलेस स्टील के हाट रोल्ड फ्लैट उत्पादों को विचाराधीन उत्पाद के रूप में विचार करते हुए जारी किया गया था। इस जांच शुरुआत नोटिस के प्रत्युत्तर में यह पाया गया कि कई हितबद्ध पक्षकारों ने यह मुद्दा उठाया कि इस उत्पाद के दायरे को कई तथ्यों के पहलुओं में त्रुटि रह गई है और यह कि 300 श्रृंखला की स्टैनलेस स्टील के हाट रोल्ड फ्लैट उत्पादों की पूरी श्रृंखला की जांच करने तथा उस पर रक्षोपाय शुल्क अधिरोपित करने से इस सेक्टर के सामान्य अनुक्रम में व्यापार की वास्तविक स्थिति प्रदर्शित नहीं होती है। चीन की सरकार, मैसर्स चीन आयरन एंड स्टील एसोसिएशन, मै. रामानी स्टील हाउस, मुम्बई आदि सहित सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों तथा उपुर्युक्त प्रस्तुतिकरणों पर घरेलू उद्योग के प्रत्युत्तरों की संवीक्षा करने पर यह निष्कर्ष लिकाला गया कि विचाराधीन उत्पाद का दायरा बहुत व्यापक है और इसे उपयुक्त एवं उचित क्षति विश्लेषण के प्रयोजन के लिए विभिन्न ग्रेडों में संशोधित करना/ संकुचित करना अपेक्षित है। इस बात पर विचार करते हुए कि प्रत्येक उपभोक्ता को विशिष्ट ग्रेड के हाट रोल्ड स्टैनलेस स्टील के उत्पादों की जरूरत होती है इसलिए 304 ग्रेड के उत्पादों की खपत करने वाले गैर 304 गैर के उत्पादों की खपत नहीं कर सकते हैं, 304 ग्रेड तथा ग्रेड 304 ग्रेड के उत्पादों के आयातों में उदेक स्पष्ट रूप से भिन्न है, इसी तरह घरेलू उद्योग का निष्पादन 304 ग्रेड उत्पादों के बारे में भिन्न-भिन्न है, इसलिए यह उपयुक्त समझा गया कि केवल विचाराधीन उत्पाद के दायरे को 304 ग्रेड के उत्पादों तक ही सीमित कर दिया जाए।

11. तदुनसार, उपलब्ध रिकार्डों हितबद्ध पक्षकारों तथा घरेलू उद्योग द्वारा की गई प्रस्तुतिकरणों के आधार पर विचाराधीन उत्पाद के दायरे को प्रतिबंधित/संकुचित कर दिया गया और चीन जनवादी गणराज्य से सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 की उप शीर्षक सं. 72191111, 72191112, 72191190, 72191200, 72191300, 72191400, 72192111, 72192112, 72192121, 72192122, 72192131, 72192132, 72192141, 72192142, 72192190, 72192211, 72192212, 72192219, 72192291, 72192292, 72192299, 72192310, 72192320, 72192390, 72192411, 72192412, 72192413, 72192419,

72192421, 72192422, 72192423, 72192429, 72192490, 72201110, 72201121, 72201122, 72201129, 72201190, 72201210, 72201221, 72201222, 72201229, 72201290 के अंतर्गत आने वाले “304 ग्रेड की स्टेनलेस स्टील के हाटोल्ड फ्लैट गोल्ड उत्पादों तथा न्यूनतम 6 प्रतिशत के निकिल (एन आई) अन्तर्वस्तु, जिसमें मोलीब्डेनम, टाइटैनियम आदि जैसे अन्य अलायिंग तत्वों की अनिवार्य अंतनिर्विष्ट उपस्थिति सहित अथवा उपस्थिति के बिना, युक्त सभी आस्टीनिटिक ग्रेड के अंतर्गत आने वाले उत्पादों के आयातों” पर यथा मूल्य 20 प्रतिशत की दर से 200 दिनों के लिए विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क अधिरोपित करने की सिफारिश दिनांक 24.9.2012 के आदेश एफ सं. डी-22011/06/2012 के तहत की गई थी।

12. उसके पश्चात टंकण संबंधी त्रुटि का सुधार करने और विचाराधीन उत्पाद की चौड़ाई 1605 मिमी तक प्रतिबंधित करने के लिए क्रमशः 12 नवम्बर, 2012 और 23 नवम्बर, 2012 को एक शुद्धिपत्र जारी किया गया। अनंतिम रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण वित्त मंत्रालय की दिनांक 04 जनवरी, 2013 की अधिसूचना संख्या 1/2013 सीमाशुल्क (रक्षोपाय) के तहत किया गया।

13. 27 दिसम्बर, 2012 को एक सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया गया। तदुपरांत, महानिदेशक में परिवर्तन होने के कारण एवं यह तथ्य कि रक्षोपाय नियमावली के अनुसार 8 महीनों की निर्धारित अवधि 25 फरवरी, 2013 को व्यपगत हो रही थी इसलिए केन्द्र सरकार द्वारा दिनांक 26 फरवरी, 2013 की अधिसूचना सं.24/2013-सीमाशुल्क (एनटी) के तहत अंतिम जांच परिणाम जारी करने के लिए समयावधि बढ़ायी गयी थी। तत्पश्चात 11 अप्रैल, 2013 को एक द्वितीय मौखिक सुनवाई का आयोजन किया गया। सार्वजनिक सुनवाई के समय निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने मौखिक प्रस्तुतिकरण किए:

- क. याचिकाकर्ता/घरेलू उद्योग
- ख. द्यूरो आफ फेयर ट्रेड, वाणिज्य मंत्रालय, चीन जनवादी गणराज्य की सरकार, चीन जन गण
- ग. चीन आयरन एंड स्टील एसोसिएशन, चीन
- घ. भारत में चीन का राजदूतावास
- ड. रामानी स्टील हाइस
- च. पैसिफिक मेटल ट्रेडिंग कम्पनी
- छ. अखिल भारतीय स्टेनलेस स्टील आयातक एसोसिएशन
- ज. धातु एवं स्टेनलेस स्टील व्यापारी एसोसिएशन

झ. क्वालिटी फ्यायल्स (इंडिया) प्रा. लिमिटेड

ञ. तमिलनाडु स्टेनलेस स्टील मर्चन्ट्स एवं मैन्यूफक्चरर्स एसोसिएशन (वे सार्वजनिक सुनवाई में उपस्थित हुए, उन्होंने कोई मौखिक प्रस्तुतिकरण नहीं किया, परंतु अपना लिखित प्रस्तुतिकरण प्रदान किया)

14. यद्यपि मै. जेएसएस स्टील इंडिया लिमिटेड तथा मैसर्स इंडियन स्टेनलेस स्टील डिवलपमेंट एसोसिएशन हितबद्ध पक्षकार नहीं थे परन्तु दोनों पक्षकारों के प्रतिनिधियों को सार्वजनिक सुनवाई के समय मौखिक प्रस्तुतिकरण करने की अनुमति दे दी गई। मै. जेएसएस स्टील इंडिया लिमिटेड ने, उसके बाद लिखित प्रस्तुतिकरण दर्ज किया जिस पर इस अंतिम जांच परिणाम में विचार किया गया है। तथापि, चूंकि मैसर्स इंडियन स्टेनलेस स्टील डिवलपमेंट एसोसिएशन ने कोई लिखित प्रस्तुतिकरण नहीं किया था इसलिए उनके दृष्टिकोण पर कोई विचार नहीं किया गया।

15. सीमाशुल्क प्रशुल्क (परिवर्ती उत्पाद विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क) नियमावली, 2002 के नियम 6 के उपनियम(6) में दी गई शर्तों के अनुसार सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले सभी हितबद्ध पक्षकारों से अनुरोध किया गया कि वे मौखिक रूप में प्रस्तुत किए गए अपने विचारों को लिखित रूप में भी प्रस्तुत करें।

16. एक हितबद्ध पक्षकार द्वारा प्रस्तुत लिखित प्रस्तुतिकरण की प्रति अन्य सभी हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराई गई। सभी हितबद्ध पक्षकारों को अन्य हितबद्ध द्वारा किए गए लिखित प्रस्तुतिकरण के संबंध में अपने प्रति प्रत्युत्तर, यदि कोई हो, देने का भी अवसर दिया गया।

17. 11 अप्रैल, 2013 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई के अनुसरण में सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अभिव्यक्त विचारों की जांच की गई और समुचित निर्धारण करते समय उनको ध्यान में रखा गया। प्राप्त अथवा अवाप्त जानकारी के अगोपनीय पाठ की प्रति सार्वजनिक फाइल में रखी गई।

ख. घरेलू उत्पादकों (आवेदक) के विचार

18. विभिन्न मुद्दों पर आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत विचारों का संक्षेप निम्नलिखित उल्लेख किया जाता है:

क. इस याचिका में विचाराधीन उत्पाद '304 ग्रेड की स्टेनलेस स्टील के हाटोल्ड फ्लैट गोल्ड उत्पादों तथा न्यूनतम 6 प्रतिशत के निकिल (एन आई) अन्तर्वर्स्तु, जिसमें मोलीब्डेनम, टाइटैनियम आदि जैसे अन्य अलायिंग तत्वों की अनिवार्य अंतर्विष्ट उपस्थिति

सहित अथवा उपस्थिति के बिना, युक्त सभी आस्टीनिटिक ग्रेड के अंतर्गत आने वाले उत्पादों के आयातों” जिसे एतदपश्चात हाटरोल्ड स्टेनलेस स्टील के रूप में कहा गया है। सम्बद्ध वस्तु को सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम 1975 के उपशीर्षक संख्या 721911, 721912, 721913, 721914, 721921, 721922, 721923, 721924, 722011, 722012 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि, महानिदेशक (रक्षोपाय) ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अभिव्यक्त विचारों तथा घरेलू उद्योग द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों की जांच करने के पश्चात उत्पाद के दायरे को सीमा शुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के उपशीर्ष संख्या 7219111, 7219112, 72191190, 72191200, 72191300, 72191400, 72192111, 72192112, 72192121, 72192122, 72192131, 72192132, 72192141, 72192142, 72192190, 72192211, 72192212, 72192219, 72192291, 72192292, 72192299, 72192310, 72192320, 72192390, 72192411, 72192412, 72192413, 72192419, 72192421, 72192422, 72192423, 72192429, 72192490, 72201110, 72201121, 72201122, 72201129, 72201190, 72201210, 72201221, 72201222, 72201229, 72201290 के अंतर्गत आने वाले “304 ग्रेड की स्टेनलेस स्टील के हाट रोल्ड फ्लैट गोल्ड उत्पादों तथा न्यूनतम 6 प्रतिशत के निकिल (एन आई) अन्तर्वस्तु, जिसमें मोलीब्डेनम, टाइटैनियम आदि जैसे अन्य अलिंग तत्वों की अनिवार्य अंतर्निविष्ट उपस्थिति सहित अथवा उपस्थिति के बिना, युक्त सभी आस्टीनिटिक ग्रेड के अंतर्गत आने वाले उत्पादों के आयातों” तक सीमित कर दिया जिसे एतदपश्चात प्रारंभिक जांच परिणाम में हाट रोल्ड स्टेनलेस स्टील कहा गया है जो, इस स्तर पर, विचाराधीन उत्पाद है। सम्बद्ध वस्तु का प्रयोग प्रासेस उपकरणों, रि-रोलिंग, रिएक्टर वैसेल्स, मटीरिल हैंडलिंग उपकरणों रेलवेज, पाइपों और ट्यूबों, आटोमोटिव संघटकों, रोल्ड फार्म्ड सेक्सनों, आर्किटेक्चर भवनों एवं निर्माण, औद्योगिक फेब्रिकेशनों आदि में किया जाता है।

ख. घरेलू उद्योग ने 1230 मिमी तक की मोटाई के उत्पाद का उत्पादन एवं उसकी आपूर्ति हिसार से किया है जबकि उड़ीसा में स्थापित एक नई उत्पादन क्षमता ने 1650 मिमी तक की सुविधा विकसित कर ली है।

ग. रक्षोपाय शुल्क दायरा समान तथा प्रत्यक्षता प्रतिस्पर्धी मर्दों पर लागू होता है। “प्रत्यक्षता: प्रतिस्पर्धी वस्तु के दायरे को वर्तमान प्रतिस्पर्धा तक सीमित नहीं किया गया है। इसे भविष्य/भावी प्रतिस्पर्धा के लिए भी विस्तारित किया गया है।

घ. यह एक सुस्थापित प्रक्रिया है कि केवल उसी उत्पाद प्रकार को घरेलू उद्योग के दायरे में अपवर्जित कि जाता है जिसके लिए घरेलू उद्योग प्रत्यक्षता: प्रतिस्पर्धी मर्दों का प्रस्ताव

नहीं करती है। रक्षोपाय विधि का उद्देश्य घरेलू उद्योग को आयातों से होने वाली क्षति का निराकरण करना है। रक्षोपाय विधि के अंतर्गत उत्पाद के दायरे में समरूप एवं प्रत्यक्षतः प्रतिस्पर्धी वस्तुएं शामिल होती हैं। अतः, यद्यपि घरेलू उद्योग एक विशिष्ट प्रकार के विचाराधीन उत्पाद का नहीं करता है फिर भी यह बिना किसी तर्क के विचाराधीन उत्पाद की प्रत्यक्षतः प्रतिस्पर्धी मद है।

इ. अधिकांश एकीकृत उत्पादक वैश्विक रूप से एचआर उत्पादकों तथा सीआर उत्पादों, जिनका उत्पादन एचआर उत्पादों को रोल करके किया जाता है, का उत्पादन करते हैं। वैश्विक रूप से उत्पादक एक ही संयंत्र/विनिर्माण सुविधा पर विभिन्न प्रकार के उत्पादों का उत्पादन कर सकते हैं और अदल-बदल कर विभिन्न प्रकार के उत्पादों का उत्पादन कर सकते हैं। उत्पादक भी पहले “उच्चतर चौड़ाई” की क्वाइलों का उत्पादन करते हैं और फिर उसे ‘अंतिम उपभोक्ताओं’ द्वारा अपेक्षित आकार की “कम चौड़ाई” की (उनके द्वारा या स्लिटर्स द्वारा या रि-रोलरो द्वारा) ट्रिम किया जा सकता है। क्वाइलों के विपरीत उत्पादक अंतिम उपभोक्ता द्वारा अपेक्षित आकार की प्लेटों का उत्पादन करते हैं।

ज. क्वाइल और प्लेट उत्पाद के केवल दो विभिन्न रूप हैं। द्वितीयतः क्वाइलों और प्लेटों दोनों का आयात चीन से किया गया है। तृतीयतः प्रतिवादी एसोसिएशन ने स्वयं पाटनरोधी शुल्क के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी के निर्णय पर भरोसा किया है जिसमें क्वाइल और प्लेटों दोनों को विचाराधीन उत्पाद के दायरे के अंतर्गत शामिल किया गया था और फिर भी एसोसिएशन ने प्लेटों का अपर्वर्जन करने की मांग की है। एसोसिएशन दोहरे मानदंड नहीं अपना सकती है। चतुर्थतः, किसी भी उत्पाद की खपत क्वाइल कार्य में नहीं की जाती है। प्रत्येक क्वाइल को पहले काटा जाता है और फिर उसका उपयोग किया जाता है। उत्पाद के दायरे से प्लेटों का अपर्वर्जन करने का आशय घरेलू उद्योग को लगातार क्षति होगी। पांचवे, रक्षोपाय जांच के दायरे में समान तथा प्रत्यक्षतः प्रतिस्पर्धी दोनों तरह की मर्दें शामिल होगी। वर्तमान प्रतिस्पर्धा में प्रत्यक्षतः प्रतिस्पर्धी वस्तुओं का दायरा प्रतिबंधित नहीं है।

छ. कुछ अंतिम उपभोक्ता जैसे दुग्धोत्पादन खंड तथा टैंक भंडारण दोनों का प्रयोग करते हैं। अधिक चौड़ाई वाले उत्पादों का आयात किया जा सकता है और उनका उन उपकरणों के लिए प्रयोग किया जा सकता है जिनको कम चौड़ाई की जरूरत होती है। अतः, यदि इन उपभोक्ताओं को अनुप्रयोग के प्रतिबंध के बिना अधिक चौड़ाई वाले उत्पादों का आयात करने की अनुमति दी जाती है तो उसका आशय होगा कि प्रस्तावित रक्षोपाय शुल्क में हस्तक्षेप करना। अतः यह छूट केवल विशिष्ट अनुप्रयोगों तक प्रतिबंधित कर दी जानी चाहिए।

ज. इस वस्तु के दो अन्य उत्पादक भी हैं परंतु आवेदक कम्पनी मै. जिन्दल स्टेनलेस स्टील लिमिटेड कुल उत्पादन के 90 प्रतिशत से अधिक का उत्पादन करती है और अतः वह प्रमुख उत्पादक है।

झ. विचाराधीन उत्पाद के आयातों में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान समग्र रूप से वृद्धि हुई है तथा इसमें अभी हाल ही की अवधि में आयातों में तीव्र वृद्धि हुई। अभी हाल ही की अवधि में आयातों में एकाएक तीव्र एवं भारी वृद्धि हुई। संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान भारत में उत्पादन के संबंध में आयातों में भारी वृद्धि हुई और अभी हाल ही की अवधि में यह वृद्धि बहुत अधिक थी। अतः, यह देखा जा सकता है कि विचाराधीन उत्पाद के आयातों में अभिनव, आकस्मिक अत्यधिक एवं तीव्र वृद्धि हुई है। इस संबंध में नियमों के अंतर्गत निर्धारित शर्त पूर्णतया पूरी होती है।

झ. आवेदक ने 3 वर्षों की अवधि के लिए क्षति एवं आयात से संबंधित आंकड़ों को दर्ज किया है।

ट. अप्रत्याशित विकास: जिसकी बजाए से आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई, वह है कि चीन का तीव्र क्षमता विकास जो घरेलू मांग में हुई वृद्धि की तुलना में बहुत अधिक है, जिसके कारण वहां बेशी उत्पादन हुआ तथा भारी अधिशेष हुआ। चीन वर्ष 2009 तक स्टेनलेस स्टील उत्पादों का निकल आयात था और तत्पश्चात उसका निर्यातक बन गया।

ठ. चीन के उत्पादकों को लागत लाभ: निकिल पिंग आयरन के रूप में सस्ती निकिल की उपलब्धता तक आसान पहुंच ने चीन के स्टेनलेस स्टील उत्पादकों को अन्य देशों में अपने प्रतिस्पर्धियों की तुलना में अपनी उत्पादन लागत कम करने में सक्षम बनाया है। निकिल पिंग आयरन सुविधाओं का विकास पिछले 2-3 वर्षों के दौरान ही हुआ है। इसके कारण देश को अभी हाल ही में अपना उत्पादन बढ़ाने तथा वैश्विक बाजार में अपना आधिपत्य जमाने का अयसर मिल गया। चीन में निकिल पिंग आयरन का विकास खासकर स्टेनलेस स्टील उत्पादों के लिए ही किया गया था।

ड. चीन के उत्पादकों को अन्य लाभ: फेरो क्रोम उत्पादन लागत में क्रोम अयस्क जो स्टेनलेस स्टील विनिर्माण करने का एक अनिवार्य तत्व है, के बाद कोक द्वितीय सबसे बड़ी लागत होती है। चीन के पास कोकिंग कोल के भारी भंडार हैं, इसका चीन को भारत की तुलना में भारी लाभ है। चीन की कम्पनियों की उधार लागत 5 प्रतिशत से भी कम है क्योंकि क्रूर को चीन की सरकार/ उसकी एजेन्सियों द्वारा विनियमित किया जाता है।

३. संबंधित उत्पाद की मांग में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, प्रदान कराए गए साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि वर्ष 2015 की समाप्ति तक, चीन की स्टेनलेस स्टील उत्पादन क्षमता 20 मिलियन टन तक पहुंच जाएगी और इसका आउटपुट 19 मिलियन टन तक पहुंच जाएगा तथा चीन में इसकी मांग 16 मिलियन टन तक पहुंच जाएगी, इस प्रकार इसमें 3 मिलियन टन बेशी बच जाएगा। सम्बद्ध देश में सम्बद्ध वस्तु की भारी उत्पादन क्षमता तथा उनकी निर्यातोन्मुख्यता तथा भारत में सम्बद्ध वस्तु की बढ़ती भारी मांग पर विचार करते हुए, इस बात की पूरी संभावना है कि आयातों में लगातार वृद्धि होती रहेगी, जिससे बाजार विकृति होगी और घरेलू उद्योग के लिए बाजार विकृति की भारी चुनौती उत्पन्न हो जाएगी।

४. बाजार हिस्सा बढ़ते आयातों के कारण घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में कमी आई है तथा आयातों का बाजार हिस्सा बढ़ा है। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट ने घरेलू उद्योग के उत्पादन एवं क्षमता उपयोग पर विपरीत प्रभाव डाला है।

५. आयातों में वृद्धि से वर्ष 2010-11 में घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री में भारी गिरावट आई। हालांकि, घरेलू उद्योग के उत्पादन और घरेलू बिक्री में वर्ष 2011-12 में कुछ सुधार प्रदर्शित हुआ तथापि, यह वर्ष 2009-10 में रिकार्ड किए गए स्तर से अभी भी कम था।

६. क्षमता: घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता में भारी वृद्धि की है और उड़ीसा में एक नए हरित संयंत्र की स्थापना की है। इस प्रकार घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि होनी चाहिए थी जबकि, चीन से आयातों की वृद्धि होनी चाहिए थी जबकि, चीन से आयातों की वृद्धि के कारण उत्पादन का स्तर वर्ष 2009-10 के स्तर तक भी नहीं पहुंच सका।

७. उत्पादन लागत: स्टेनलेस स्टील कतरन तथा निकिल की कीमतों में वृद्धि से उत्पादन लागत में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग ने भी अपनी कीमतें बढ़ाई परंतु यह वृद्धि इनको उत्पादित करने तथा उनकी बिक्री करने की लागत से बहुत न्यून थी इसलिए यह उपभोक्ताओं को प्रलोभित करने में अक्षम रही। इतनी विपरीत तथा न्यून कीमतों के बावजूद चीन से आयातों की मात्रा में महोर्मि बनी रही क्योंकि चीन के उत्पादकों द्वारा बहुत कम कीमतों पर माल का प्रस्ताव किया जा रहा था।

थ. आयातों की उत्तराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत कम थी। आयातों की उत्तराई कीमत बिक्री कीमत से भी बहुत न्यूनतर थी। आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में अधेरदन हो रहा है।

न. घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग कम उत्पादन के परिणामस्वरूप बुरी तरह से प्रभावित हुआ है और विचाराधीन उत्पाद की मांग में वृद्धि के बावजूद क्षमता उपयोग में गिरावट आई है।

प. मालसूची: याचिकाकर्ता को भारी संख्या में संग्रहित मालसूची का सामना करना पड़ा। मालसूची के स्तर में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई जबकि अभी हाल ही अवधि में इसमें बहुत अधिक वृद्धि हुई।

फ. काम बंदी: याचिकाकर्ता को कई बार और अक्सर उत्पादन निलम्बन का सामना करना पड़ा। इस संबंध में स्टील संयंत्र की विशेषताओं को नोट करना संगत होगा। यदि दो बैचों के बीच में लगभग तीन घंटे की कामबंदी होती है तो इसको पुनः प्रारंभ करने के लिए ऊर्जा की खपत 15-20 प्रतिशत अधिक होगी। अतः, संयंत्र की इस निहित प्रवृत्ति के कारण फरनेस को सतत आधार पर अथवा इसके क्षमता उपयोग के इष्टतम स्तर तक गर्भ रखना होता है। इस क्षमता उपयोग को कम करने का परिणाम यह होगा कि उत्पादन की प्रति यूनिट निर्धारित उपरिशीर्ष लागत अधिक होगी तथा विद्युत की अत्यधिक खपत के कारण इसकी परिवर्तनशील लागत भी अधिक हो जाएगी। अतः, विनिर्माता के लिए अंतिम आश्रय यही रह जाता है कि वह अपना संयंत्र बंद कर दे।

ब. घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में अभी हाल ही की अवधि में भारी गिरावट आई है। विचाराधीन उत्पाद की बिक्री लागत में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। परंतु घरेलू उद्योग कच्चे माल की कीमतों में बढ़ोतारी तथा सस्ते आयातों की मौजूदगी के कारण अपनी बिक्री कीमत उस अनुपात में बढ़ाने में अक्षम रहा जिस अनुपात में उसकी बिक्री लागत में वृद्धि हुई थी। परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित लाभ में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई।

भ. निवेश पर अर्जन ने भी उसी प्रवृत्ति का अनुपालन किया जो लाभ की प्रवृत्ति थी। सम्बर्धित आयातों की मौजूदगी के कारण निवेश पर अर्जन में गिरावट आई।

म. घरेलू उद्योग पर पहले से ही प्रवृत्त बाजार विकृति विचाराधीन उत्पाद के संवर्धित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को बाजार विकृति की चुनौती और अधिक हो गई थी।

य. कम कीमत के आयातों के अलावा कोई अन्य ऐसे कारक नहीं है जिन्हें उद्योग की बाजार विकृति के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सके। इन आयातों पर पाटनरोधी शुल्क कुल आयातों में चीन के आयातों के हिस्से में भारी वृद्धि हुई जबकि अन्य देशों से आयातों में भारी गिरावट आई।

कक. इस अधिसूचना में वर्तमान दायरा स्पष्ट है और इसके लिए किसी अन्य स्पष्टीकरण की जरूरत नहीं है। यह नोट किया जा सकता है कि ग्रेड 301 तथा 304 के अलावा 300 श्रृंखला में कोई अन्य ऐसा ग्रेड नहीं है जिसमें न्यूनतम निकिल अन्तर्वर्स्तु 6 प्रतिशत हो। अन्य सभी ग्रेडों में न्यूनतम निकिल अन्तर्वर्स्तु 8 प्रतिशत से प्रारंभ होती है।

खख. याचिकाकर्ता ने घरेलू उद्योग के संबंध में 304 ग्रेड और 304 ग्रेड के अलावा की जानकारी अलग-अलग उपलब्ध कराई है। इसने पुनः यह प्रस्तुत किया है कि:-

i. 304 ग्रेड के आयातों में 304 ग्रेड के अलावा के आयातों की तुलना में भारी वृद्धि हुई है।

ii. एक ओर, 304 ग्रेड तथा 304 ग्रेड के अलावा अन्य ग्रेड के आयात की मात्रा और दूसरी ओर, इस क्षेत्र में घरेलू उद्योग का निष्पादन स्पष्टतः यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग को चीन से हुए आयातों के कारण भारी बाजार विकृति का सामना करना पड़ा है। यह बाजार विकृति 304 ग्रेड के मामले में अधिक है। तथापि, याचिकाकर्ता को 304 ग्रेड के अलावा अन्य ग्रेडों में बाजार विकृति का सामना करना पड़ रहा है। इसके अतिरिक्त, यदि रक्षोपाय शुल्क केवल 304 ग्रेड तक प्रतिबंधित कर दिया जाता है तो 304 ग्रेडों के अलावा अन्य ग्रेडों में आयात बढ़ जायेग।

iii. याचिकाकर्ता को सुझाव दिया गया कि वह 304 ग्रेड के स्टेनलेस स्टील के हॉट रोल्ड फ्लैट उत्पादों का लेन-देन वार आंकड़े/ उत्पादन/ बिक्री/ निर्यात/ मालसूची के आंकड़े तथा क्षति मार्जिन का विवरण उपलब्ध कराये।

गग. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कथित रूप से लगाए गए आरोप के विपरीत बिक्री, 300 श्रृंखला का इन तीन महीने के लिए औसत माहवार उत्पादन क्रमशः 11512 मी.टन, 11875 मी.टन और 15126 मी.टन रहा है। इसी तरह 300 श्रृंखला के लिए इन तीन महीनों की औसत माहवार मालसूची क्रमशः 7236 मी.टन, 6175 मी.टन और 7658 मी.टन रही है। इसके अतिरिक्त, यदि अशुद्ध आंकड़ों पर विचार करे तो भी उत्पादन (300 श्रृंखला के लिए)

के प्रतिशत के रूप में आधार वर्ष में 37 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2011-12 में 71 प्रतिशत हो गई और ग्राही खपत के प्रतिशत के रूप में मालसूची को अनदेखा कर दिया जाना चाहिए क्योंकि ग्राही खपत कोई संगत कारक नहीं है।

घघ. याचिकाकर्ता ने 304 ग्रेड के स्टेनलेस स्टील के हॉट रोल्ड फ्लैट उत्पादों से संबंधित सभी अपेक्षित आंकड़े प्रदान कराये हैं।

ड.ड. यद्यपि किसी हितबद्ध पक्षकार को जांच में भाग लेने तथा अपने तर्क प्रस्तुत करने का अधिकार है, तथापि इसका पहला दायित्व है कि, महानिदेशक द्वारा विनिर्दिष्ट संगत जानकारी प्रदान करें। संगत जानकारी प्रदान कराने के लिए महानिदेशक ने एक प्रश्नावली निर्धारित की है। इस विनिर्धारण में कोई ऐसी एसोसिएशन बना कर हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता है जिसका कोई अस्तित्व न हो।

चच. रक्षोपाय मामले में क्षति की शुरुआत कम से कम न्यूतर परन्तु उच्चतर बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। हर हाल में यह मामला पूरी तरह से असंगत है। घरेलू उद्योग से संबंधित आंकड़े/ सूचना और प्रारंभिक जांच परिणाम स्पष्टतः यह स्थापित करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के आयातों के संबंध में तीव्र उद्वेग के कारण घरेलू उद्योग को टीपीएसएसएम विधि के अनुरूप क्षति हुई है।

छछ. याचिकाकर्ता ने यह प्रस्तुत किया है कि कंपनी द्वारा अपनी वार्षिक रिपोर्ट में किया गया अभिकथन कंपनी के कार्य निष्पादन के संबंध में है और यह कंपनी द्वारा उत्पादित अथवा बिक्री किये गये सभी उत्पादों के संबंध में है। इसके अतिरिक्त, यह सभी अभिकथन पण्धारियों, वित्तीय संस्थाओं, भारत सरकार और आम जनता के लिए हैं और इस कारण यह कंपनी के घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजार के संदर्भ में दोनों प्रचालनों से संबंधित सूक्ष्म एवं दीर्घ स्थितियों से निपटता है जिसमें कंपनी द्वारा उत्पादित सभी उत्पाद, कच्चे माल और डाउनस्ट्रीम उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद शामिल हैं।

जज. बिक्रियों का घरेलू व्यापार बिक्री, ग्राही बिक्री और नियांतों के बीच पृथक्करण किया गया है। संवर्धित आयातों का प्रभाव ग्राही खपत न तो हो सकता है और न ही था और केवल अलग-अलग निष्पादन ही यह बता सकता है कि घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति संवर्धित आयातों के कारण हुई अथवा किसी अन्य कारक के कारण।

झझ. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उल्लेख किये गये निर्णय यह दर्शाते हैं कि प्राधिकारी को घरेलू उद्योग के सभी अंगों की जांच कर लेनी चाहिए तथापि, घरेलू उद्योग के सभी पहलुओं की जांचकरने के पश्चात यह प्राधिकारी को अपने परिणाम घरेलू उद्योग के किसी एक भाग के जांचपरिणाम पर आधारित रखने को प्रतिबंधित करते हैं।

तत्र. महानिदेशक ने क्षति की जांच विचाराधीन उत्पाद के संबंध में की है और इसमें ग्राही खपत को शामिल किया गया है।

टट. याचिकाकर्ता ने आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिबंधित चौड़ाई के संबंध में किया है और यह देखा जाता है कि, अधिक चौड़ाई वाले उत्पादों का अपवर्जन कर दिये जाने के पश्चात आंकड़ों में केवल मामूली सा अंतर रह जाता है। अतः प्रतिबंधित चौड़ाई के कारण प्राधिकारी द्वारा किये गये निर्णय में कोई परिवर्तन नहीं हो सका।

ठठ. अखिल भारतीय स्टेनलेस स्टील आयातक एसोसिएशन की कोई स्थानीय महत्त्व नहीं और इस कारण वह प्रस्तुतिकरण नहीं कर सका। अखिल भारतीय स्टेनलेस स्टील आयातक एसोसिएशन के नाम की अथवा उसकी तरह की कोई पंजीकृत एसोसिएशन नहीं है। चूंकि, एसोसिएशन का नाम-पता जात नहीं है इसलिए उसके प्रत्युत्तर को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।

ग. हितबद्ध पक्षकारों के विचार

19. ब्यूरो ऑफ फेयर ट्रेड, वाणिज्य मंत्रालय, चीन जनवादी गणराज्य, चीन जन.गण की सरकार तथा चीन के लोहा एवं इस्पात एसोसिएशन, चीन द्वारा किया गया प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित है:

प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत का उल्लंघन

क. दिनांक 24 सितम्बर, 2012 का प्राथमिक जांच परिणाम प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों और रक्षोपाय करार का सकल उल्लंघन करके जारी किया गया है क्योंकि महानिदेशक (रक्षोपाय) ने अन्य हितबद्ध पक्षकारों को सूचित किये बिना विचाराधीन उत्पाद के दायरे को एक पक्षीय से बदल दिया तथा घरेलू उद्योग से प्राप्त संशोधित सूचना के संबंध में कोई टिप्पणी नहीं मांगी गई थी।

ख. रक्षोपाय संबंधी करार के अनुच्छेद-3 में सभी हितबद्ध पक्षकारों को नोटिस देने का उत्तरदायित्व जांचकर्ता प्राधिकारी को सौंपा गया है ताकि अन्य हितबद्ध पक्षकार घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गये दावों का प्रत्युत्तर दे सकें।

उत्पाद का दायरा

ग. विचाराधीन उत्पाद के विवरण में संशोधन किये जाने की जरूरत है क्योंकि ऐसा न करने से गैर-304 ग्रेड के भारी संख्या में अन्य उत्पाद भी रक्षोपाय शुल्क के अंतर्गत आ जायेंगे। 304 श्रृंखला में निकिल अंतर्वर्स्तु 8 से 12 प्रतिशत के बीच है, न कि 6 प्रतिशत अथवा अधिक। 304 श्रृंखला के अंतर्गत घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित किये गये सभी प्रकार के उत्पादों में निकिल अंतर्वर्स्तु 8 से 10.50 प्रतिशत के बीच होती है। यह प्रस्तुत किया जाता

है कि महानिदेशक रक्षोपाय को चाहिए कि वे घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद विनिर्देशनों के संबंध में विचाराधीन उत्पाद को परिभाषित करें।

क्षति संवर्धित आयातों के कारण नहीं हुई

घ. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा दिनांक 11 अक्टूबर, 2011 को एफएफ सं. 14/12/2010-डीजीएडी के तहत जारी स्टेनलेस स्टील के सभी हॉट रोल्ड फ्लैट उत्पादों के संबंध में वर्ष 2007-08 की अवधि के लिए 880000 मी.टन क्षमता का दावा किया गया है। वर्तमान याचिका में यह दावा किया गया है कि स्टेनलेस स्टील (उसी उत्पाद) के हॉट रोल्ड सभी उत्पादों के लिए दावाकृत संयुक्त क्षमता वर्ष 2009-10 के लिए 720000 थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि याचिकाकर्ता ने जांच प्राधिकारियों के समक्ष झूठे वादे प्रस्तुत किये हैं और उनके द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना पर भरोसा अथवा विश्वास नहीं किया जा सकता है।

ड. वर्तमान जांच में, याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि उन्होंने अपनी क्षमता 78000 मीट्रिक टन से बढ़ाकर 138000 मीट्रिक टन कर ली है, जबकि कंपनी द्वारा जारी प्रेस रिलीज में स्पष्ट रूप से यह उल्लेख किया गया है कि उड़ीसा स्थित संयंत्र वर्ष 2012-13 में प्रचालनात्मक हो जाएगा। इस तथ्य के मद्देनजर, यह स्पष्ट है कि उड़ीसा की क्षमता के विस्तार में जांच अवधि के दौरान कोई विस्तार नहीं किया गया है और याचिकाकर्ता का यह दावा कि जांच की अवधि के दौरान उन्होंने 1380000 मीट्रिक टन की क्षमता स्थापित कर ली है, पूरी तरह ये गलत है।

च. जांचकर्ता प्राधिकारी को अपनी जांच केवल हिसार स्थित संयंत्र पर ही आधारित रखनी चाहिए, न कि उड़ीसा स्थित संयंत्र की सूचना के आधार पर।

छ. संवर्धित आयातों के संबंध में महानिदेशक (रक्षोपाय) के जांच परिणाम गलत है। क्योंकि संवर्धित आयातों तथा घरेलू उद्योग को होने वाली गंभीर क्षति अथवा गंभीर क्षति की चुनौती के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है। यदि जांचकर्ता प्राधिकारी ने भारतीय उत्पादकों के क्षमता उपयोग में आयी गिरावट के कारणों के संबंध में गंभीरता से विचार किया होता तो उन्हें क्षति तथा अन्य कारकों के बीच कारणात्मक संबंध प्राप्त नहीं हो पाता। अन्य कारक भी यह प्रदर्शित करते हैं कि घरेलू उद्योग की आयातों से संबंधित सिद्धांत घरेलू उद्योग के लिए क्षतिकारी कारणों का संबंध करना व्यवहार्य नहीं है।

जांच न किये गये अन्य कारकों के कारण हुई क्षति

ज. प्रारंभिक जांच परिणाम द्वारा उन अन्य कारकों के लिए गैर उत्तरदायी विश्लेषण प्रदान करना और उसका समाधान करना अनिश्चित प्रतीत होता है क्योंकि उनसे आयातों की

तरह ही घरेलू उद्योग को बाजार विकृति की चुनौती उत्पन्न हो जायेगी। प्रारंभिक जांच परिणाम में यह उल्लेख किया गया है कि “संवर्धित आयातों के कारण बाजार विकृति हुई है और उसी समय में घरेलू उद्योग को उसके संबंध में उसकी चुनौती भी उत्पन्न हुई है। तथापि यह अभिकथन पूरी तरह से गलत है।

झ. आवेदक संवर्धित आयातों तथा इसके वित्तीय निष्पादन में गिरावट अथवा इसके द्वारा सहन की गई वास्तविक क्षति की अवस्थिति प्रदर्शित करने में असफल रहते हैं। आवेदक द्वारा उल्लिखित कुछ अस्थायी, अल्प अवधि के तत्वों द्वारा आयातों में बढ़ोतरी नहीं की गई है।

ज्र. कंपनी की प्रबंध समिति ने लाभ प्रदायकता में गिरावट के कारणों का उल्लेख अपने वार्षिक लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में नहीं कर पाया है और इसका उल्लेख जांच की अवधि के दौरान प्रबंध समिति द्वारा समय-समय पर जारी किये गये प्रेस व्हितव्यों में भी स्पष्ट नहीं हो पाया है।

20 भारत में चीन का राजदूतावास

ऊपर उल्लिखित किये गये अन्य मुद्दों के अतिरिक्त चीन की सरकार ने इस जांच के संबंध में प्रकार्यात्मक और तथ्यात्मक पहलुओं के संबंध में त्रुटियों पर गंभीर चिंता व्यक्त की है। उदाहरण के लिए सभी हितबद्ध पक्षकारों को सूचना दिये बिना जांच के दायरे में परिवर्तन करने और भारतीय प्राधिकारियों से न्याय सुनिश्चित करने तथा यह जांच समाप्त करने का सशक्त अनुरोध किया है।

21 मैसर्स रामानी स्टील हाऊस, पैसिफिक मेटल ट्रेडिंग कंपनी, अखिल भारतीय स्टेनलेस स्टील आयातक एसोसिएशन तथा धातु एवं स्टेनलेस स्टील व्यापारी एसोसिएशन

उत्पाद का दायरा

क. शुद्धि पत्र में संशोधित किये गये उत्पाद को और अधिक संशोधित किये जाने की जरूरत है। परिभाषा में विशेष रूप से अन्य ग्रेडों का अपवर्जन नहीं किया गया है। विस्तृत शर्तों के कारण विचाराधीन उत्पाद को टोड-मोड कर प्रस्तुत किया गया है। परिभाषा में “सभी आस्टेन्टिक ग्रेड को शामिल करते हुए” परिभाषित किया गया है। इलेक्ट्रोवेक स्टील द्वारा उत्पादित आस्टेन्टिक ग्रेड में 304 श्रृंखला के अलावा अन्य ग्रेडों को भी शामिल किया गया है।

ख. प्लेटों की उत्पादन प्रक्रिया क्वाइलों की उत्पादन प्रक्रिया से अलग है। कम रोलिंग तथा अधिक मोटाई के कारण प्लेटों के भौतिक गुणधर्म क्वाइलों के गुणधर्म से अलग हो

जाते हैं। पाटनरोधी महानिदेशालय ने पाटनरोधी जांच में यह धारित किया है कि प्लेटें, क्वाइलों से बिल्कुल अलग होती हैं। प्लेटों के आयात की मात्रा 2 प्रतिशत से भी कम है। पाटन रोधी जांच में भी क्वाइलों को प्लेटों से अलग माना गया है।

ग. जिस वस्तु का ना तो उत्पादन किया जाता है और न ही आयात किया जाता है उसे अपवर्जित कर दिया जाना चाहिए। औक्सो अल्कोहल पाटनरोधी मामले में सेस्टेट ने धारित किया कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्माण न किये गये उत्पादों पर आयातों के कारण घरेलू उद्योग की क्षति कारित नहीं की जा सकती है। जिन उत्पादों का अपवर्जन किया जा सकता है, वे हैं (क) टीयर ड्राप/ चेकड़/ एंटी स्लिप (ख) 3 मिमी से कम और 10 मिमी से अधिक की मोटाई के क्वाइल (ग) 6 मिमी से कम तथा 63 मिमी से अधिक की मोटाई की प्लेटें (घ) अर्द्ध-परिष्कृत हॉट रोल्ड ब्लैक क्वाइल।

कारणात्मक संबंध और क्षति

घ. सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम की धारा 8ग के अंतर्गत यथानिगमित टीपीएसएसएम के अनुच्छेद 16(4) में बाजार विकृति को परिभाषित किया गया है। इसमें अपेक्षा की जाती है कि आयातित वस्तु द्वारा बाजार विकृति कारित की जानी चाहिए और इन आयातों से घरेलू उद्योग को भारी क्षति पहुंच रही है। इस क्षति की शुरूआत बहुत अधिक हो।

ड. प्रारंभिक परिणामों से यह सिद्ध नहीं होता है कि क्षति का मुख्य कारण आयात ही रहे हैं जैसा कि सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम की धारा 8ग के अंतर्गत अधिदेशित है। बजाय इसके इस निष्कर्ष में धारा 8 के अंतर्गत न्यूनतर अवसीमा प्रक्रिया को अपनाया गया है। यह इस तथ्य के कारण है कि आयात क्षति के प्रमुख कारण नहीं थे।

बाजार विकृति और गंभीर क्षति

च. घरेलू उद्योग को निम्नलिखित कारणों से भारी क्षति हुई :

क. क्रोम कोर की अनुपलब्धता

ख. उड़ीसा स्थित संयंत्र पूरी तरह से प्रचालन में नहीं था।

छ. इस तथ्य पर विचार करते हुए कि संयंत्र क्षमता के उपयोग का समग्र स्तर (वार्षिक रिपोर्ट के आधार पर) केवल 12 प्रतिशत था, इसलिए अधिकतम विचाराधीन उत्पाद जिसका उत्पादन किया जा सकता है वह है 14530 मी.टन (रेंप अप और स्थिरीकरण के कारण क्षमता उपयोग का स्तर 12 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकता है)। विचाराधीन उत्पाद का उड़ीसा में उत्पादन केवल 24000 मी.टन है जो स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि क्षमता उपयोग 160 प्रतिशत था।

ज. यह याचिकाकर्ता, जब क्षमता के उपयोग से प्रदर्शित होता हो कि उच्च उत्पादन क्षमता का प्रयोग किया गया, न्यून उत्पादन और न्यून क्षमता उपयोग, उत्पादन की उच्च लागत आदि की स्थिति में व्यापार उपचारी कार्य करने का आदी है।

झ. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किये गये आंकड़ों में स्पष्ट विसंगतियां हैं। संयुक्त प्रवृत्ति 304 तथा गैर 304 उत्पादों के लिए व्यक्तिगत प्रवृत्ति से अधिक नहीं हो सकती है।

ग्राही एवं व्यापारी बाजार के संबंध में अधूरी जानकारी

ज. घरेलू उत्पादक ने बाजार को दो पृथक खंडों में विखंडित कर रखा है जैसे (i) व्यापारी बाजार और (ii) ग्राही खपत बाजार। व्यापारी बाजार के लिए उत्पादन, फैक्ट्री से प्रेषण और पीवीसी के डिपो से बिक्री को उपरिवत दर्शाया गया है। यह स्पष्ट है कि जब फैक्ट्री से प्रेषण तथा डिपो से विचाराधीन उत्पाद की बिक्री विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन से अधिक है और उसके बाद भी मालसूची में वृद्धि हो रही है तो अंतिम कॉलम में दर्शायी गयी माल सूची केवल ग्राही खपत के लिए कच्चे माल के रूप में अनुरक्षित की जा रही है।

ट. तथापि, माल सूची की समेकित मात्रा का उत्पादन और ग्राही खपत के प्रतिशत के रूप में विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि जांच की अवधि के दौरान माल सूची में उत्पादन तथा ग्राही खपत के रूप में स्थिरता आ गयी यद्यपि घरेलू उत्पादक आधार वर्ष के दौरान मालसूची में भारी उतार चढ़ाव अनुभव कर रहा था।

ठ. प्राधिकारी, ग्राही बाजार और व्यापारी बाजार के आधार पर बाजार खंडों का दो खंडों में विखंडन नहीं कर सकते हैं। किसी एक खंड पर आधारित निष्कर्ष असंगत होता है और गलत होता है जैसा कि डब्ल्यूटीओ अपीलीय निकाय द्वारा धारित किया गया है।

अन्य कारकों के कारण हानि

ड. वर्ष 2011-12 में घरेलू उत्पादक को कोई क्षति नहीं हुई। क्षमता उपयोग 100 प्रतिशत था और इस कारण इससे अधिक उत्पादन बढ़ाने का कोई दायरा नहीं था।

ढ. उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ ही संबद्ध वस्तु की ग्राही खपत में समनुरूप वृद्धि हुई।

ण. जब कभी कोई संयंत्र अपना उत्पादन प्रारंभ करता है तो यह शुरुआत में रवीकार न की जाने योग्य और उप मानक गुणवत्ता वाली वस्तुओं का उत्पादन करता है। तथापि, अलग से कोई उत्पादन नहीं दर्शाया गया है, इसका आशय यह है कि इसे मालसूची में लिया गया है।

घरेलू उत्पाद की गैर क्षतिकारी कीमत अथवा उचित बिक्री कीमत

त. महानिदेशक (रक्षोपाय) को संबद्ध वस्तु के लिए कंपनी विधि के अनुरूप तुलन पत्र में दर्शाये गये के अनुसार केवल 12 प्रतिशत मूल्यहास अथवा आनुपातिक मूल्यहास की अनुमति देनी चाहिए। महानिदेशक (रक्षोपाय) को केवल 12 प्रतिशत स्थायी और निर्धारित लागत की अनुमति देनी चाहिए क्योंकि घरेलू उत्पादक इतनी ही समग्र क्षमता प्राप्त करने के योग्य होता है।

क्षति के अन्य कारक

थ. उड़ीसा संयंत्र की संकल्पना एक विशेष आर्थिक जोन के रूप में की गई थी और घरेलू बाजार में नये संयंत्र का प्रवेश वैकल्पिक न होकर मजबूरी थी।

प्रत्युक्ति तथा अन्य प्रस्तुतिकरणों के संबंध में टिप्पणी

क. आवेदक घरेलू उत्पादक ने ग्राही बाजारों के संबंध में संपूर्ण जानकारी प्रदान नहीं की है जो डब्ल्यूटीओ पैनल तथा अपीलीय प्राधिकारी के निष्कर्ष-जापान के हॉट रोल्ड स्टील उत्पादों के विरुद्ध (डब्ल्यूटी/ डीएस 184/ एबी/ आर) यूएस-पाटनरोधी उपाय तथा पाकिस्तान से कंकतित सूती धागे के संबंध में यूएस-परिवर्ती रक्षोपाय शुल्क (डब्ल्यूटी/ डीएस 192/ एबी/ आर) के विरुद्ध है।

ख. घरेलू उद्योग में केवल आवेदनकर्ता उत्पादक ही शामिल नहीं है। अतः प्राधिकारी को संपूर्ण उत्पादन के क्षति आंकड़ों का संग्रहण करना चाहिए।

ग. यह दावा कि मालसूची में वृद्धि हुई है, सही नहीं है।

घ. उन तथ्यों एवं कारणों की जानकारी, जिनकी बजह से चौड़ाई पर प्रतिबंध लगाया गया था, हितबद्ध पक्षकारों को नहीं दी गई। चौड़ाई के संबंध में शुद्धिपत्र आयात मात्रा से जुड़े क्षति पैरामीटरों में परिवर्तन पर विचार किये बिना जारी कर दिया गया।

प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत का उल्लंघन

ड. उत्पाद का दायरा 300 श्रृंखला से परिवर्तित करके 304 श्रृंखला करने के संबंध में यह उल्लेख किया जाता है कि सुनवाई की अपेक्षाएं तब तक पूरी नहीं होती है जब तक सार्वजनिक सुनवाई से पहले सुनवाई से संगत आवश्यक तथ्य/ साक्ष्य/ दस्तावेज उपलब्ध नहीं करा दिये जाते हैं।

22. मैसर्स क्वालिटी फ्वाइल्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड ने तर्क दिया है कि उनकी कंपनी 304 ग्रेड के स्टेनलेस स्टील के हॉट रोल्ड क्वाइल्स का अधिप्रापण चीन, निंगवो क्वासिंग्स कंपनी से करती है। इसे पता चला कि इस माल का रासायनिक संघटक उचित नहीं था। रासायनिक संघटक और सरफेश फिनिश में अंतर के संबंध में शिकायत करने पर सुधारात्मक उपाय नहीं किये गये। इसके कारण हमें बाजार में भारी नुकसान हुआ। हमने अपनी सदाशयता गंवा दी और अपनी कीमत 100 अमरीकी डालर प्रति टन तक तथा स्थानीय बाजार में अपनी बिक्री कम करनी पड़ी।

23. तमिलनाडु स्टेनलेस स्टील व्यापारी एवं विनिर्माता एसोसिएशन ने निम्नलिखित तर्क दिया है:

प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन

क. वर्तमान जांच प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन करती है। हितबद्ध पक्षकारों को विचाराधीन उत्पाद के दायरे में परिवर्तन के बारे में तब पता चला जब अंतरिम निष्कर्ष जारी कर दिये गये।

ख. महानिदेशक (रक्षोपाय) ने विचाराधीन उत्पाद में परिवर्तन केवल घरेलू उद्योग के साथ परामर्श करके एकपक्षीय रूप से करके कर दिया। जांच की प्रक्रिया न केवल उचित होनी चाहिए बल्कि इसे उचित प्रतीत भी होना चाहिए।

ग. याचिकाकर्ता द्वारा प्रदान कराई गई समस्त जानकारी की आपूर्ति न करके और संशोधित सूचना पर अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत करने का अवसर न देकर निदेशालय ने भारी भूल की है।

केवल आपातकालीन स्थिति के मामले में-रक्षोपाय उपचार:

घ. रक्षोपाय उपचार वे असाधारण उपाय हैं जिन्हें केवल आपातकालीन परिस्थितियों में ही अपनाया जाना चाहिए। घरेलू उद्योग इस तरह की आपातकालीन स्थिति सिद्ध करने में अक्षम रहा।

ड. याचिकाकर्ता ने अपने दोनों संयंत्रों के बारे में अलग-अलग जानकारी प्रदान नहीं कराई है। पृथक जानकारी अनिवार्य है क्योंकि यह एक स्वीकृत स्थिति है कि उड़ीसा स्थित संयंत्र अगस्त, 2011 से पहले शुरू नहीं हुआ था। अगस्त, 2011 तक जेएसएल उड़ीसा संयंत्र विशेष आर्थिक जोन इकाई था। विशेष आर्थिक जोन इकाई से बिक्री को भारत में आयात के रूप में

माना जाना चाहिए क्योंकि वह भारत में प्रवेश लागू शुल्कों का भुगतान किये बिना नहीं कर सकता। अतः, इसके आंकड़ों को क्षति सूचना में शामिल नहीं करना चाहिए।

च. उड़ीसा स्थित संयंत्र को अपने प्रारंभ से ही कई समस्याओं का सामना करना पड़ा और इस कारण प्राधिकारियों को घरेलू प्रयोक्ता उद्योग द्वारा किये गये आयातों पर रक्षोपाय शुल्क अधिरोपित करने का जोखिम नहीं लेना चाहिए क्योंकि यह घरेलू प्रयोक्ता उद्योग की बाजार प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रत्यक्ष रूप से नुकसान पहुंचा सकता है।

उत्पाद का दायरा

छ. प्राधिकारी को यह विश्लेषण करना चाहिए क्या घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पाद का वाणिज्यिक उत्पादन 1520 मिमी/ 1530 मिमी की चौड़ाई के उत्पाद से शुरू किया था और उस मामले में इस उत्पाद के दायरे को 1520 मिमी /1530 मिमी की चौड़ाई तक विनिर्धारित किया जाना अपेक्षित है।

ज. आवेदन पत्र याचिकाकर्ता द्वारा वाणिज्यिक रूप से उत्पादित और उपलब्ध उत्पाद शृंखला के लिए होना चाहिए। विचाराधीन उत्पाद के दायरे को क्याइल रूप में (3 मिमी से 6 मिमी तक की मोटाई 1000 मिमी से अधिकतम 1250 मिमी तक की चौड़ाई) और प्लेट (क्वार्ट) (5 मिमी से 6 मिमी तक की मोटाई 1000 मिमी से अधिकतम 1250 मिमी तक की चौड़ाई) तक सीमित होना चाहिए।

झ. 300 शृंखला के प्रत्येक ग्रेड में निकिल, क्रोमियम, मोलिब्डेनम, टाइटेनियम का संघटक स्तर अलग-अलग होता है। इसलिए यह कहना कि विचाराधीन उत्पाद की परिधि में 6 प्रतिशत अथवा उससे अधिक निकिल, क्रोमियम, मोलिब्डेनम, टाइटेनियम का संघटक होता है, इसलिए इसमें उन उत्पादों को भी शामिल किया जा सकता है जो 304 ग्रेड के अंतर्गत नहीं आते हैं। अतः निदेशालय को विचाराधीन उत्पाद का विवरण 'यूएनएस, आईएस, चाईनीज, डीआईएन, जेआईएस, बीआईएस, ईएन आदि जैसे अन्य मानकों में समक्ष विनिर्देशनों वाले उत्पादों को शामिल करते हुए एसटीएम ग्रेड 304 के सभी भेदों युक्त स्टेनलेस स्टील हॉट रोल्ड फ्लेट उत्पादों' के रूप में संशोधित/ परिवर्तित/ आशोधित करना चाहिए।

गैर- प्रतिस्थापनीयता

ज. उपभोक्ता की जरूरतों और विनिर्देशनों को पूरा करने के लिए उपयोगकर्ता उद्योग को केवल अपेक्षित चौड़ाई और मोटाई के कच्चे माल का प्रयोग करना जरूरी होता है। उदाहरण के लिए, स्टेनलेस स्टील वेल्डेड पाइप विनिर्माताओं ने प्रस्तुतिकरण किया कि देशांतरिक

वेल्डेड पाइप का उत्पादन करने के लिए क्वाइलों और प्लेटों की अपेक्षित न्यूनतम चौड़ाई अनिवार्य होती है।

ट. अधिक चौड़ाई वाली क्वाइलों को काट कर छोटे आकार की क्वाइलों में परिवर्तित करना व्यवहार्य नहीं होता है क्योंकि (क) उच्च चौड़ाई वाले उत्पादों की लागत सामान्य चौड़ाई वाले उत्पादों की लागत की तुलना में अधिक होती है (ख) भारी मात्रा में अपशिष्ट होगा जिससे लागत और अधिक बढ़ जाएगी।

संवर्धित आयातों के कारण क्षति नहीं

ठ. पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण तथा बढ़ी हुई मांग के कारण प्रयोगकर्ता को चीन से आयातों का आश्रय लेना पड़ा क्योंकि घरेलू उद्योग अपेक्षित साइज और मोटाई के उत्पाद की आपूर्ति नहीं कर पा रहा था।

ड. भारतीय बाजार में मांग बढ़ने के कारण आयातों में वृद्धि हुई।

ढ. भारत में स्टेनलेस स्टील का उपयोग मुख्यतः बरतन बनाने के लिए किया जाता था और घरेलू उत्पादक उच्च क्वालिटी की स्टेनलेस स्टील उत्पादों की मांग पूरी नहीं कर पा रहे थे।

संवर्धित क्षमता

ण. याचिकाकर्ता की क्षमता उपयोग में कमी के परिणामस्वरूप याचिकाकर्ता की क्षमता में तीव्र विस्तार हुआ। चूंकि भारत में संगत बाजार को बाजार में होने वाले इन परिवर्तनों को अभी भी आत्मसात करना चाहित था इसलिए याचिकाकर्ता के उत्पादन में समान गति से वृद्धि नहीं हुई।

घरेलू उद्योग का निष्पादन

त. उड़ीसा संयंत्र की स्थिति जाने बिना घरेलू उद्योग के निष्पादन का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है।

थ. उड़ीसा संयंत्र को केवल अगस्त, 2011 में डि-बांड किया गया था (अर्थात वित्त वर्ष 2011-12 में 5 महीनों की अवधि व्यपगत हो जाने के पश्चात ऐसा किया गया था)।

द. अगस्त, 2011 से पहले की अवधि के लिए उत्पादन, मालसूची और अन्य आर्थिक आंकड़ों को घरेलू उद्योग के भाग के रूप में लोड नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह संयंत्र विशेष आर्थिक जोन का भाग होने के कारण विदेशी संयंत्र के रूप में माना गया था।

ध. यह कि दोनों ही संयंत्रों के निष्पादन का अलग-अलग विश्लेषण किया जाना चाहिए।

सार्वजनिक हित

न. यदि विचाराधीन उत्पाद, जो उपयोगकर्ता उद्योग के लिए प्रमुख कच्चा माल है, पर रक्षोपाय शुल्क अधिरोपित किया जाता है तो उपयोगकर्ता उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद अप्रतिस्पर्धी हो जाएगा और इससे उसे बाजार क्षति तथा चीन के उत्पादकों को लाभ होगा।

24. मैसर्स जेएसएस स्टीलिटालिया ने प्रस्तुत किया कि 304 ग्रेड के स्टेनलेस स्टील क्वाइलों, जिनका आयात चीन जब.गण से किया जा रहा था, के आधारभूत भौतिक एवं रसायनिक गुणधर्म एएसटीएम और ईएन जैसे अंतर्राष्ट्रीय मानकों की संपुष्टि नहीं करते हैं। चीन की मिलों द्वारा आपूरित की जा रही सामग्री में विभिन्न एलाइन्ग तत्वों की प्रतिशतता के रूप में संगतता का अभाव था। उदाहरण के लिए न्यूनतम गंरटीड निकिल संघटक 8 प्रतिशत था और वास्तविक निकिल संघटक न्यूनतम स्तर से भी कम था। इस सामग्री का सरफेस फिनिश अत्यधिक निम्नकोटि का था और यह स्वीकृत बैंचमार्क से बहुत न्यून स्तर का था। आपूर्तिकर्ता ने इस मुद्दे का समाधान करने के लिए कुछ भी प्रयास नहीं किये।

ड. महानिदेशक (रक्षोपाय) द्वारा जांच एवं निष्कर्ष:

25. इन हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गये प्रस्तुतिकरणों पर मौजूदा क्रम में विचार किया गया। विभिन्न पक्षकारों द्वारा किये गये प्रस्तुतिकरणों और उनसे उत्पन्न मुद्दों का निम्नलिखित निष्कर्ष में उचित स्थानों पर निस्तारण किया गया है।

विचाराधीन उत्पाद

26. शुरू की गई इस जांच के अंतर्गत विचाराधीन उत्पाद के दायरे में 300 श्रृंखला के हॉट रोल्ड स्टेनलेस स्टील उत्पाद है जिसमें कई ग्रेडों को शामिल किया गया है। इसमें, अन्य बातों के साथ-साथ, 301, 304, 321, 309, 310, 316, 317, 321, 347 आदि शामिल हैं। जांच शुरूआत नॉटिस का प्रत्युत्तर देने वाले कई हितबद्ध पक्षकारों ने यह उल्लेख किया है कि विचाराधीन उत्पाद का दायरा बहुत विस्तृत है तथा इसे प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिए क्योंकि अधिकांश आयात 304 ग्रेड के ही होते हैं। हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी तर्क दिया है कि विभिन्न ग्रेडों के विभिन्न अनुप्रयोग होते हैं और 304 ग्रेड के अतिरिक्त अन्य ग्रेड के उत्पाद 304 ग्रेड के उत्पादों की जरूरत को पूरा नहीं कर सकते हैं। हितबद्ध पक्षकारों के तर्क

का प्रत्युत्तर देते हुए घरेलू उद्योग ने भी यह तर्क दिया है कि आयातों में अधिकता मुख्यतः 304 ग्रेड के आयातों की ही है और घरेलू उद्योग को 304 ग्रेडों से ही बाजार विकृति का सामना करना पड़ा है। विचाराधीन उत्पाद के दायरे को केवल 304 ग्रेड तक सीमित कर देने का विरोध करते हुए घरेलू उद्योग ने उल्लेख किया है कि यदि रक्षोपाय शुल्क “304 ग्रेड के हॉट रोल्ड स्टेनलेस स्टील उत्पादों” तक ही सीमित कर दिया जाता है तो आयातों में वृद्धि गैर- 304 ग्रेड के उत्पादों की ओर बढ़ जाएगी और घरेलू उद्योग को इन उत्पादों से होने वाली क्षति का सामना करना पड़ेगा। तथापि, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों का खंडन नहीं किया है कि 304 ग्रेड के उत्पादों के उपभोक्ता गैर-304 ग्रेड के उत्पादों का उपभोग नहीं कर सकते हैं। उपभोक्ता को एक विशिष्ट ग्रेड के हॉट रोल्ड स्टेनलेस स्टील की आवश्यकता होती है और 304 ग्रेड के उत्पादों का उपभोग करने वाले उपभोक्ता गैर-304 ग्रेड के उत्पादों का उपभोग नहीं कर सकते हैं। प्रारंभिक जांच में घरेलू उद्योग ने 1605 मिमी के उत्पादन और बिक्री को दर्शाने वाले साक्ष्य प्रदर्शित किये हैं। चूंकि, उत्पाद के दायरे को हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गये इस प्रस्तुतिकरण के आधार पर प्रारंभिक जांच परिणाम में सीमित कर दिया गया था कि घरेलू उद्योग 1605 मिमी तक के उत्पादों का उत्पादन और बिक्री करता है तथा, इसके अतिरिक्त, रिकार्ड में उपलब्ध साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग ने 1625 मिमी तक की वस्तु का उत्पादन और उसकी बिक्री की है इसलिए विचाराधीन उत्पाद के दायरे को 1625 मिमी तक सीमित करना उपयुक्त माना जाता है। तदनुसार, विचाराधीन उत्पाद के दायरे को केवल 304 ग्रेड के उत्पादों तक सीमित कर दिया गया है।

27. हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी तर्क दिया है कि विचाराधीन उत्पाद को घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित चौड़ाई तक सीमित कर दिया जाना चाहिए। अतः, इस तथ्य के मद्देनजर कि प्रत्येक उपभोक्ता को एक विशिष्ट ग्रेड के हॉट रोल्ड स्टेनलेस स्टील की आवश्यकता होती है और 304 ग्रेड के उत्पादों का उपभोग करने वाले उपभोक्ता गैर-304 ग्रेड के उत्पादों का उपभोग नहीं कर सकते हैं इसलिए 304 ग्रेड और गैर- 304 ग्रेड के उत्पादों के आयातों में बढ़ोतरी में स्पष्ट अंतर है और घरेलू उद्योग का निष्पादन भी 304 ग्रेड तथा गैर-304 ग्रेड के उत्पादों के संबंध में स्पष्टत: अलग-अलग है, घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित अधिकतक चौड़ाई के साक्ष्य पर विधार करते हुए यह उपयुक्त माना गया कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे को 1605 मिमी तक की चौड़ाई वाले 304 ग्रेड के उत्पादों तक सीमित कर दिया जाए। तथापि, प्रारंभिक जांच के पूर्व की अवधि में घरेलू उद्योग ने 1605 मिमी के उत्पादन और बिक्री को दर्शाने वाले साक्ष्य प्रदर्शित किये हैं। चूंकि, उत्पाद के दायरे को हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गये इस प्रस्तुतिकरण के आधार पर प्रारंभिक जांच परिणाम में सीमित कर दिया गया था कि घरेलू उद्योग 1605 मिमी तक के उत्पादों का उत्पादन और बिक्री करता है तथा, इसके

अतिरिक्त, रिकार्ड में उपलब्ध साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग ने 1625 मिमी. तक की वस्तु का उत्पादन और उसकी बिक्री की है इसलिए विचाराधीन उत्पाद के दायरे को 1625 मिमी तक सीमित करना उपयुक्त माना जाता है। तदनुसार, विचाराधीन उत्पाद के दायरे को 1625 मिमी तक की चौड़ाई वाले केवल 304 ग्रेड के उत्पादों तक सीमित कर दिया गया है।

28. घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया है कि 300 श्रृंखला का नामकरण एएसटीएम (अमेरिकन सोसाइटी फॉर टेस्टिंग एंड मटेरियल्स) के अनुसार औस्ट्रिनिटिक (क्रोमियम -निकिल) ग्रेडों के समूह पर लागू होता है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने यह भी प्रस्तुत किया है कि 304 जैसे ग्रेड एएसटीएम ग्रेड हैं। घरेलू उद्योग ने 304 तथा समकक्ष ग्रेडों में अन्य मानकों के (एएसटीएम के अलावा) पाठभेदों को दर्शाते हुए एक तालिका प्रदान की है।

यूएसए	यूएसए	यूरोप	भारत	चीन	जर्मनी	जापान
एएसटीएम	यूएनएस	इएन	बीआईएस	चाइनीज	डीआईएन	जेआईएस
304	एस30400	1.4301	एक्स04सीआर 19एनआई9	0सीआर18 एनआई 9	एक्स5 सीआरएनआई 18-10	एसयूएस 304
304एच	एस 30409 / एस 30415	1.4948			एक्स 6सीआरएनआई 18-10	
304एल	एस 30403	1.4306 / 4307			एक्स 2 सीआरएनआई 18-9 / एक्स 2 सीआरएनआई 19 -11	एसयूएस 304एल
304एलएन	एस 30453	1.4311			एक्स 2 सीआरएनआई एन18-10	एसयूएस 304एलएन
304एन	एस 30451					
एक्सएम	एस					
21	30452					

							एसयूएस 304एन1
							एसयूएस 304एन2
							एसयूएस 304जे1
							एसयूएस 304जे2

29. उपर्युक्त के मद्देनजर यह उल्लेख करना उपर्युक्त होगा कि विचाराधीन उत्पाद का दायरा (304 ग्रेड के उसके सभी प्राकारान्तरों सहित) इसके सभी प्राकान्तरों सहित एएसटीएम 304 ग्रेड तथा अन्य मानदंडों में इसके समकक्ष विनिर्देशनों सहित बढ़ाया जाए।

30. कई हितबद्ध पक्षकारों ने 304 ग्रेड के अंतर्गत विशिष्ट उत्पाद प्रकारों का अपवर्जन करने की मांग की है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए दावों की जांच की गई और उनका निम्नलिखित ढंग से निस्तारण किया गया:-

क) प्लेटों का अपवर्जन: कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने विचाराधीन उत्पाद के दायरे से प्लेटों के अपवर्जन की इस आधार पर मांग की है कि विचाराधीन उत्पाद के आयात केवल क्याइल फार्म में किये जाते हैं। विस्तृत आयात आकड़ों की सौदा दर सौदा आधार पर जांच की गई और यह पाया गया कि चीन से प्लेटों का आयात होता है। यह पाया गया कि यदि विचाराधीन उत्पाद की चौड़ाई 600 मिमी से कम हो तो इसे 7220 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है और यह सामान्यतः (लगभग हमेशा) क्याइल रूप में होता है। इसके अतिरिक्त यदि विचाराधीन उत्पाद 600 मिमी अथवा उससे अधिक का है तो इसे 7219 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। 7219 के अंतर्गत क्याइलों को 721911, 721912, 721913, 721914 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है; जब यह उत्पाद क्याइल रूप में नहीं होता है (अर्थात शीट/प्लेट रूप में होता है) तो इसे 721921, 721922, 721923, 721924 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। 7219 और 7220 के अंतर्गत आने वाले विचाराधीन उत्पादों में अंतर केवल इसकी चौड़ाई का होता है। इसी तरह, क्याइलें पतली मोटाई की होती है और उन्हें काफी दीर्घ लम्बाई तक रौल किया जा सकता है जबकि प्लेटों की लम्बाई सीमित होती है। प्लेट और क्याइलस विभेदकारी रूप से अलग-अलग मर्द नहीं होती हैं। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग ने क्याइलस और प्लेटों दोनों का उत्पादन और आपूर्ति की है। क्याइलस और

फ्लैट दोनों का ही आयात चीन से किया गया है। चूंकि दोनों प्रकार के उत्पादों का उत्पादन और आयात होता है इसलिए उन्हें उत्पाद के दायरे के अंतर्गत रखना अपेक्षित होगा। ख) कई हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क भी दिया है कि उत्पाद के दायरे को केवल 600 मिमी से अधिक की चौड़ाई वाले उत्पादों तक प्रतिबंधित कर देना चाहिए। यह नोट किया जाता है कि इन उत्पाद प्रकारों को भी इस कारण से अपवर्जित करना उपर्युक्त नहीं होगा क्योंकि 600 मिमी से कम के एचआर उत्पादों का आयात हुआ है और घरेलू उद्योग ने भी 600 मिमी से कम के एचआर उत्पादों की आपूर्ति की है।

ग) कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने 904 एल/ 1.4539/ यूएनएस 08904, एसएमओ 254/ यूएनएस 3125, 32750, 32760, 321एच/ 1.4878, 347एच/ 1.4961 का अपवर्जन करने का अनुरोध किया है। इन उत्पाद प्रकारों का अपवर्जन करने के दावे का विरोध करते हुए घरेलू उद्योग ने स्पष्ट किया है कि यह सभी उत्पाद गैर-304 ग्रेड के लिए उत्पाद प्रकारों के अनुरोध आते हैं। यह नोट किया जाता है कि चूंकि विचाराधीन उत्पाद के दायरे को केवल 304 ग्रेड को शामिल करने के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया है इसलिए यह सभी उत्पाद प्रकार विचाराधीन उत्पाद के संशोधित दायरे तथा प्रस्तावित उपायों के दायरे से परे के मामले हैं।

31. उपर्युक्त तथ्यों और मुद्दों पर विचार करते हुए वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ अथवा जांच विचाराधीन उत्पाद का दायरा निम्नलिखित है-

“304 ग्रेड की स्टेनलेस स्टील के हाटोल्ड फ्लैट गोल्ड उत्पादों (अधिकतम 1625 मिमी तक की चौड़ाई) तथा न्यूलतम 6 प्रतिशत के निकिल (एन आई) अन्तर्वस्तु, जिसमें मोलीब्डेनम, टाइटैनियम आदि जैसे अन्य अलायिंग तत्वों की अनिवार्य अंतर्विष्ट उपस्थिति सहित अथवा उपस्थिति के बिना, युक्त सभी आस्टीनिटिक ग्रेड के अंतर्गत आने वाले उत्पाद आदि” इन उत्पादों को सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के उपशीर्ष संख्या 72191111, 72191112, 72191190, 72191200, 72191300, 72191400, 72192111, 72192112, 72192121, 72192122, 72192131, 72192132, 72192141, 72192142, 72192190, 72192211, 72192212, 72192219, 72192291, 72192292, 72192299, 72192310, 72192320, 72192390, 72192411, 72192412, 72192413, 72192419, 72192421, 72192422, 72192423, 72192429, 72192490, 72201110, 72201121, 72201122, 72201129, 72201190, 72201210, 72201221, 72201222, 72201229, 72201290 के अंतर्गत आयातित अथवा वर्गीकृत उत्पाद आते हैं। यह स्पष्ट किया जाता है कि एचएस कोड केवल संकेतक है और सभी परिस्थितियों में उत्पाद विवरण लागू होगा।

32. सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 8ग (7) (क) के अंतर्गत घरेलू उद्योग को निम्नवत परिभ्रषित किया गया है:

(क) "घरेलू उद्योग" का आशय:-

भारत में समान वस्तु अथवा प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तु के समग्र रूप से उन उत्पादकों से है; अथवा

जिनका समान वस्तु या भारत में प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धी वस्तु का सामूहिक उत्पादन भारत में उक्त वस्तु के कुल उत्पादन का बहुत बड़ा हिस्सा बनता हो।

33. यह आवेदनपत्र मैसर्स जेएसएल लिमिटेड, 12, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली-110066 द्वारा दायर किया गया है। 304 ग्रेड के स्टेनलेस स्टील के हॉट रोल्ड फ्लैट उत्पादों के भारत में दो अन्य उत्पादक भी हैं नामशः, भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड, इस्पात भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 और शाह अलायज, शाह अलायज कॉर्पोरेट हाउस, सोला कलोल रोड, संतेज तालुका, कलोल, जिला-गांधी नगर-382721 गुजरात हैं। यह दोनों उत्पादक इस मामले में याचिकाकर्ता नहीं हैं। आवेदनकर्ता भारतीय उत्पादन का 90 प्रतिशत से अधिक उत्पादन करता है और इसलिए वह भारत में विचाराधीन उत्पाद का प्रमुख उत्पादक है। आवेदनकर्ता का उत्पाद भारत में विचाराधीन उत्पाद के कुल उत्पादन का एक प्रमुख हिस्सा बनता है।

क्र.सं.	वर्ष	याचिकाकर्ता	अन्य भारतीय उत्पादक	सभी भारतीय उत्पादक
क	मात्रा (मी.टन)			
1	2009-10	100,265	8,777	109,042
2	2010-11	98,448	5,645	104,093
3	2011-12	129,900	5,450	135,351
ख	हिस्सा (%)			
1	2009-10	91.95	8.05	100.00
2	2010-11	94.58	5.42	100.00
3	2011-12	95.97	4.03	100.00

रिकार्ड में उपलब्ध जानकारी पर विचार करने के पश्चात यह निर्धारित किया जाता है कि याचिका दायर करने वाले घरेलू उत्पादक का भारत में उक्त वस्तु के कुल उत्पादन में एक बड़ा हिस्सा बनता है। तदनुसार याचिकाकर्ता सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम 1975 की धारा 8ग (7) (क) के अंतर्गत 'घरेलू उद्योग' बनता है।

जांच की अवधि (पीओआई)

34. सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क प्रशुल्क (परिवर्ती उत्पाद विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क) नियमावली, 2002 में विशेष रूप से जांच की अवधि को परिभ्रष्ट नहीं रक्षोपाय शुल्क) नियमावली, 2002 में विशेष रूप से जांच की अवधि को परिभ्रष्ट नहीं किया गया है। तथापि, जांच की अवधि के मुद्दे पर कोरिया के खिलाफ यूएस-लाइन पाइप केस में पैनल निष्कर्षों में विस्तार से विचार किया गया है। इस मामले में पैनल ने यह निर्धारित किया है कि आयातकर्ता सदस्य के जांच प्राधिकारी के विवेक के अनुसार "जांच की अवधि की दीर्घता" और इसकी "समाप्ति" निर्धारित होगी।

"हम नोट करते हैं कि इस करार में ऐसी किसी व्यवस्था का उल्लेख नहीं है कि रक्षोपाय जांच में जांच की अवधि कितनी लम्बी होगी न ही कहीं यह उल्लेख है कि विश्लेषण के उद्देश्यों के लिए इस अवधि को कब समाप्त कर दिया जाना चाहिए। अतः जांच की अवधि तथा इसे समाप्त करने के समय को जांचकर्ता प्राधिकारियों के विवेक पर छोड़ दिया गया है। हमारे समक्ष उपस्थित मामले में आईटीसी द्वारा अवधि का चयन पांच वर्षों और छह माह के लिए किया गया था जो कि अर्जेटिना-फुटवियर रक्षोपाय मामले में अर्जेटिना के जांचकर्ता प्राधिकारी द्वारा प्रयोग की गई जांच की अवधि के समकक्ष अवधि है। तथापि हम नोट करते हैं कि अपीलीय निकाय ने अपने निष्कर्ष में जांच की अवधि की लम्बाई संबंधी प्रश्न का उत्तर देने के लिए कोरिया द्वारा दिये गये गये जवाब पर भरोसा किया था जांच की अवधि पर समरूप अवधि के रूप में जो न देकर यह उल्लेख किया गया कि जांच की अवधि में हाल ही में किये गये आयातों पर प्रकाश डाला जाना चाहिए न कि केवल जांच की अवधि की प्रवृत्तियों पर। लाइन पाइप जांच के संबंध में आईटीसी ने न केवल अंतिम बिन्दु की तुलना की अर्थात् जांच की अवधि के दौरान समग्र प्रवृत्ति की जांच की (जैसाकि अर्जेटिना ने अर्जेटिना-फुटवियर रक्षोपाय मुद्दे की जांच में किया है)। इसने पिछले पांच वर्षों के दौरान वर्ष दर वर्ष आधार पर किये गये आयातों के आंकड़ों का विश्लेषण किया और इस तथ्य पर भी विचार किया कि क्या 1998 के अंतरिम की तुलना में 1999 के अंतरिम ने कोई वृद्धि हुई हुई है हमारा विचार है कि आईटीसी ने जांच की अवधि का चयन 5 वर्षों और 6 माह की अवधि के लिए करके अनुच्छेद 2.1 और अनुच्छेद- के अनुच्छेद के असंगत कोई कार्य नहीं किया है।

यह निष्कर्ष निम्नलिखित विचारों पर आधारित है: प्रथम इस करार में जांच की अवधि की दीर्घता के संबंध में कोई विशिष्ट नियम नहीं दिया गया है, द्वितीय आईटीसी द्वारा चयन की गई अवधि में अभी हाल ही के आयातों पर प्रकाश डालने की अनुमति दी गई है और, तृतीय आईटीसी द्वारा चयन की गई अवधि संवर्धित आयातों की मौजूदगी के संबंध में निष्कर्ष निकालने की अनुमति देने के लिए काफी लम्बी है।" (पैरा 7.196, 7.199 और 7.201¹)

35. इसी पैनल में यूएस-लाइन पाइप मामले में यह निर्धारित किया कि:

"किसी रक्षोपाय जांच में संवर्धित आयातों की प्रवृत्ति की जांच करने के लिए जांच की अवधि वही होनी चाहिए जो घरेलू उद्योग की गंभीर क्षति की जांच करने के लिए निर्धारित की गई है। यह पाटनरोधी अथवा प्रतिवलनकारी शुल्क की जांच में उत्पन्न स्थिति से विपरीत है जहां पाटन अथवा इम्दादीकरण की मौजूदगी का मूल्यांकन करने, वास्तविक क्षति के संबंध में निष्कर्ष निकालने के लिए जांच की अवधि की तुलना में कम अवधि की है। हमारा विचार है कि इस अंतर के पीछे के मुख्य कारणों में से एक कारण यह है कि, जैसा कि अर्जेटिना-फुटवियर रक्षोपाय संबंधी अपीलीय निकाय द्वारा पाया गया कि यह निर्धारण करना कि क्या "इन संवर्धित मात्रा" के आयातों की जरूरत केवल तकनीकी अथवा गणितीय निर्धारण को पूरा करने के लिए ही नहीं है।" अपीलीय प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि "संवर्धित आयातों का निर्धारण करने के मामले में सक्षम प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह मूल्यांकन और घरेलू उद्योग की गंभीर क्षति का निर्धारण करने के लिए संगत कारकों में प्रवृत्तियों का मूल्यांकन किया जाता है तो यह कार्य केवल जांच की अवधि तक ही किया जा सकता है अतः, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि यह विचार की अपीलीय निकाय द्वारा क्षति निर्धारण के संबंध में संगत अवधि संवर्धित आयातों का निर्धारण करने पर भी लागू होती है।" (पैरा 7.209²)

36. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि न तो परिवर्ती रक्षोपाय साधनों के लिए घरेलू विधियों ने और न ही रक्षोपाय संबंधी करार और गाट के अनुच्छेद- और न ही चीन जनवादी गणराज्य के अधिग्रहण प्रोटोकॉल में जांच की अवधि का चयन करने के संबंध में विशिष्ट दिशानिदेश प्रदान किये गये हैं। तथापि, वर्तमान जांच की प्रकृति और प्रयोजन/ उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए यह महत्वपूर्ण है कि जांच अवधि पर्याप्त रूप से इतनी लम्बी होनी चाहिए जिससे

¹ डब्ल्यूटी/ डीएस 202/ आर डीटी, 19.10.2001, यूएस-लाइन पाइप मामले में पैनल रिपोर्ट

² डब्ल्यूटी/ डीएस 202/ आर डीटी, 19.10.2001, यूएस-लाइन पाइप मामले में पैनल रिपोर्ट

संवर्धित आयातों और बाजार विकृति के संबंध में निष्कर्ष निकाले जा सके। इन तथ्यों पर विचार करते हुए वर्तमान जांच के प्रयोजन के लिए वित्त वर्ष 2009-10 से 2011-2012 तक की अवधि को अपनाया जाना उपयुक्त माना जाता है।

सूचना का स्रोत:

37. विचाराधीन उत्पाद के आयातों की रिपोर्ट कई सीमाशुल्क वर्गीकरणों अर्थात् 721911, 721912, 721913, 721914, 721921, 721922, 721923, 721924, 722011, 722012 में की जा रही थी। इसके अतिरिक्त, यह सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल इस विचाराधीन उत्पाद के लिए ही समर्पित नहीं है। अन्य प्रकार के स्टेनलेस स्टील के होट रोल्ड उत्पादों तथा विभिन्न ग्रेडों के आयातों की रिपोर्ट भी इन वर्गीकरणों में की जा रही थी। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए यह नोट किया जाता है कि देश में विचाराधीन उत्पाद के आयात की मात्रा का निर्धारण करने के लिए डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रकाशित सारांश सूचना उपयोगी नहीं है क्योंकि इस मामले में संव्यवहार-वार आंकड़े अपेक्षित होते हैं। घरेलू उद्योग ने आईबीआईएस, मुम्बई से प्राप्त संव्यवहार-वार आयात आंकड़ों को प्रस्तुत किया है और उन्हीं आंकड़ों पर विचार किया गया है।

38. घरेलू उद्योग द्वारा अपनी याचिका में प्रस्तुत विभिन्न आर्थिक पैरामीटरों संबंधी आंकड़ों का इस निदेशालय द्वारा संभावित सीमा तक सत्यापन किया गया और सत्यापन रिपोर्ट के अगोपनीय पाठ को सार्वजनिक फाइल में रखा गया। क्षति विश्लेषण पर विचार करने के लिए उत्पाद कर के रिकार्डों पर आधारित सत्यापित आंकड़ों को लिया गया है।

प्रस्तुत की गई सूचना की गोपनीयता

39. घरेलू उद्योग ने कुछ जानकारी गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की है और सूचना/ प्रस्तुत आंकड़ों की गोपनीयता की मांग की है। घरेलू उद्योग ने रक्षोपाय नियमावली 2002 के प्रावधानों तथा दिनांक 06.09.1997 के व्यापार सूचना संख्या एसजी/ टीएन/ 1/ 97 में निहित प्रावधानों के अनुरूप रक्षोपाय शुल्क के लिए आवेदन पत्र का अगोपनीय पान भी प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने आवेदन पत्र दायर करते समय गोपनीयता की मांग के लिए कारणों को भी प्रस्तुत किया है।

40. सीमाशुल्क प्रशुल्क (परिवर्ती उत्पाद विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क) नियमावली, 2002 के नियम 7 और रक्षोपाय संबंधी डब्ल्यूटीओ करार के अनुच्छेद 3.2 में कुछ जानकारी को

गोपनीय के रूप में माने जाने का प्रावधान किया गया है (इस संबंध में चीन जनवादी गणराज्य की अधिग्रहण संधि के अंतर्गत कोई प्रावधान नहीं है)। नियमावली में प्रावधान है कि हितबद्ध पक्षकार से ऐसी जानकारी का वास्तविक आधार पर प्रकटन किये जाने की अपेक्षा नहीं की जाती है जो कम्पनी की गोपनीय जानकारी हो और जिसका प्रकटन करने से उस पक्षकार के व्यापारिक हितों की पूर्वावधारणाओं को गंभीर क्षति पहुंचती हो।

संवर्धित आयात

41. सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा-8ग में रक्षोपाय शुल्क अधिरोपित करने के संबंध में केन्द्र सरकार की शक्तियों का उल्लेख किया गया है और उसमें निम्नलिखित प्रावधान है:

“1. धारा 8ग में उल्लिखित किसी बात के होते हुए भी, उपर्युक्त समझी गई जांच पूरी कर लेने के पश्चात, केन्द्रीय सरकार यदि इस बात से संतुष्ट है कि चीन जनवादी गणराज्य से किसी वस्तु का भारत में आयात इतनी अधिक मात्रा में और ऐसी परिस्थितियों के अंतर्गत किया गया है जिनसे घरेलू उद्योग को बाजार विकृति अथवा बाजार विकृति की चुनौती उत्पन्न हो रही है तो यह शासकीय राजपत्र में एक अधिसूचना अधिसूचित करके उस वस्तु पर रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण कर सकती है।”

42. सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अंतर्गत बने परिवर्ती रक्षोपाय शुल्क नियमावली के नियम 2 (1) में निम्नलिखित प्रावधान है:

“संवर्धित मात्रा” में आयातों में वृद्धि शामिल होगी चाहे वह घरेलू उत्पादन के समग्र रूप में हो अथवा संगत रूप में।

43. नियमों में रक्षोपाय शुल्क का अनुप्रयोग करने के लिए आयातों में वृद्धि को आधारभूत पूर्वापेक्षा के रूप में माना गया है अतः, रक्षोपाय शुल्क का अनुप्रयोग करने के प्रयोजनार्थ यह निर्धारण करने के लिए कि क्या विचाराधीन उत्पाद का आयात “इतनी अधिक संवर्धित मात्रा” में हुआ है, जितना नियमों में अपेक्षित है, आयातों में वृद्धि का विश्लेषण घरेलू उत्पादन के संगत तथा समग्र रूप में किया जाता है।

44. यह मूल्यांकन करने के लिए क्या अर्जेटिना के प्राधिकारियों द्वारा की गई जांच अनुच्छेद 2.1 तथा 4.2 (क) के अंतर्गत आयात में अपेक्षित वृद्धि प्रदर्शित हुई है, अर्जेटिना-फुटवेयर

मामले में पैनल ने निम्नलिखित उल्लेख किया है:

.... करार में आयातों में न केवल ऐसी वृद्धि (अर्थात् कोई वृद्धि) की अपेक्षा की जाती है धूलिक यह वृद्धि “ऐसी मात्रा” में होनी चाहिए जिससे गंभीर क्षति हो रही हो अथवा गंभीर क्षति की चुनौती उत्पन्न हो रही हो। इस करार में किसी ऐसे संख्यात्मक दिशानिर्देश का प्रावधान नहीं है कि यह इस तरह निर्णय लिया जाए कि, और हमारी दृष्टि से ऐसा किया भी नहीं किया जा सकता है परंतु इसका आशय यह नहीं है कि यह अपेक्षा निरर्थक है। इसके विपरीत, हमारा विश्वास है कि इसका आशय यह है कि आयातों में वृद्धि का निर्णय इसके पूरे संदर्भ में, खासकर इसके “दर और राशि” के संबंध में, जैसा अनुच्छेद 4.2 (क) में अपेक्षित है, किया जाना चाहिए। अतः संपूर्ण जांच अवधि के दौरान आयात स्तर में हुए परिवर्तनों पर विचार करते हुए, जैसाकि ऊपर चर्चा की गई है, यह निर्धारण करते समय यह अपरिहार्य है कि क्या अनुच्छेद 2.1 के मुताबिक आयातों में “इतनी अधिक मात्रा में” वृद्धि हुई है।

45. विचाराधीन उत्पाद के संवर्धित आयातों का विश्लेषण उपर्युक्त प्रावधानों के आलोक में किया गया है।

(1) चीन से आयातों में समग्र रूप में वृद्धि:

विचाराधीन उत्पाद के आयात में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान समग्र रूप में वृद्धि हुई है। चीन से होने वाले आयात जो वर्ष 2009-10 में 5264 मी.टन थे बढ़कर वर्ष 2011-12 में 35741 मी.टन हो गये जो 679 प्रतिशत की वृद्धि है। तथापि, यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि वर्ष 2009-10 से 2010-11 में आयातों में भारी वृद्धि हुई परंतु यह वृद्धि इसकी उत्तरवर्ती अवधि अर्थात् जांच की अवधि में उतनी अधिक नहीं है।

वर्ष	भारत में आयात (ग्रेड 304 एचआर एसएस)			आयातों में हिस्सा	
	चीन	तीसरे देश	कुल	चीन	तीसरे देश
	मी.टन	मी.टन	मी.टन	%	%
2009-10	5,264	28,439	33,703	15.62%	84.38%
2010-11	26,702	19,662	46,364	57.59%	42.41%
2011-12	35,741	19,164	54,905	65.10%	34.90%

(i) घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में आयातों में वृद्धि:

जांच अवधि के दौरान भारत में विचाराधीन उत्पादों का आकार आधार वर्ष से तुलना करने पर घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में भी बढ़ा है परंतु तत्काल पूर्व के वर्ष से तुलना करने पर लगभग समान स्तर पर बना रहा।

क्र.सं.	वित्त वर्ष	चीन से आयात (ग्रेड 304)	घरेलू उद्योग का उत्पादन	उत्पादन के संबंध में चीन से आयात
		मी.टन	मी.टन	%
1	2009-10	5,264	100,265	5.25
2	2010-11	26,702	98,448	27.12
3	2011-12	35,741	129,900	27.51

(i) खपत/ मांग के संबंध में आयात:

वर्तमान जांच के प्रयोजन के लिए विचाराधीन उत्पाद की खपत या मांग का निर्धारण चीन तथा तृतीय देशों से भारत को इस उत्पाद के किए गए आयातों, घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री और अन्य घरेलू उत्पादों की घरेलू बिक्री के रूप में किया गया है। इस अवधि के दौरान इस तरह निर्धारित मांग/ खपत में परिवर्तनों की तुलना विभिन्न स्रोतों से हुए आयातों तथा घरेलू उद्योग द्वारा की गई आपूर्तियों में हुए परिवर्तन से की गई जिससे कि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या विचाराधीन उत्पाद के आयातों में भारत में वृद्धि देश में इस उत्पाद के लिए खपत या मांग की तुलना में बहुत अधिक हुई है।

वर्ष	चीन से आयात (ग्रेड 304)	भारतीय खपत (ग्रेड 304)	खपत के संबंध में चीन से आयात
	मी.टन	मी.टन	%
2009-10	5,264	87,281	6.03
2010-11	26,702	88,781	30.07
2011-12	35,741	102,002	35.03

यह पाया गया कि चीन से 304 ग्रेड के एचआर स्टेनलेस स्टील के आयात स्पष्टत दर्शाते हैं कि देश में मांग के संबंध में वर्ष 2009-10 की तुलना में वर्ष 2011-12 में आयातों में तीव्र वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है।

भारत में विचाराधीन उत्पाद का, आधार वर्ष से तुलना करने पर, चीन से आयात में विचाराधीन उत्पाद की भारत में खपत की तुलना में वर्ष 2010-11 के दौरान महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। तथापि, इसके तत्काल पूर्व वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान यह वृद्धि कम महत्वपूर्ण है।

46. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि वर्ष 2009-10 से तुलना करने पर जांच की अवधि के दौरान आयातों में घरेलू उत्पादन के संबंध में तथा संगत रूप में, दोनों तरह से, वृद्धि हुई है। उसी समय, यह नोट करना भी महत्वपूर्ण है कि उसके बाद की अवधि में वही प्रवृत्ति जारी नहीं रही। यद्यपि यह सत्य है कि प्राधिकारी, “संवर्धित आयातों” का निर्धारण करने के लिए दीर्घतर अवधि पर विचार करने के लिए स्वतंत्र है, तथापि यह मानना चाहिए कि रक्षोपाय जांच में हाल ही के विगत के आयात और प्रवृत्तियों को भी उचित मान्यता प्रदान की जानी चाहिए। इस मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में, यह नोट करना भी महत्वपूर्ण है कि चीन से आयातों में वर्ष 2010-11 में, तत्काल पूर्व की अवधि की तुलना में, शुरुआती वृद्धि इस तथ्य के कारण भी हो सकती है कि अन्य स्रोतों से आयातों के उच्च स्तर की तुलना में आधार वर्ष में चीन से आयात बहुत कम थे। इसके अतिरिक्त, इस तथ्य को अवहेलना करना भी उपयुक्त नहीं होगा कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने के परिणामस्वरूप अन्य देशों से आयातों में कमी के कारण हुए अंतराल को, ऐसा प्रतीत होता है कि, चीन ने पूरा किया। यह तथ्य इस तथ्य से स्पष्ट से व्यक्त होता है कि जांच की अवधि वर्ष 2011-12 में चीन से आयातों में पिछले वर्ष से तुलना करने पर समग्र रूप में कम वृद्धि हुई। घरेलू उत्पादन के संबंध में भी आयात लगभग 27 प्रतिशत के स्तर पर बने रहे। घरेलू खपत के संबंध में भी आयातों में मामूली सी ही वृद्धि हुई है। तथापि, घरेलू उद्योग यह अभिव्यक्त करने में समर्थ नहीं रहा कि आयातों में जांच की अवधि के दौरान इतनी अधिक वृद्धि हुई है जिससे बाजार विकृति हुई हो और इस कारण घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति उत्पन्न हुई हो। इस तथ्य को मानते हुए कि “संवर्धित आयातों” का निर्धारण करने के लिए यह अनिवार्य नहीं है कि यह वृद्धि समग्र और संगत दोनों रूपों में होनी चाहिए। तथापि, उत्पादन और खपत के संबंध में संवर्धित आयातों का विश्लेषण विचाराधीन उत्पाद और संबंधित उद्योग के तथ्यों और परिस्थितियों में अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।

अप्रत्याशित विकास

47. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि महानिदेशक (रक्षोपाय) पर ऐसी कोई बाध्यता/जरूरत नहीं है कि वह अप्रत्याशित विकास का विश्लेषण करें क्योंकि भारतीय नियमावली अथवा चीन जनवादी गणराज्य की पराग्रहण संधि के अंतर्गत ऐसी कोई क्रियाप्रणाली नहीं है

जिसका अप्रत्याशित विकास का विश्लेषण करने में अनुकरण किया जाए। तथापि, गाट के अनुच्छेद- के साथ पठित रक्षोपाय करार राष्ट्रीय प्राधिकारियों को अधिबद्ध करता है कि वे उन “अप्रत्याशित विकासों” की जांच करे जिसके कारण बाजार विकृति हुई अथवा घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति पहुंची। यह माना जाता है कि यह निदेशालय इस जांच में “अप्रत्याशित विकास” के मुद्दे की निरंतर जांच करता रहा है। तथापि, यह विचार किया जाता है कि उन परिस्थितियों अथवा अप्रत्याशित विकासों की जांच करना महत्वपूर्ण है जिनके कारण आयातों में वृद्धि हुई।

48. अर्जेटिना-फुटवियर (ईसी) और कोरिया-डेयरी मामले में अपीलीय निकाय ने यह धारित किया है कि “डब्ल्यूटीओ करार के प्रभावी होने के पश्चात अधिरोपित किसी भी रक्षोपाय शुल्क को रक्षोपाय करार तथा गाट, 1994³ के अनुच्छेद- दोनों के प्रावधानों का अनुपालन करना चाहिए।

49. गाट 1994 के अनुच्छेद- में निम्नलिखित उल्लेख किया गया है

1.(क) यदि, अप्रत्याशित विकास के परिणामस्वरूप और इस करार, प्रशुल्क रियायतों सहित, के अंतर्गत संविदाकारी पक्षकार द्वारा की गई प्रतिबद्धता के प्रभाव के कारण उस संविदाकारी पक्षकार के भूभाग में किसी उत्पाद का आयात इतनी अधिक मात्रा में किया जा रहा है और ऐसी स्थिति में किया जा रहा है जिसके कारण उस भूभाग के समान अथवा प्रत्यक्षता प्रतिस्पर्धी उत्पादों का उत्पादन करने वाले घरेलू उत्पादकों को क्षति हो रही है अथवा क्षति की गंभीर चुनौती उत्पन्न हो रही है तो वह संविदाकारी पक्ष उस उत्पाद के संबंध में तथा उस सीमा तक और ऐसे समय तक उक्त क्षति को रोकने अथवा उसका उपचार करने के लिए उस प्रतिबद्धता को संपूर्ण रूप में अथवा आंशिक रूप में निलम्बित करने अथवा रियायतों को वापस लेने अथवा उसमें संशोधन करने के लिए स्वतंत्र होगा।

50. अर्जेटिना- फुटवियर (ईसी मामला) में अपीलीय निकाय ने यह धारित किया है कि वाक्यांश “अप्रत्याशित विकास” का आशय उस विकास से होता है जो प्रत्याशित न हो। ‘अप्रत्याशित विकास’ यह अपेक्षा करता है कि वह विकास जिसके कारण उत्पाद का इतनी अधिक मात्रा में और ऐसी परिस्थितियों के अंतर्गत आयात हो रहा है जो घरेलू उत्पाद को क्षति कारित कर रही है अथवा क्षति की चुनौती उत्पन्न कर रहे हैं वह ‘अप्रत्याशित’ होना चाहिए। कोरिया डेयरी मामले में अपीलीय निकाय ने यह धारित किया कि अप्रत्याशित

³अर्जेटिना-फुटवियर (ईसी) संबंधी अपीलीय निकाय की रिपोर्ट, पैरा-84 तथा कोरिया-डेयरी मामले में अपीलीय निकाय रिपोर्ट पैरा 76 से 77

विकास वे विकास होते हैं जो सदस्य द्वारा ग्रहण की गई प्रतिबद्धता के समय प्रत्याशित अथवा प्रत्यक्ष प्रदर्शित न होते हों।

51. अर्जेटिना-फुटवियर (ईसी) मामले में अपीलीय निकाय ने यह धारित किया कि "अप्रत्याशित विकास" रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण करने के लिए अलग "शर्त" स्थापित नहीं करता है बल्कि यह "परिस्थितियों" के एक सेट का वर्णन करता है।

52. यूएस-स्टील रक्षोपाय⁴ रक्षोपाय संबंधी पैनल ने निष्कर्ष निकाला कि अप्रत्याशित विकास का आधार कई घटनाओं का एक संयुक्त संगम हो सकता है:

"संयुक्त राज्य यह तर्क करता है कि अमेरिकी डालर की सशक्तता एक ऐसा विकास था जो अन्य विकासों के साथ संयुक्त हुआ अर्थात ऐशिया और पूवर्ती यूएसएसआर में मुद्रा संकट तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में स्टील की लगातार बढ़ती मांग जारी रही क्योंकि अन्य बाजारों में पतन आ गया जिसके कारण आयातों में वृद्धि हुई।

53. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित कारकों का उल्लेख किया है जिसके कारण, उनके विचार से, चीन से इस उत्पाद के आयातों में अचानक वृद्धि हुई।

एसएस 200 श्रृंखला के उत्पादन से चीन में 300 श्रृंखला के उत्पादन की ओर शिफ्ट हुआ
जिसके कारण 300 श्रृंखला के उत्पादन में बढ़ोतारी हुई।

वैशिक उत्पादन प्रणाली: यह नोट किया जाता है कि हॉट रोल्ड स्टेनलेस स्टील के उत्पादन को व्यापक तौर पर 200, 300 और 400 श्रृंखला में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। आस्टेंटिक क्रोमियम मैग्नीज अलाय जिसमें निकिल संघटक 6 प्रतिशत से कम हो, को हॉट रोल्ड स्टेनलेस स्टील के रूप में 200 श्रृंखला का उत्पादन करने के लिए वर्गीकृत किया जाता है, जबकि न्यूनतम निकिल संघटक जिसमें आस्टेंटिक क्रोमियम निकिल अलाय की न्यूनतम निकिल मात्रा 6 प्रतिशत से कम हो तो उसे 300 श्रृंखला के उत्पाद के रूप में वर्गीकृत किया जाता है और जिन उत्पादों में फैटिक क्रोमियम का भाग नगण्य अथवा 0.75 प्रतिशत निकिल से ज्यादा नहीं होता है वहां निकिल को 400 श्रृंखला वाले उत्पाद के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। विभिन्न प्रकार के हॉट रोल्ड स्टेनलेस स्टील उत्पाद विभिन्न विशिष्ट अंतिम अनुप्रयोगों के कारण अलग-अलग होते हैं। उपभोक्तागण इनका प्रयोग अदल-बदल कर नहीं

⁴ कोरिया डेयरी मामले में डब्ल्यूटीओ 36 की अपीलीय निकाय रिपोर्ट का पैरा 86

कर सकती अधोलिखित तालिका में 200, 300 और 400 ग्रेड के स्टेनलेस स्टील की विश्व व्यापी खपत को दर्शाया गया है। यह देखा जाता है कि हॉट रोल्ड स्टेनलेस स्टील उत्पादन में 300 श्रृंखला में अधिक उत्पाद आते हैं।

क्र.सं.	श्रृंखला	2007	2008	2009	2010	2011
1	200	13%	13%	14%	13%	13%
2	300	57%	57%	57%	55%	57%
3	400	28%	29%	28%	30%	28%
4	अन्य	2%	1%	1%	2%	2%

स्रोत:-साप्ताहिक फैक्स सेवा हिंज एच, पेजर रिपोर्ट

304 ग्रेड के उत्पाद में 300 श्रृंखला के उत्पादों का भारी अनुपात होता है

घरेलू उद्योग द्वारा यह प्रस्तुत किया गया है कि कई उत्पाद प्रकारों का उत्पादन 300 श्रृंखला के अंतर्गत किया जाता है जिनमें से कुछ शामिल हैं 301, 304, 321, 309, 316, 317, 321 और 347 आदि। पुनः यह प्रस्तुत किया गया कि इन उत्पादों में से 304 ग्रेड के उत्पादों का उत्पादन और उनकी खपत बहुत अधिक होती है तथा वह देश में प्रमुख उत्पादन और खपत करता है।

क्र.सं.	विवरण	2009-10	2010-11	2011-12
1	उत्पादन (मी.टन)			
	304 ग्रेड	1,00,265	98,448	1,29,900
	गैर 304 ग्रेड	37,874	44,048	51,612
	कुल	1,38,139	1,42,496	1,81,512
2	उत्पादन में हिस्सा (%)			
	304 ग्रेड	72.58	69.09	71.57
	गैर 304 ग्रेड	27.42	30.91	28.43
3	खपत (मी.टन)			
	304 ग्रेड	87,281	88,782	1,02,002
	गैर 304 ग्रेड	39,429	39,684	44,083
	कुल	1,26,710	1,28,466	1,46,085
4	खपत में हिस्सा (%)			
	304 ग्रेड	68.88	69.11	69.82

	गैर 304 ग्रेड	31.12	30.89	30.18
5	चीन से आयात (मी.टन)			
	304 ग्रेड	5,264	26,702	35,741
	गैर 304 ग्रेड	100	607	442
	कुल	5,364	27,309	36,183
6	चीन से आयातों में हिस्सा (%)			
	304 ग्रेड	98.14	97.78	98.78
	गैर 304 ग्रेड	1.86	2.22	1.22

54. उपर्युक्त तालिका से यह देखा जाता है कि 300 श्रृंखला के उत्पादन स्टेनलेस स्टील के कुल उत्पादन का आधे से अधिक उत्पादन बनते हैं। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग द्वारा किये गये प्रस्तुतिकरणों से यह नोट किया जाता है कि 300 श्रृंखला में 304 ग्रेड की बहुलता बनती है। यह निश्चय ही अधिमूलियत किया जा सकता है कि 300 श्रृंखला तथा 304 ग्रेड स्टेनलेस उत्पादों के समग्र उत्पादन तथा उसकी खपत में महत्वपूर्ण हैं। साथ ही, यह नोट करना प्रासंगिक होगा कि घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान कराई गई सूचना के अनुसार 300 श्रृंखला की वैश्विक उत्पादन प्रणाली वर्ष 2006-11 तक आश्चर्यजनक रूप से लगभग 57 प्रतिशत स्थिर बनी रही। इसके अतिरिक्त, क्षति जांच अवधि के दौरान देश में घरेलू उत्पादन तथा खपत प्रणाली भी अभिवृद्धि रूप से स्थिर बनी रही। चीन से होने वाले आयातों की खपत भी चीन से होने वाले कुल आयातों का 98 प्रतिशत के लगभग स्थिर बनी रही। इन परिस्थितियों में, यह अधिमूलियत करना कठिन है कि घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किये गये तथ्य किस तरह उनके "अप्रत्याशित विकास" के दावे का समर्थन करते हैं। इसके विपरीत घरेलू रूप से तथा वैश्विक रूप से स्थिर प्रणाली यह सुझाव देती है कि 300 श्रृंखला तथा 304 ग्रेड का हिस्सा पूर्वानुमेय एवं निश्चित कैसे है।

चीन की उत्पादन प्रणाली

घरेलू उद्योग ने चीन में विभिन्न प्रकार हॉट रोल्ड स्टेनलेस स्टील उत्पादन का उत्पादन करने तथा उसकी खपत करने की प्रणाली प्रस्तुत की है। पुनः यह प्रस्तुत किया जाता है कि स्टेनलेस स्टील के उत्पादन और उसकी खपत में 200 श्रृंखला से 300 श्रृंखला की ओर शिफ्ट चीन में वर्षों से बनी हुई है।

स्टेनलेस स्टील का उत्पादन-चीन %									
श्रृंखला	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	
200	60.00 %	40.00 %	30.00 %	25.39%	26.80%	26.63%	30.63%	27.88%	
300	25.00%	34.85%	45.00 %	50.41%	47.76%	46.73%	44.62%	48.70%	
400	15.00%	25.15%	25.00 %	24.20%	25.44%	26.63%	24.75%	23.43%	

स्रोत:-साप्ताहिक फैक्स सेवा- हींज एच.प्रेजर रिपोर्ट

घरेलू उद्योग द्वारा यह प्रस्तुत किया जाता है कि चीन में कुछ समय पहले 200 श्रृंखला एचआर स्टेनलेस स्टील उत्पादन में बहुलता थी परंतु अभी हाल की वर्षों में खपत प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ अब 300 श्रृंखला की खपत चीन में हॉट रोल्ड स्टेनलेस स्टील उत्पादन में बहुत अधिक है। इसने अब 200 श्रृंखला के उत्पादों की खपत को समग्र रूप से तथा विभिन्न उत्पादों के उत्पादन के संगत रूप से कवर कर लिया है। उपर्युक्त आंकड़ों से जो उभर कर आता है वह यह है कि चीन में 300 श्रृंखला के लिए मांग में भारी वृद्धि, अन्य बातों के साथ-साथ, 200 श्रृंखला के स्थान पर 300 श्रृंखला को प्रतिस्थानिक किये जाने के कारण हो रही है। इन परिस्थितियों में यह अधिगूल्यत करना कठिन है कि घरेलू उद्योग द्वारा बताये गये कारणों के अलावा किसी अन्य कारण से चीन के आयातों में भारी वृद्धि हुई है।

55. घरेलू उद्योग द्वारा विभिन्न उत्पादों के उत्पादन, खपत और लाभप्रदायकता के संबंध में विभिन्न प्रकाशित जानकारी की जांच भी प्रस्तुत की गई है जो निम्नलिखित है:

स्रोत: अंतर्राष्ट्रीय स्टेनलेस स्टील फोरम, मीडिया रिलीज, दिनांक 21 मार्च, 2011

“..... पिछले कुछ वर्षों में स्टेनलेस उत्पादों के ग्रेड में स्टेनलेस स्टील बाजार में प्रमुख परिवर्तन आये हैं। इस समय क्रोमियम-मैनीज ग्रेड अब बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो गये हैं। अत्यधिक हाल की स्थिति में क्रोमियम ग्रेडों के उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। तालिका-3 स्टेनलेस स्टील की तीन मुख्य श्रेणियों के बाजार हिस्से को प्रदर्शित करती है। यह आंकड़े स्टेनलेस स्टील के एक उत्पादनकर्ता सदस्य आईएसएसएफ से प्राप्त रिपोर्ट पर आधारित है।

तालिका-3 ग्रेड के द्वारा स्टेनलेस स्टील का उत्पादन (स्टील उत्पादन का प्रतिशत-प्रारंभिक आकलन)

ग्रेड श्रेणी	तिमाही 1	तिमाही 2	तिमाही 3	तिमाही 4	2011(अनंतिम)
क्रोमियम मैग्नीज इस्पात (200 श्रृंखला)	13.4	13.6	13.7	14.4	13.8
क्रोमियम निकिल स्टील (300 श्रृंखला)	59.5	57.3	58.4	57.6	58.2
क्रोमियम स्टील (400 श्रृंखला)	27.1	29.1	28	28	28

56. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई जानकारी से यह देखा जाता है कि 300 श्रृंखला का वैश्विक उत्पादन संगत रूप से स्थिर बना रहा। इन परिस्थितियों के अंतर्गत उपर्युक्त जानकारी पुनः यह सिद्ध करती है कि भारत अथवा अन्यत्र 300 श्रृंखला या 304 ग्रेड की खपत प्रणाली में कुछ भी अत्याशित अथवा आकस्मिक नहीं है।

चीन के उत्पादकों की अत्यधिक बेशी क्षमता जिसके कारण बेशी उत्पादन में बढ़ोतरी हुई:

57. घरेलू उद्योग ने चीन में क्षमता आधिक्य के अपने दावे के संबंध में कतिपय जानकारी प्रदान कराई है। यह साक्ष्य विभिन्न पत्रिकाओं और समाचार रिपोर्टों से उद्धरणों के रूप में है। दुर्भाग्यवश, इन रिपोर्टों पर कई कारणों से अधिक भरोसा नहीं किया जा सकता है। प्रथम, यह रिपोर्ट विचाराधीन उत्पाद से विशेष रूप से संबंधित नहीं है बल्कि वे स्टेनलेस स्टील उद्योग के भारी सेगमेंट को संदर्भित करती है। द्वितीय, यह सूचना अपने में इतनी पूर्ण या व्यापक नहीं है कि इससे कोई स्पष्ट विचार बनाया जा सके। तृतीय यह कल्पना की जाती है कि चीन में क्षमता आधिक्य है परंतु इससे यह अभिव्यक्त नहीं होता है कि यह क्षमताएं आसन्न रूप से अथवा संभावित रूप से भी भारतीय बाजार में अपना मार्ग प्रशस्त कर सकती है। अंत में, घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत आशंका स्वयं में विरोधाभाषी है क्योंकि यदि चीन की मांग प्रणाली 200 श्रृंखला से 300 श्रृंखला की ओर शिफ्ट हो रही है तो यह दावा नहीं किया जा सकता है कि 300 श्रृंखला की मांग पर कोई दबाव होगा। उपर्युक्त कारणों से यह निष्कर्ष निकालना उचित माना जाता है कि घरेलू उद्योग कोई ऐसी ठोस जानकारी लाने में असफल रहा जो अप्रत्याशित विकास के उनके दावे को सिद्ध कर सकती। दूसरी ओर, ऊपर यथा चर्चा की गई और उनके द्वारा प्रदान की गई जानकारी इस निष्कर्ष की ओर अग्रसर करती है कि विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन खपत और मांग न केवल वैश्विक प्रवृत्ति के संदर्भ में बल्कि चीन के संदर्भ में भी अत्यधिक पूर्वानुमेय रही है।

बाजार विकृति तथा बाजार विकृति की चुनौती

बाजार विकृति

58. सांविधिक ढाचा: नियमों के अंतर्गत, “बाजार विकृति” तब कारित होती है जब भारत में किसी वस्तु का आयात चीन जनवादी गणराज्य से इतनी अधिक मात्रा में और ऐसी परिस्थितियों में होता है जो घरेलू उद्योग को बाजार विकृति अथवा बाजार विकृति की चुनौती उत्पन्न करता हो। “बाजार विकृति” तब होती है जब घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तु अथवा प्रत्यक्षतः प्रतिस्पर्धी वस्तु के आयातों में समग्र रूप से अथवा संगत रूप से इतनी तेजी से वृद्धि होती है कि उसे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होती है, या वास्तविक क्षति की चुनौती उत्पन्न हो जाती है। “बाजार विकृति की चुनौती” का आशय बाजार विकृति का स्पष्ट एवं आसन्न खतरा होता है।

59. सीमाशुल्क प्रशुल्क (परिवर्ती उत्पाद विशिष्ट रक्षोपाय शुल्क) नियमावली, 2002 के नियम 8 के अनुबंध में यह अपेक्षा की जाती है कि बाजार विकृति अथवा बाजार विकृति की चुनौती का निर्धारण करने के लिए कतिपय सूचीबद्ध कारकों तथा अन्य संगत कारकों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। इस तरह का कोई भी मूल्यांकन अलग-अलग उद्योगों के लिए अलग-अलग मामलों में, विशिष्ट मामले के कारकों तथा संबंधित उद्योग की स्थिति के आधार पर, अलग-अलग होगा।

60. तदनुसार, बाजार विकृति अथवा बाजार विकृति की चुनौती का विश्लेषण करते समय उन सभी कारकों, जिनका नियमावली में उल्लेख है तथा अन्य सभी कारकों जो बाजार विकृति अथवा बाजार विकृति की चुनौती का निर्धारण में संगत हैं, पर विचार किया गया है। बाजार विकृति अथवा बाजार विकृति की चुनौती का निर्धारण उन सभी संगत कारकों जिनका उस उद्योग की स्थिति पर प्रभाव था, का समग्र मूल्यांकन करने के आधार पर किया गया।

(क) बाजार हिस्सा: बाजार हिस्से का निर्धारण करने के प्रयोजन के लिए घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा पर विचार घरेलू उद्योग द्वारा रखे गये उत्पाद के रिकार्डों के अनुसार किया गया। बाजार हिस्से का निर्धारण घरेलू उद्योग द्वारा प्रेषणों तथा भारत में आयात पर विचार करते हुए किया गया। यह देखा गया कि घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा वर्ष 2009-10 में 51.33 प्रतिशत था, यह हिस्सा घटकर वर्ष 2011-12 में 40.88 प्रतिशत रह गया। यह वह अवधि थी जब भारतीय बाजार में आयातों ने प्रवेश करके महत्वपूर्ण दरों पर भारतीय बाजार पर कब्जा

कर लिया था। तथापि, पिछले वित्त वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में बाजार हिस्सा लगभग 40 प्रतिशत के बराबर स्थिर बना रहा।

घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में यह गिरावट विभिन्न स्रोतों पर पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने तथा मांग में वृद्धि होने के बावजूद हुई है। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण किये जाने से इसे अपने बाजार हिस्से में वृद्धि होने की उम्मीद निम्नलिखित दो कारणों से थी () इसे अपने बाजार हिस्से में वृद्धि होने की उम्मीद निम्नलिखित दो कारणों से थी () पाटनरोधी शुल्क अधिरोपण करके घरेलू उद्योग को भारतीय बाजार में पुनर्स्थापित की जारी उचित बाजार शर्तों के साथ बाजार हिस्सा प्राप्त कर लेना चाहिए था () घरेलू उद्योग ने अपने संयंत्र का हरित क्षेत्र विस्तार करके तथा उत्पाद आकार (जिसमें 1250 मिमी तथा उससे संयंत्र का हरित क्षेत्र विस्तार करके तथा उत्पाद आकार (जिसमें 1250 मिमी तथा उससे अधिक की चौड़ाई का विचाराधीन उत्पाद भी शामिल था) में व्यापक वृद्धि करके अपनी क्षमताओं में भारी बढ़ोतरी कर ली थी। क्षमता तथा उत्पाद आकार/ प्रकार में इस विस्तार से घरेलू उद्योग को बाजार में उत्पाद की बढ़ती मांग में अपना हिस्सा बढ़ाने में सक्षम हो जाना चाहिए था।

	2009-10	2010-11	2011-12
कुल आयात (मी.टन)	33,703	46,364	54,906
चीन से आयात (मी.टन)	5,264	26,702	35,742
गैर चीन देशों से आयात (मी.टन)	28439	19662	19164
उद्योग द्वारा घरेलू बिक्री (मी.टन)	44802	36772	41646
अन्य घरेलू उत्पादकों द्वारा बिक्री	8777	5645	5450
कुल मांग (मी.टन)	87,282	88,781	102,002
चीन से आयातों का बाजार हिस्सा (%)	6.03	30.08	35.04
गैर चीन देशों से आयातों का बाजार हिस्सा (%)	32.58	22.15	18.79
घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा (%)	51.33	41.42	40.83
अन्य उत्पादकों का बाजार हिस्सा (%)	10.06	6.36	5.34

यह अधिमूल्यित किया जा सकता है कि आपूर्ति के कतिपय स्रोतों पर पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से घरेलू उद्योग पाटनरोधी शुल्क के संरक्षात्मक कवज के कारण अपनी कीमतों में वृद्धि करने अथवा अपने बाजार हिस्से में सुधार करने की उम्मीद कर सकता था। तथापि, इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में पिछले वित्त वर्ष की तुलना में वर्ष 2010-11 में प्रारंभिक गिरावट के बाद जांच की अवधि के दौरान

घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा लगभग 41 प्रतिशत स्थिर हो गया। यह भी देखा जा सकता है कि उड़ीसा संयंत्र से उत्पादन घरेलू बाजार में वर्ष 2011 के जुलाई-अगस्त माह तक उपलब्ध नहीं था।

(ख) उत्पादन:- घरेलू उद्योग के उत्पादन का निर्धारण घरेलू उद्योग द्वारा उत्पाद कर रिकार्ड में रिपोर्ट किये गये उत्पादन के आधार पर किया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा यह प्रस्तुत किया गया कि विचाराधीन उत्पाद की बढ़ती मांग के कारण घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमताओं में विस्तार कर लिया। घरेलू उद्योग ने विभिन्न हॉट एंड कोल्ड रोल्ड स्टील उत्पादों का उत्पादन, जिसमें विचाराधीन उत्पाद भी शामिल है, करने के लिए उड़ीसा में 0.6 मिलियन मी.टन का एक हरित क्षेत्र संयंत्र भी स्थापित कर लिया था। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया है कि इसके पास 3 व्यापक बाजार खंड हैं- (क) देश के अंदर व्यापारी घरेलू बाजार, (ख) ग्राही खपत जहां घरेलू उद्योग विभिन्न कोल्ड ड्रान स्टील उत्पादों का उत्पादन करता है और जिसमें इनपुट हॉट रोल्ड उत्पाद होते हैं, (ग) निर्यात। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा विचाराधीन उत्पाद की घरेलू एंड वैश्विक मांग पर विचार करते हुए अपनी क्षमताओं की स्थापना की है।

वर्ष	304 ग्रेड के लिए उपलब्ध क्षमता	कुल उत्पादन	कुल मांग
	मी.टन	मी.टन	मी.टन
2009-10	109,189	100,265	87,281
2010-11	114,258	98,448	88,782
2011-12	235,347	129,900	102,002

घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि आयातों में तीव्र वृद्धि के कारण उत्पादन में बढ़ोतरी करने के बावजूद घरेलू विक्री में गिरावट आयी है। घरेलू उद्योग ने पुनः दर्ज किया है कि वर्ष 2010-11 की तुलना में वर्ष 2011-12 में उत्पादन में यह वृद्धि जुलाई, 2011 में उत्पादन सुविधा में बढ़ोतरी कर दिये जाने के कारण हुई है। नई उत्पादन सुविधाओं से उत्पादन प्रारंभ कर दिये जाने तथा पाटनराधी शुल्क का अधिरोपण करने के कारण, याचिकाकर्ता ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को विधिक रूप से यह उम्मीद थी कि इसके उत्पादन में भारी वृद्धि होगी।

यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग का समग्र उत्पादन उक्त अधिकारी के दौरान जुलाई, 2011 में नये संयंत्र में उत्पादन में शुरू कर दिये जाने के बाद वर्ष 2011-12 में बहुत अधिक बढ़ा है। यह भी देखा जाता है कि घरेलू उद्योग का विचाराधीन उत्पादन देश में मांग से अधिक है। अतः, यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन विचाराधीन उत्पाद की घरेलू मांग का ही एकमात्र कार्य नहीं है बल्कि यह निर्यात बाजार तथा ग्राही बाजार में उतार-चढ़ाव पर निर्भर रहा है। अतः, निष्कर्षात्मक रूप से यह नहीं कहा जा सकता है कि चीन से आयातों में वृद्धि के कारण घरेलू खपत के लिए उत्पादन पर कोई नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

(ग) क्षमता उपयोग:- घरेलू उद्योग ने उड़ीसा स्थित अपने एक नये हरित क्षेत्र संयंत्र की स्थापना करके, जिसने जुलाई, 2011 में वाणिज्यिक उत्पादन शुरू कर दिया था, अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर ली थी। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि क्षमताओं में यह वृद्धि उत्पाद की घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजार में वर्तमान एवं संभावित मांग को देखते हुए की गई थी। तथापि, विचाराधीन उत्पाद की मांग में वृद्धि होने के बावजूद वर्ष 2011-12 में घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में भारी गिरावट आयी है। क्षमता उपयोग जो वर्ष 2009-10 में 91.82 प्रतिशत था घटकर वर्ष 2011-12 में 55.19 प्रतिशत रह गया। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि उत्पादन प्रक्रिया की मांग यह थी कि फरनेस को चलाये रखने के लिए इसका निरंतर उत्पादन किया जाना चाहिए था। उत्पादन की दर का विनियमन कंपनी द्वारा उत्पाद का भंडार किये जाने की क्षमता तथा संभावित बाजार स्थिति के आधार पर किया जाता है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि न्यून क्षमता उपयोग विचाराधीन उत्पाद के किसी भी उत्पादक के लिए एक भयावह स्थिति होती है।

वित्त वर्ष	उत्पादन	304 ग्रेड के लिए उपलब्ध क्षमता	क्षमता उपयोग
	मी.टन	मी.टन	%
2009-10	100,265	109,189	91.82
2010-11	98,448	114,258	86.16
2011-12	129,900	235,347	55.19

क्षमता उपयोग के आंकड़ों पर सरसरी नजर से गिरावट का सुझाव मिलता है, घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट से निर्णायक रूप से किसी प्रकार की बाजार विकृति प्रदर्शित नहीं

होती है। प्रथम, यह उपलब्ध क्षमता अन्य श्रृंखला एवं ग्रेडों के लिए मांग और लाभप्रदायकता का स्पष्ट कार्य है। द्वितीयतः, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि उड़ीसा स्थित हरित क्षेत्र परियोजना ही क्षमता उपयोग के न्यूनतर स्तर पर प्रचालन कर रही थी।

(घ) मालसूची: मालसूची के स्तर पर विचार घरेलू उद्योग द्वारा रखे जा रहे उत्पाद कर अभिलेखों के आधार पर किया जाता है। संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान मालसूची के स्तर में भारी वृद्धि हुई है। अधोलिखित तालिका मालसूची के स्तर को दर्शाती है जिसमें यह स्पष्ट है कि वर्ष 2009-10 में मालसूची का स्तर 2120 मी.टन था जो 2011-12 में बढ़कर 13663 मी.टन हो गया। मालसूची में यह वृद्धि 2009-10 की तुलना में 2011-12 में लगभग छह गुनी है। जिससे घरेलू उद्योग की स्थिति का पता लगता है।

वर्ष	मालसूची
	मी.टन
2009-10	2,120
2010-11	2,876
2011-12	13663

(ड.) बिक्री: उत्पाद कर रिकार्ड से यथा सत्यापित घरेलू उद्योग की बिक्री निम्नलिखित है।

वर्ष	उत्पादन	बिक्री	कुल मांग
	मी.टन	मी.टन	मी.टन
2009-10	100,265	44,802	87,281
2010-11	98,448	36,772	88,782
2011-12	129,900	41,646	102,002

(१) यह नोट किया जाता है कि चीन से आयातों में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में वर्ष 2010-11 में गिरावट आयी। क्षमता उपयोग तथा आपूर्ति के कतिपय स्रोतों पर पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण को देखते हुए घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में वर्ष 2011-12 में

सुधार हुआ। परंतु यह वर्ष 2009-10 में प्राप्त स्तर से अभी भी बहुत कम था, यद्यपि उत्पाद की मांग में भारी वृद्धि हुई थी। यह नोट किया जाता है कि, यद्यपि विचाराधीन उत्पाद की मांग में वर्ष 2009-10 की तुलना में वर्ष 2010-11 में 1501 मी.टन की वृद्धि हुई थी, वही घरेलू उद्योग को इसी अवधि के दौरान अपने बिक्री में 8030 मी.टन का नुकसान हुआ था। उसके बाद वर्ष 2011-12 में, मांग में 14720 मी.टन की वृद्धि हुई, वहीं घरेलू उद्योग की बिक्री में यह वृद्धि केवल 4874 मी.टन अर्थात् घरेलू उद्योग द्वारा वर्ष 2010-11 में 8030 मी.टन की बिक्री से भी कम, बिक्री हुई।

(.) यह भी नोट किया जाता है कि संगत रूप में मांग के प्रतिशत के रूप में बिक्री जो वर्ष 2009-10 में कुल मांग का 51.33 प्रतिशत थी हटकर 2011-12 में 40.82 प्रतिशत रह गयी। यह स्पष्टता दर्शाता है कि चीन से आयातों में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा पर विपरीत प्रभाव पड़ा है।

वर्ष	बिक्री	मांग	मांग के % के रूप में बिक्री
	मी.टन	मी.टन	%
2009-10	44,802	87,281	51.33
2010-11	36772	88,782	41.42
2011-12	41,646	102,002	40.82

(.) पुनः यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री के संबंध में चीन के आयातों में वृद्धि हुई है।

(.) यद्यपि वर्ष 2009-10 की तुलना में वर्ष 2011-12 में इस उत्पाद की मांग में 14720 मी.टन तक की वृद्धि हुई, वहीं चीन से आयातों में 30477 मी.टन की वृद्धि हुई और इसी अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री में 3156 मीट्रिक टन की गिरावट आयी। यह स्पष्टतः दर्शाता है कि चीन से होने वाले आयातों में वृद्धि भारत में इस उत्पाद की मांग में हुई वृद्धि की तुलना में बहुत थी और इसके परिणामस्वरूप चीन के निर्यातों में भारी बाजार हिस्से पर अपना कब्जा कर लिया जिससे घरेलू उद्योग पर विपरीत प्रभाव पड़ा।

(च) रोजगार एवं उत्पादकता: उड़ीसा में नये यूनिट की स्थापना तथा इसके द्वारा जुलाई, 2011 में उत्पादन आरंभ कर दिये जाने के कारण वर्ष 2011-12 के दौरान रोजगार में बढ़ोतरी होने के बावजूद वर्ष 2011-12 के दौरान उत्पादकता में गिरावट आयी है।

वित्त वर्ष	उत्पादन	रोजगार	उत्पादकता
	मी.टन	सं.	मी.टन/सं.
2009-10	100,265	511	196
2010-11	98,448	526	187
2011-12	129,900	802	162

अतः, उत्पादकता का न्युनतर स्तर, जो प्राथमिकतः नई सुविधा के कारण प्रतीत होता है, के लिए चीन से बढ़ते आयातों को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है।

(छ) लाभ/हानि: घरेलू उद्योग ने सनदी लेखाकार द्वारा विधिवत प्रमाणित कर पूर्व लाभ की सूचना दी है जो निम्नलिखित तालिका में दर्शायी गई है:

क्रम सं.	विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12
1	लाभ/हानि	सूचीबद्ध	100	(222)	(726)
2	घरेलू बिक्री से लाभ	सूचीबद्ध	100	(182)	(675)

विचाराधीन उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा रिपोर्ट किये गये लाभ पर विचार केवल घरेलू प्रचालनों के संबंध में किया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा यह दावा किया गया है कि आयातों की उत्तराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत कम है। घरेलू तथा चीन के उत्पाद के बीच भारी कीमत अंतर के कारण उपभोक्ताओं ने चीन के उत्पाद की अधिक खरीद करना प्रारंभ कर दी। यह दावा किया जाता है कि घरेलू उद्योग को उत्पादन लागत में हुई वृद्धि के अनुरूप इसकी कीमतों में बढ़ोतरी करने से वंचित किया गया। अतः, इनपुट लागत में वृद्धि होने के कारण लागत में बढ़ोतरी के बावजूद घरेलू उद्योग लागत में वृद्धि के अनुपात में बिक्री कीमत में वृद्धि नहीं कर सका। पुनः यह दावा किया जाता है कि बिक्री कीमत जो वर्ष 2009-10 में उत्पादन लागत से अधिक थी वर्ष 2010-11 में उत्पादन लागत से कम हो गयी। घरेलू उद्योग के अनुसार घरेलू बिक्री में प्रति यूनिट लाभ में आयातों में बढ़ोतरी से उस सीमा तक कमी हुई कि घरेलू उद्योग को वर्ष 2010-11 तथा 2011-12 में भारी वित्तीय क्षति उठानी पड़ी।

यह देखा जाता है कि वर्ष 2009-10 से घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में भारी गिरावट आयी है।

(ज) कीमत अधोरदन, निग्रहण/ अद्यमंदन: यह देखा गया कि विचाराधीन उत्पाद की चैल से आयातों की भारित औसत उत्तराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत कम है। घरेलू उद्योग तथा आयातित उत्पादों की कीमत के बीच बहुत अधिक अंतर है।

क्र.सं.	विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12
1	आयात मूल्य	मी.टन	5,264	26,702	35,741
2	आयात मूल्य	लाख रु.	5,960	37,812	52,793
3	स्थीआईएफ	रु./मी.टन	112,099	140,203	146,245
4	अपकल्पित मूल्य	रु./मी.टन	113,220	141,605	147,708
5	उत्तराई कीमत	रु./मी.टन	119,051	148,897	155,315
6	उत्तराई कीमत (सूचीबद्ध)		100	125	130
7	घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत (सूचीबद्ध)		103	131	135
8	बिक्री लाभत (सूचीबद्ध)		101	136	151

उपर्युक्त तालिका से यह देखा जा सकता है कि बिक्री लाभत और बिक्री कीमत दोनों में बढ़ोतरी हुई है परंतु बिक्री लाभत में वृद्धि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत की तुलना में बहुत अधिक है। इस प्रकार आयात घरेलू उद्योग की बाजार में कीमतों का निग्रहण कर रहे थे। यह देखा गया कि इस अवधि के दौरान प्रमुख इनपुटों की कीमत में भारी वृद्धि हुई है।

(झ) निवेश पर अर्जन: घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पाद के संबंध में घरेलू प्रचालनों से अर्जित ब्याज एवं कर पूर्व लाभ पर विचार करते हुए निवेश पर अर्जन की सूचना दी है। यह देखा जाता है कि निवेश पर अर्जन में भी वही प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है जो लाभ प्रदायकता की थी। इस अवधि के दौसून निवेश पर अर्जन में भारी गिरावट आयी है।

वित्तीय वर्ष	निवेश पर अर्जन(सूचीबद्ध)
	%
2009-10	100
2010-11	(97)
2011-12	(161)

६३. बाजार विकृति की चुनौती:

(1) नियम में निम्नलिखित प्रावधान है

(1) जांच में यह निर्धारित करने के लिए कि क्या संवर्धित आयात घरेलू उद्योग को “बाजार विकृति” कारित कर रहे हैं अथवा उसकी चुनौती उत्पन्न कर रहे हैं, महानिदेशक उन सभी उद्देश्यपरक एवं परिमाणकरणीय संगत कारकों का मूल्यांकन करेंगे जिसका घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता हो खासकर संबंधित वस्तु के आयातों में समग्र एवं संगत रूप से कीमत एवं मात्रा में वृद्धि, संवर्धित आयातों द्वारा अधिग्रहीत घरेलू बाजार, बिक्री उत्पादकता, क्षमता उपयोग, लाभ एवं हानि और रोजगार में हुए परिवर्तन पर विचार करना चाहिए।

७क. “बाजार विकृति की चुनौती” का आशय बजार विकृति के स्पष्ट स्वं आसन्न खतरे से है।

(1) यूएस-लैम्ब⁵ संबंधित पैनल ने विचार किया कि किसी जांच अवधि के अंत के संबंध में उंपेंलब्ध नवीनतम आंकड़ों पर प्रकाश डालना गंभीर क्षति विश्लेषण की भविष्य में होने वाली चुनौती की प्रकृति पर विचार करने के लिए संगत है। संगत सार निम्नलिखित है:-

“हमारे विचार से, क्षति विश्लेषण की भावी उन्मुखी प्रकृति के कारण, यह तर्क संगत प्रतीत होता है कि, जांच अवधि प्रारंभ होने के समय की घटनाएं उतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं जितनी उस अवधि के अंत में होने वाली घटनाएं महत्वपूर्ण होती हैं। यद्यपि एसजी करार में जांच के लिए विचारित समय अवधि की उपर्युक्त अवधि का उल्लेख नहीं किया गया है तथापि अर्जेंटिना-फटवियर में पैनल और अपीलीय निकाय दोनों ने इस मुद्दे पर कुछ सीमा तक विचार किया है। दोनों ने निष्कर्ष निकाला है कि (वास्तविक गंभीर क्षति के निष्कर्ष के संबंध में) अत्यधिक नवीनतमक आंकड़े सर्वाधिक संगत आंकड़े होते हैं। खासकर, अपीलीय निकाय ने उल्लेख किया कि ‘संगत जांच अवधि अत्यधिक हाल के विगत में समाप्त नहीं होनी चाहिए, जांच अवधि अभी हाल ही का विषय होना चाहिए’।

⁵ यम.एस. पर पैनल रिपोर्ट -लैम्ब पैरा 7.192-7.194

इस तथ्य पर विचार करते हुए कि गंभीर क्षति आसन्न महत्वपूर्ण समग्र अवरोध से है अर्थात ऐसी घटना से है जो निकट भविष्य में ही घटित होने वाली है, उसमें भी वर्तमान गंभीर क्षति का निर्धारण करने की तुलना में क्षति की चुनौती का निर्धारण करने के लिए वही सिद्धांत सही प्रतीत होता है। इससे इस विचार को समर्थन मिलता है कि यूएसआईटीसी जांच अवधि की समाप्ति के समय उपलब्ध अत्यधिक हाल के आंकड़ों पर प्रकाश डालना सही था। हम यह भी विचार करते हैं कि 1997 तथा 1998- अंतरिम के आंकड़े पर्याप्त एवं तर्क संगत अवधि को कवर करते हैं, यदि उन्हें आसन भविष्य में मौजूद प्रवृत्तियों के प्रक्षेपणों का बास्यगणन करके पूरक किया जाए ताकि भावी विश्लेषण सुनिश्चित किया जा सके जो क्षति निर्धारण के लिए अपेक्षित है।

अतः हम विचार करते हैं कि अपना निर्धारण जांच अवधि की समाप्ति की घटनाओं, न कि संपूर्ण जांच अवधि की घटनाओं, पर आधारित करते हुए (अर्थात् 1 वर्ष और 9 माह) यूएसआईटीसी ने इस तथ्य का वैध मूल्यांकन करने के लिए की क्या अत्यधिक समग्र परिक्षयण निकट भविष्य में “आसन्न” था उसी आधार पर हम यह भी विचार करते हैं कि अपना निर्धारण भविष्य में होने वाले विभिन्न उद्योग संकेतकों के लिए अन्नयतः किये जाने वाले प्रक्षेपणों पर विश्वास करने के बजाय, हाल ही के विगत से प्राप्त घटनाओं पर विचार करके कर सकते हैं। इसलिए यूएसआईटीसी ने चुनौती का निर्धारण ‘आरोप अनुमान या दूर की संभावना पर भरोसा न करके’ उद्देश्यपरक एवं मात्रापरक तथ्यों के आधार पर किया है।

(i) यूएस-लैम्ब संबंधी पैनल रिपोर्ट, एक निष्कर्ष जिसकी बाद में अपीलीय निकाय द्वारा समीक्षा नहीं की गई, जिसने इस प्रश्न का समाधान निकाला कि क्या आयातों में हुई एक बार की वृद्धि से क्षति की मात्रा कारित होती है, इसलिए गंभीर क्षति की चुनौती की मौजूदगी का विधिक रूप से निर्धारण करने के उद्देश्य से आयातों में और अधिक वृद्धि होना जरुरी है:

“शिकायतकर्ताओं पुनः यह दावा किया है कि क्षति विश्लेषण की रक्षा करने में आयातों में भावी वृद्धि के प्रक्षेपणों के संबंध में यूएस संदर्भ ‘गंभीर क्षति की चुनौती’ के साथ ‘आयातों में वृद्धि की चुनौती’ दोनों को एक समान बताता गया है जिसे अर्जेटिना-फुटवियर पैनल में अनुमेय नहीं माना है.....

हम शिकायतकर्ताओं के इस तर्क से सामान्यतः सहमत हैं कि संवर्धित आयातों की चुनौती को गंभीर क्षति की चुनौती के बराबर नहीं माना जा सकता है। तथापि, हमारे विचार से, यह वह कार्य नहीं है जो यूएसआईटीसी ने इस मामले में किया है। इसके अतिरिक्त हम यह भी

संभव मानते हैं कि आयातों का काफी लम्बे समय तक जारी रहना, जिनमें जांच की अवधि की समाप्ति पर और अधिक वृद्धि न हुई हो, गंभीर क्षति (गंभीर क्षति की चुनौती कारित करना) क्षति का कारण बन सकता है। यदि संवर्धित आयात किसी निश्चित समय पर गंभीर चुनौती उत्पन्न कर रहे हैं तो यह अनिवार्य रूप से सही नहीं है कि वह गंभीर चुनौती और अधिक वृद्धि अर्थात् अतिरिक्त रूप से बढ़े संवर्धित आयातों द्वारा की जाएगी। हमारा विचार है कि, किसी मामले की विशिष्ट परिस्थितियों में, अभी हाल ही के संवर्धित स्तर पर आयातों का बना रहना चुनौती सृजित करने के लिए पर्याप्त होगा।

62. घरेलू उद्योग द्वारा यह तर्क दिया गया है कि तृतीय देशों से होने वाले आयात शिफ्ट होकर चीन की तरु मुड़ गये हैं। गैर चीन देशों से होने वाला आयात जो वर्ष 2009-10 में 84.38 प्रतिशत था घटकर वर्ष 2011-12 में 34.90 प्रतिशत रह गया जबकि चीन से होने वाले आयातों में उसी अवधि के दौरान 15.62 प्रतिशत से वृद्धि होकर 65.10 प्रतिशत हो गई। संबद्ध वस्तु के लिए घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत पर विचार करते हुए यह देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग की कीमत तथा चीन से होने वाले आयातों की कीमत में भारी सकारात्मक अंतर है और यह अंतर बने रहने की संभावना है। यह संभावना है कि चीन के उत्पाद मनमोहक बने रहेंगे और उनसे घरेलू उद्योग को क्षति की चुनौती जारी रहेगी। घरेलू उद्योग के अनसार गंभीर बाजार विकृति की चुनौती निम्नलिखित कारकों से स्पष्ट होती है।

- क) घरेलू एवं आयातित उत्पाद के बीच कीमत अंतर बहुत अधिक है, जिससे चीन के उत्पाद घरेलू उद्योग के उत्पाद की तुलना में अधिक आकर्षक हो गये हैं।
- ख) चीन के उत्पादकों के पास पर्याप्त अनुप्रयुक्त क्षमता है। परिणामतः वे अतिरिक्त बाजारों की लगातार तलाश कर रहे हैं।
- ग) सस्ता निकिल, पर्याप्त कोक न्यून कृण दर की उपलब्धता के कारण उन्हें न्यून उत्पादन लागत का लाभ मिल रहा है जिससे कि चीन के उत्पादक भारतीय बाजार में अपनी गतिविधियां तेज कर सकते हैं।
- घ) इस उत्पाद की मांग बढ़ रही है तथा भारतीय बाजार बहुत बड़ी एवं कीमत संवेदी है।
- ड.) घरेलू उद्योग को भारी मालसूची के स्तर का सामना करना पड़ रहा है जो 2120 मी.टन से बढ़कर 13663 मी.टन हो गयी है।
- च) उत्पादन प्रक्रिया की प्रकृति ऐसी है कि उत्पादक उसका इष्टतम प्रयोग करना चाहते हैं। इसके फलस्वरूप, चीन के उत्पादक और घरेलू उद्योग दोनों ही अपना उत्पादन बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। संवर्धित आयात वर्तमान परिस्थितियों में बाजार विकृति की चुनौती दे रहे हैं।

छ) चीन के उत्पादकों ने 300 श्रृंखला के उत्पाद (304 ग्रेड के उत्पाद 300 श्रृंखला के उत्पादों का बड़ा अनुपात बनते हैं) का उत्पादन समग्र और संगत दोनों रूपों में बहुत अधिक बढ़ा लिया है। 300 श्रृंखला के उत्पाद का चीनी उत्पादन जो वर्ष 2004 में 0.7 मिलियन मी.टन था बढ़कर वर्ष 2011 में 6.935 मिलियन मी.टन हो गया है।

63. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा अभिव्यक्त क्षति अवबोधन वर्ष 2011 में लगभग 1.4 मिलियन टन के उत्पादन-खपत अंतराल द्वारा प्रदर्शित होता है, जो चीन की घरेलू बाजार में खपत की तुलना में क्षमता और उत्पादन में भी उच्चतर गति के कारण आई है। उन्होंने दावा किया कि चीन में मात्रा में भारी वृद्धि में चीन के उत्पादकों को अपने उत्पाद को भारतीय उत्पादकों की कीमत की तुलना में कम कीमत पर बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा। उपर्युक्त निर्णय में अपीलीय निकाय ने यह धारित किया है कि यह अद्यतन अवधि है जो क्षति विश्लेषण के लिए अतिमहत्वपूर्ण है। पीओआई आकड़ों की विगत अवधि से तुलना करने पर बाजार विकृति की किसी गंभीर चुनौती के दावे को समर्थन नहीं मिलता है। आधार वर्ष के रूप में वर्ष 2009-10 के आंकड़ों पर घरेलू उद्योग द्वारा भरोसा किया जाना भी क्षति विश्लेषण के लिए उपयुक्त नहीं है। तथापि यह देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग के समक्ष उपस्थित कुछ दिक्कते चीन से कम कीमतों के आयात के कारण हो सकती हैं।

64. क्षति के अन्य कारक

(i) नियमावली के अनुबंध में निम्नलिखित प्रावधान है

पैराग्राफ (1) में उल्लिखित निर्धारण तब तक नहीं किया जायेगा जब तक कि ऊंचे में उद्देश्यपरक जांच के आधार पर यह प्रदर्शित नहीं हो जाता है कि संवर्धित वस्तु के संवर्धित पाटित आयातों तथा “बाजार विकृति” अथवा उसकी चुनौती के बीच कारणात्मक संबंध मौजूद है। यदि संवर्धित आयातों के अलावा घरेलू उद्योग को उसी समय कुछ अन्य कारकों से “बाजार विकृति” हो रही है तो इस “बाजार विकृति” के लिए इन संवर्धित आयातों को उत्तरदायी नहीं ठहराया जायेगा। ऐसे मामले में महानिदेशक वह शिकायत पाइनरोधी प्राधिकारी अथवा प्रतिबलनकारी शुल्क प्राधिकारी के पास, जिन्हें वे उपयुक्त समझे, जांच के लिए भेज सकते हैं।

(.) जापान से कतिपय होट रोल्ड स्टील उत्पादों के संबंध में यूएस-पाटनरोथी शुल्क संबंधी निर्णय में अपीलीय निकाय के अनुसार आयातों का क्षति प्रभाव उन सभी कारकों, जिनका घरेलू उद्योग पर प्रभाव है, से अलग करके देखा जाना चाहिए।

(.) उपर्युक्त के आलोक में वह संभावित अन्य कारक, जिन्हें घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है, की निम्नलिखित जांच की गई है-

क) उत्पाद की मांग: भारत में विचाराधीन उत्पाद की मांग में कोई संकुचन नहीं हुआ है। इस उत्पाद की मांग भारत में वर्षों से लगातार बढ़ रही है।

ख) खपत की प्रणाली में परिवर्तन: घरेलू उद्योग द्वारा यह दावा किया गया है कि रिकार्ड में ऐसे कोई ~~प्राप्त~~ उपलब्ध नहीं है कि विचाराधीन उत्पाद की खपत की प्रणाली के संबंध में भारतीय बाजार में कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं हुआ है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने घरेलू उद्योग के इस दावे के विरोध में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है।

ग) व्यापार प्रतिरोधक क्रियाएं तथा विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा: रिकार्ड में ऐसा कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है जिससे यह स्पष्ट होता है कि व्यापार प्रतिबंधक प्रक्रियाओं तथा विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही हो।

घ) प्रौद्योगिकी में विकास : रिकार्ड में कोई साक्ष्य नहीं है जो यह स्पष्ट करता है कि इस उत्पाद की उत्पादन प्रौद्योगिकी में ऐसा कोई बड़ा अंतर नहीं आया है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही हो।

ड.) निर्यात निष्पादन: घरेलू उद्योग को दावाकृति क्षति घरेलू प्रचालनों के कारण हुई है। घरेलू उद्योग ने घरेलू प्रचालनों के लिए क्षति संबंधी सूचना प्रदान कराई है। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा किये गये निर्यातों में भारी वृद्धि हुई है। यह देखा जा सकता है कि (क) घरेलू उद्योग की निर्यात मात्रा में वृद्धि हुई हैं (जो यह स्थापित करती है घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति निर्यातों में संभावित गिरावट के कारण नहीं आई है) और (ख) निर्यातों के संबंध में घरेलू उद्योग की लाभ प्रदायकता गिरावट आयी है, (जो सिद्ध करती है कि निर्यात करना घरेलू उद्योग की अधिमानता नहीं है)

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12
निर्यात (मात्रा)	मी.टन	2,776	6,045	13,098
निर्यात (मूल्य)- सूचीबद्ध		100	252	550

निर्यात लाभ (सूचीबद्ध)	100	22	(81)
------------------------	-----	----	------

(1) इस तर्क के संबंध में कि अभी हाल ही में प्रचालनीकृत 800000 टन स्टेनलेस स्टील की उड़ीसा संयंत्र स्थित क्षमता ने घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाई है, घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि वार्षिक रिपोर्ट में विचाराधीन उत्पाद के न्यून निष्पादन के कारण के रूप में उड़ीसा ऐम्प अप को संदर्भ बनाया जा सकता है परंतु उसका पाठन उस वार्षिक रिपोर्ट के संदर्भ में किया जाना चाहिए जो फिनिसिंग सुविधा को ऐम्प अप करने न कि हॉट रोलिंग सुविधा का उल्लेख करता है। याचिकाकर्ता आपने उड़ीसा स्थित संयंत्र में कई उत्पादों का उत्पादन करता है। याचिकाकर्ता हॉट रोल्ड प्रोडक्ट तथा फिर कोल्ड रोल्ड प्रोडक्ट का उत्पादन करता है। याचिकाकर्ता ने कोल्ड रोल्ड सुविधाओं के संदर्भ में उत्पादन सुविधा बढ़ाने का उल्लेख किया है।

(2) इस तर्क के संबंध में कि भारतीय रूपये के मूल्य द्वास में वृद्धि के कारण विपरीत विनिमय उतार चढ़ाव होने के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा क्षति के संबंध में प्रदान कराई गई जानकारी में विनिमय उतार चढ़ाव के कारण घरेलू उद्योग द्वारा सहन की गई क्षति का उल्लेख नहीं किया गया है।

(3) इस तर्क के संबंध में कि उड़ीसा स्थित संयंत्र की प्रविष्टि ने घरेलू बाजार में क्षति पहुंचाई है, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने दोनों संयंत्रों के बारे में अलग-अलग सूचना प्रस्तुत की है। यह दर्शाता है कि दोनों संयंत्रों को अलग-अलग क्षति हो रही है।

निम्नलिखित तालिका दोनों संयंत्रों का अलग-अलग निष्पादन प्रदर्शित करती है:

दोनों संयंत्र

क्र.सं.	विवरण	मापन की इकाई	2009-10	2010-11	2011-12
1	क्षमता	मी.टन	109,189	114,258	235,347
2	उत्पादन	मी.टन	100,265	98,448	129,900

3	क्षमता उपयोग	%	92	86	55
4	घरेलू बिक्री	मी.टन	44,801	36,772	41,646
5	निर्यात	मी.टन	3,598	9,944	13,098
6	मालसूची	मी.टन	2,120	2,876	13,663
7	बिक्री लागत (सूचीबद्ध)	रु./मी.टन	100	135	150
8	बिक्री कीमत (सूचीबद्ध)	रु./मी.टन	100	128	131
9	लाभ और हानि (सूचीबद्ध)	रु./मी.टन	100	(222)	(726)

हिसार संयंत्र

क्र.सं.	विवरण	मापन की इकाई	2009-10	2010-11	2011-12
1	क्षमता	मी.टन	109189	114258	117,119
2	उत्पादन	मी.टन	100265	98448	105,937
3	क्षमता उपयोग	%	92	86	90
4	घरेलू बिक्री	मी.टन	44,801	36,772	36355
5	निर्यात	मी.टन	3,598	9,944	6,397
6	मालसूची	मी.टन	2,120	2,876	1,692
7	बिक्री लागत (सूचीबद्ध)	रु./मी.टन	100	135	147
8	बिक्री कीमत (सूचीबद्ध)	रु./मी.टन	100	128	130
9	लाभ और हानि (सूचीबद्ध)	रु./मी.टन	100	(222)	(662)

उडीसा संयंत्र

क्र.सं.	विवरण	मापन की इकाई	2011-12
1	क्षमता	मी.टन	118,227
2	उत्पादन	मी.टन	23,964
3	क्षमता उपयोग	%	20
4	घरेलू बिक्री	मी.टन	5,291
5	निर्यात	मी.टन	6,701
6	मालसूची	मी.टन	11,971
7	बिक्री लागत (सूचीबद्ध)	रु./मी.टन	****
8	बिक्री कीमत (सूचीबद्ध)	रु./मी.टन	***
9	लाभ और हानि (सूचीबद्ध)	रु./मी.टन	नाम्नामात्मक

(.) इस तर्क के संबंध में कि बोल अयस्क की उपलब्धता, जो प्रयोग किये गये कर्त्त्व माल का 16 -20 प्रतिशत होती है, का अध्ययन है, यह नोट किया जाता है कि उत्पादन रिकॉर्ड कर्त्त्व भी यह प्रदर्शित नहीं करते हैं कि काष्ठे माल की उपलब्धता न होने के कारण विकृष्टि हुई है।

65. संवर्धित आयात और बाजार विकृति अथवा बाजार विकृति की चुनौती के बीच कारणात्मक संबंध

(.) कोरिया डेयरी संबंधित पैनल ने "कार्य-कारण संबंध" का निर्धारण करने के लिए निम्नलिखित पहुंच निर्धारित की है

"अपने कारणात्मक सम्पर्क का आकलन करने में, हमारा विचार है कि राष्ट्रीय प्राधिकारी को यह विश्लेषण करने और निर्भरण करने की जरूरत होती है कि क्या उद्योग में हुए विकास, जिसपर गंभीर क्षति का प्रदर्शन करने के लिए राष्ट्रीय प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है, संवर्धित आयातों के द्वारा किया गया है। अपने कर्मसुक्षण संबंध का आकलन करने में राष्ट्रीय प्राधिकारी जो उन सभी संबंध कारकों का उल्लेख करके उन परिस्थिति जनक प्रकृति का आकलन करना अपेक्षित होता है जिनका घरेलू उद्योग पर प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त

यदि राष्ट्रीय प्राधिकारी ने कुछ ऐसे कारकों की पहचान कर ली है जो संवर्धित आयातों के अलावा घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहे हैं तो यह सुनिश्चित करेंगे कि इन कारकों द्वारा कारित किसी भी क्षति पर, संवर्धित आयातों द्वारा कारित क्षति के संबंध में विचार नहीं किया गया है।

कारणात्मक संबंध स्थापित करने के लिए कोरिया को यह प्रदर्शित करना पड़ा कि इसके घरेलू उद्योग की क्षति बड़े हुए आयातों के कारण हुई है। दूसरे शब्दों में, कोरिया को यह प्रदर्शित करना पड़ा कि एसएमपीपी के बढ़ते आयातों ने दूध पाउडर और अपरिष्कृत दूध का उत्पादन करने वाले घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाई है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग की स्थिति का विश्लेषण करने के पश्चात कोरिया ने प्राधिकारी ने अच्युत कारकों द्वारा कारित की गई क्षति के लिए संवर्धित आयातों को उत्तरदायी नहीं ठहराया है।

(1) कार्य-कारण संबंध का निर्धारण करने के प्रयोजन के लिए उद्देश्यपरक एवं प्रभाणजनक प्रवृत्ति के उन सभी कारकों का मूल्यांकन किया गया जिनका घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। इस उत्पाद की बिक्री आयातों की तुलना/ प्रतिस्पर्धा में बड़े पैमाने पर की जाती है। आयातों की उत्तराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत कम है। यह दावा किया जाता है कि घरेलू उद्योग गैर लाभकारी कीमतें प्रस्तुत करने को मजबूर किया गया। यह देखा जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की गई वृद्धि की दर से अधिक है। अतः, इस बात के संकेत है कि घरेलू उद्योग चीन से होने वाले निर्यातों के द्वारा प्रस्तुत की जा रही न्यूनतम कीमतों के कारण नुकसान उठा रहा है। घरेलू उद्योग को लाभ और निवेश पर अर्जन ने इतनी अधिक गिरावट का सामना करना पड़ा कि घरेलू उद्योग को लाभ की स्थिति से भारी वित्तीय घटा सहन करना पड़ा तथा निवेश पर सकारात्मक अर्जन के स्थान पर अब निवेश पर नकासात्मक अर्जन हो रहा है। घरेलू उद्योग का निष्पादन प्रदर्शित करता है कि विचाराधीन उत्पाद की मांग में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आयी है और आयातों में वृद्धि छूई है। अतः यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग को क्षति संवर्धित आयातों के द्वारा ही पहुंचाई गई है।

66. सार्वजनिक हित

(1) रक्षोपाय संबंधी करार ने निम्नलिखित उल्लेख किया जाता है

“कोई सदस्य रक्षोपाय शुल्क का अनुप्रयोग उस सदस्य के सक्षम प्राधिकारी द्वारा पहले से ही स्थित प्रक्रियाओं का अनुकरण करके जांच द्वारा तथा उस जांच को गाट 1994 के अनुच्छेद-10 के अनुपालन में उस जांच को सार्वजनिक करके ही कर सकता है। इस जांच में सभी

हितबद्ध पक्षकारों को सार्वजनिक नोटिस दिया जाना, और सार्वजनिक सुनवाई अथवा अन्य समुचित साधनों के प्रयोग का अवसर दिया जाना शामिल है जिसमें आयातक, निर्यातक और अन्य हितबद्ध पक्षकार साक्ष्य तथा अपने विचार, जिसमें अन्य पक्षकारों द्वारा किये गये प्रस्तुतिकरणों का प्रत्युत्तर देने का अवसर तथा अन्य बातों के साथ अपने विचार व्यक्त करने का अवसर भी शामिल है कि क्या रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण करना जनहित में होगा। सक्षम प्राधिकारी मुद्दे से संबंधित सभी तथ्यों तथा विधियों का अनुकरण करके किये गये अपने क्षिक्षणों तथा कारण युक्त अपने निर्णयों की रिपोर्ट सार्वजनिक रूप से प्रकाशित करेंगे”।

(1) अर्थव्यवस्था में कभी-कभार विभिन्न आर्थिक पक्षकारों के अलग-अलग और प्रतिस्पर्धी हित होते हैं। रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण करना विभिन्न पक्षकारों को अलग-अलग ढंग से प्रभावित कर सकता है और यह प्रभाव हमेशा सभी आर्थिक पक्षकारों के लिए, उस स्थिति में जब उनके हित परस्पर प्रतिस्पर्धी होते हैं, उपयुक्त ही नहीं हो सकता है। अतः उपलब्ध आव्वक्षसी के आधार पर विभिन्न आर्थिक पक्षकार समूहों के हितों की समीक्षा की गई है।

(2) कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण करना जनहित में नहीं होगा। इस मुद्दे की जांच की गई है। इस संबंध में, परिवर्ती रक्षोपाय कानून के प्रमुख उद्देश्य को ध्यान में रखना अतिमहत्वपूर्ण है, जो है चीन से संबंधित आयातों के कमरण घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का निराकरण करना। स्वस्थ्य एवं प्रतिस्पर्धी उद्योग बनाना सभी के हित में होता है यह स्पष्ट है कि यदि स्क्षोपाय साधन नहीं अपनाये गये तो घरेलू उद्योग की कीमतें और बाजार हिस्सा दोनों में और अधिक पतन होगा इसके परिणाम स्वरूप उस सीमा तक वित्तीय क्षति पहुंचेगी जो अपूरणीय होगी और उसके परिणामस्वरूप बाजार में कमी आयेगी तथा घरेलू बाजार प्रतिस्पर्धी बनाये रखने के लिए कार्यनीतिक और आर्थिक हितों को क्षति पहुंचेगी। रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण करने से घरेलू उद्योग प्रतिस्पर्धी बना रहेगा और साथ ही उपयोगकर्ताओं/क्रेताओं को अपने जरुरी सामान के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध होगा और वह भी प्रतिस्पर्धी कीमतों पर।

(3) घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि सार्वजनिक हित की जांच उत्पादकों, उपभोक्ताओं और आम जनता के हितों को ध्यान में रखकर की जानी चाहिए। यह उपाय घरेलू उद्योग को चीन से बढ़ते आयातों के कारण होने वाली क्षति से बचायेगा। घरेलू उद्योग काफी क्षति सहन कर रहा है और रक्षोपाय शुल्क अधिरोपण करने से घरेलू उद्योग को विचाराधीन उत्पाद के संबंध में होने वाली क्षति से बचाया जा सकता है। रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण करना घरेलू उपभोक्ताओं के हित में होगा क्योंकि यह उपभोक्ताओं के दीर्घायधि हित में होगा कि भारतीय घरेलू ? लोग इतना प्रतिस्पर्धी बने जो उपभोक्ताओं को विचाराधीन उत्पाद की आपूर्ति करने तथा विद्शी उत्पादकों से प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम हो। यह केवल तभी संभव है जब घरेलू संबंधित आयातों से हुई क्षति से उधर सके। सशक्त प्रतिस्पर्धी घरेलू उद्योग हेतु

अंततः आम आदमी के हित में होता है परंतु यह तब संभव नहीं हो पायेगा जब बढ़ते आयातों के परिणाम स्वरूप घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति जारी रहने दी जाए।

(1) घरेलू उद्योग ने यह भी तर्क दिया है कि यदि संवर्धित आयातों पर रोक नहीं लगाई गई तो घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति बनी रहेगी और इसमें अधिक वृद्धि भी होगी। यदि घरेलू उद्योग का पतन ऐसी स्थिति तक होने की अनुमति दी जाए कि यह अपना काम ही न कर सके तो भारतीय उपभोक्ता लगभग पूरी तरह से विदेशी उत्पादकों पर निर्भर हो जायेगे।

(2) घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण करना, इसके डाउन स्ट्रीम उद्योग के दावे का परिमाणीकरण करने के आधार पर, सार्वजनिक हित में होगा। घरेलू उद्योग ने निष्कर्ष निकाला है कि प्रस्तावित रक्षोपाय शुल्क के अधिरोपण का उपभोक्ता पर प्रभाव बहुत ज्यादा नहीं पड़ेगा यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के यह परिमाणीकृत दावों को विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा नकारा नहीं गया है।

(3) यह नोट किया जाता है कि यह तर्क देते समय कि रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण करना सार्वजनिक हित में नहीं होगा, यह नोट किया जाता है कि हितबद्ध पक्षकारों ने इस संबंध में कोई भी परिमाणीकृत दावा प्रस्तुत नहीं किया है।

(4) यह भी नोट किया जाता है कि इस विचाराधीन उत्पाद के अन्य स्रोतों से आयातों पर पाटन रोधी शुल्क पहले से ही अधिरोपित है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने यह प्रदर्शित नहीं किया है कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से बाजार में भारी विकृति उत्पन्न हुई है। उपभोक्ताओं ने कहीं यह प्रदर्शित नहीं किया है कि रक्षोपाय शुल्क का प्रभाव उपभोक्ताओं के लिए असहनीय होगा। साथ ही घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि चीन के बाजार हिस्से पर विचार करते हुए प्रस्तावित रक्षोपाय शुल्क का प्रभाव उपभोक्ता उद्योग पर बहुत कम पड़ेगा। घरेलू उद्योग ने आगे उल्लेख किया है कि वह प्रस्तावित रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण करने के पश्चात अपनी कीमतों में वृद्धि नहीं करेगी। सार्वजनिक सुनवाई के दौरान ही किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने पहले से प्रचलित 20 प्रतिशत यथामूल्य अनंतिम रक्षोपाय शुल्क के प्रतिरोधी/ अत्यधिक प्रभावों का कोई वर्णन नहीं किया है अथवा यह उल्लेख नहीं किया है कि इस अधिरोपण से बाजार विकृति हुई है अथवा उपभोक्ता उद्योग पर कोई बड़ा प्रभाव पड़ा है। इसके विपरीत, अनंतिम रक्षोपाय शुल्क के अधिरोपण के विपरीत संभावित प्रभावों के संबंध में किसी भी हितबद्ध/ प्रयोक्ता पक्षकार द्वारा उल्लेख नहीं किया गया जो यह संपुष्ट करता है कि मौजूदा रक्षोपाय शुल्क की समग्र घटनाएं बहुत कम हैं।

(1) घरेलू उद्योग के दावे के अनुसार, उपभोक्ता प्रोफाइल और प्रस्तावित रक्षोपाय थुल्क का उपभोक्ता उद्योग पर पड़ने वाले प्रभाव तथा अंतिम उत्पाद की त्यक्ति पर प्रासंगिक प्रभाव महत्वहीन है जैसाकि विस्तृतिःखित तालिका से देखा जा सकता है।

क्र.सं.	अनुप्रयोग सेक्टर	304 श्रृंखला का कुल बिक्री में % हिस्सा
1	विद्युत सेक्टर	
क	कोयला आधारित	43%
ख	नाभिकीय प्रतिष्ठापन	
2	एबीसी क्षेत्र	
क	इलेक्ट्रो / एस्केलेटर	1.50%
ख	आर्किटेक्चर, भवन एवं निर्माण सेक्टर	
3	प्रक्रिया	
क	पेट्रोलियम और पेट्रोरसायन	
ख	पैंट शॉप	43%
ग	उर्वरक	
घ	अन्य प्रक्रिया तथा रसायन (फार्मा और कागज सहित)	
4	खाद्य प्रसंस्करण	6%
5	जैव ईंधन	2.50%
6	दूध उत्पादन	2.50%
7	परिवहन (आटो रेलवे आदि)	1.50%

क्र.सं.	अनुप्रयोग सेक्टर	304 शूखला का कुल बिल्डिंग में % हिस्सा
1	विद्युत सेक्टर	
क	कोयला आधारित	0.01%
ख	नाभिकीय प्रतिष्ठापन	0.02%
2	एंबीसी क्षेत्र	
क	इलेक्ट्रो एस्केलेटर	0.24%
ख	आर्किटेक्चर, भवन एवं निर्माण सेक्टर	0.04%
3	प्रक्रिया	
क	पेट्रोलियम और पेट्रोरसायन	0.20%
ख	पेंट शॉप	0.20%
ग	उर्वरक	0.20%
घ	अन्य प्रक्रिया तथा रसायन (फार्मा और कागज सहित)	0.20%
4	खाद्य प्रसंस्करण	0.08%
5	जैव ईधन	0.08%
6	दूध उत्पादन	0.32%
7	परिवहन (आटो रेलवे आदि)	0.08%

यह नोट किया जाता है कि प्रस्तावित रक्षोपाय शुल्क का उपभोक्ताओं पर प्रभाव नगण्य रहेगा तथा यह वास्तविक नहीं होगा।

67. अन्य मुद्दे

क. प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत का उल्लंधन: जहां तक इस तर्क का संबंध है कि विचाराधीन उत्पाद को प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंधन करते हुए हितबद्ध पक्षकारों को उसकी सूचना दिये बिना संशोधित कर दिया गया था, यह नोट किया जाता है कि जांच शुरुआत का नोटिस विचाराधीन उत्पाद को “सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के सीमाशुल्क उपशीर्षक सं.721911, 721912, 721913, 721914, 721921, 721922, 721923, 721924, 722011, 722012 के अंतर्गत वर्गीकृत (सभी चौड़ाई की) 300 श्रृंखला की और न्यूनतम 6 प्रतिशत के निकिल (एन आई) संघटक, मालीब्लेनम, टाइटैनियम जैसे अन्य अलायिंग तत्वों की उपस्थिति युक्त अथवा उसके बिना अनिवार्यतः क्रोमियम युक्त सभी आस्टीनिटिक ग्रेडों के स्टेनलेस स्टील के हाट रोल्ड फ्लैट उत्पादों” के रूप में भानते हुए जारी किया गया था। इस जांच शुरुआत नोटिस के प्रत्युत्तर में यह पाया गया कि कई हितबद्ध पक्षकारों ने यह मुद्दा उठाया कि उत्पाद के दायरे को कई पहलुओं के रूप में त्रुटिपूर्ण बनाया गया तथा हॉट रोल्ड स्टेनलेस स्टील 300 श्रृंखला के फ्लैट उत्पादों की सभी श्रेणी की जांच करना और उसपर रक्षोपाय शुल्क अधिरोपित करना इस सेक्टर में व्यापार के समान्य अनुक्रम में वास्तविक स्थिति को प्रदर्शित नहीं करता है। चीन की सरकार, मैसर्स चीन आयरन एंड स्टील एसोसिएशन, मैसर्स रामानी स्टील हाऊस, मुम्बई आदि सहित हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रस्तुतिकरणों और उन प्रस्तुतिकरणों पर घरेलू उद्योग के प्रत्युत्तरों की संवीक्षा करने पर यह नोट किया गया कि विचाराधीन उत्पाद का दायरा बहुत व्यापक है और पर्याप्त एवं समूचित क्षति विश्लेषण के प्रयोजन के लिए इसे विशिष्ट ग्रेड में संशोधित करना/ संकीर्ण करना अपेक्षित है। अतः, उपलब्ध रिकार्ड, हितबद्ध पक्षकारों और घरेलू उद्योग द्वारा किये गये प्रस्तुतिकरणों के आधार पर विचाराधीन उत्पाद के दायरे को 300 श्रृंखला से प्रतिबंधित /संकीर्ण बनाकर 304 ग्रेड में परिवर्तित कर दिया गया। अतः, यह देखा जाता है कि विचाराधीन उत्पाद का दायरा हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गये प्रस्तुतिकरणों को ध्यान में रखते हुए परिवर्तित कर दिया गया और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत का किसी भी तरह से उल्लंधन नहीं किया गया।

ख. उत्पाद के दायरे में परिवर्तन करने से पहले सुनवाई का अवसर: जहां तक हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क का संबंध है कि 304 ग्रेड के आंकड़ों पर टिप्पणी करने मौका नहीं दिया गया, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग से कहा गया कि वह 304 ग्रेड के लिए आंकड़े अलग से प्रस्तुत करें। जिन्हें घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत कर दिया और उन्हें प्रारंभिक जांच परिणाम जारी करने से पहले सार्वजनिक फाइल में रखा गया। तथापि किसी हितबद्ध पक्षकार ने उनपर कोई टिप्पणी नहीं की। इसके अतिरिक्त, केवल 304 ग्रेड के आंकड़ों के आधार पर

प्रारंभिक निष्कर्ष जारी किये गये। महानिदेशक ने दो मौखिक सुनवाईयों का आयोजन किया जिनमें घरेलू उद्योग द्वारा केवल 304 ग्रेड के आकड़ों के आधार पर ही प्रस्तुतिकरण किया गया। इसके अतिरिक्त हितबद्ध पक्षकारों को संशोधित विचाराधीन उत्पाद के दायरे से संबंधित आंकड़ों पर टिप्पणी करने और अपने हितों की रक्षा करने के कई अवसर प्रदान किये गये।

ग. उत्पाद के दायरे में पुनः संशोधन: इस तर्क के संबंध में कि विचाराधीन उत्पाद में पुनः संशोधन किया जाना चाहिए क्योंकि गैर 304 ग्रेड में भारी संख्या में अन्य उत्पाद भी रक्षोपाय शुल्क के अंतर्गत आ जायेगे, यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद सुपरिभाषित है। यह देखा जाता है कि प्रारंभिक निष्कर्ष में श्रेणीबद्ध रूप से यह उल्लेख किया गया था कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे में एएसटीएम 304 ग्रेड (304 ग्रेड के सभी भेदों सहित), इसके सभी भेदों और अन्य मानकों में समनुरूप विक्षेपों सहित, शामिल है। यदि आयात किया जाने वाला उत्पाद इस उत्पाद विवरण में उल्लिखित किसी भी एक प्रक्रिया को पूरा नहीं करता है तो उसपर रक्षोपाय शुल्क किसी हाल में लागू नहीं होगा।

घ. इस तर्क के संबंध में कि अनंतिम शुल्क का अधिरोपण करने के लिए प्रारंभिक निष्कर्ष आपातकालीन स्थिति से नहीं निपटते हैं, यह नोट किया जाता है कि पहले जारी की गई प्रारंभिक जांच परिणाम के पैराग्राफ-2, 3 और पैराग्राफ 50 उन विशिष्ट परिस्थितियों का उल्लेख करता है जिसमें अनंतिम शुल्क का अधिरोपण करने की जरूरत को स्थापित किया गया है और उन्हें न्यायोचित ठहराया गया है। महानिदेशक की सिफारिशों को रक्षोपाय बोर्ड ने स्वीकार किया है तथा केन्द्रीय सरकार ने अंतरिम उपाय के रूप में उसका अधिरोपण किया है।

इ. भारी आकार का आयात करके निवारण: इस तर्क के संबंध में कि अधिक चौड़ाई वाले क्वाइलों की छोटे आकार के क्वाइलों में कटाई करना व्यवहार्य नहीं है, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान कराया गया साक्ष्य स्पष्टतः यह दर्शाता है कि कई ऐसी एकाकी कंपनियां हैं जो केवल कटाई और सिलिंटिंग कार्यों में लगी हुई हैं। इसके अतिरिक्त, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने विभिन्न चौड़ाई के उत्पादों के लिए उत्पादन लागत में महत्वपूर्ण अंतर को रिपोर्ट नहीं किया है। यह भी नोट किया जाता है कि इस उत्पाद की कटाई प्रासंगिक प्रयोग के लिए वांछित आकार और चौड़ाई में की जाती है। हर हाल में उत्पाद के दायरे को घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित चौड़ाई तक प्रतिबंधित कर दिया गया है और याचिकाकर्ता के उस तर्क को स्वीकार नहीं किया गया है कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे में उस चौड़ाई तक वृद्धि की जाए जिस तक याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादन नहीं किया जाता है।

च. गुणवत्तापूर्ण उत्पाद: जहां तक इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उत्पादक उच्च गुणवत्तापूर्ण स्टेनलेस स्टील की मांग को पूरा करने में असफल रहा है, यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन करने के लिए घरेलू उद्योग की क्षमता देश में विचाराधीन उत्पाद की मांग की तुलना में बहुत अधिक है। वस्तु का उत्पादन राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय मानकों को पूरा करके किया जाता है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु तथा चीन से आयातित वस्तु समान उत्पाद है और दोनों ही उपभोक्ताओं द्वारा अपेक्षित समान मानकों को पूरा करते हैं। तथ्यपरक रूप से यह सही नहीं है कि भारतीय उद्योग उच्च गुणवत्ता वाले स्टेनलेस स्टील के उत्पादों की मांग को पूरा करने में असमर्थ है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग पिछले कई वर्षों से हिसार स्थित अपने संयंत्र से इस वस्तु का उत्पादन और आपूर्ति करता रहा है।

छ. संस्थापित क्षमता: घरेलू उद्योग द्वारा क्षमता के संबंध में विभिन्न जांचकर्ता प्राधिकारियों के समक्ष किये गये झूठे दावों के संबंध में यह नोट किया जाता है कि वर्तमान मामले में इस निदेशालय ने उत्पाद की मैट्टिंग क्षमता और उत्पाद कर रिकार्डों के अनुसार उत्पादन क्षमता पर विचार किया है। इस निदेशालय के लिए ऐसा कोई अवसर नहीं है कि पाटनरोधी निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा इसकी क्षमताओं को दिये गये उपचार के मुद्दे में हस्तक्षेप करें।

ज. जहां तक वार्षिक रिपोर्टों के संबंध में इस विवरण का संबंध है, कि संवर्धित क्षमता को स्थिर नहीं किया गया, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने यह स्पष्ट नहीं किया है कि वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित दस्तावेजों का विवरण फिनिशिंग लाइनों अर्थात कोल्ड रोलिंग सुविधाओं के संबंध में है और यह हॉट रोलिंग सुविधाओं से संबंधित नहीं है। विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन हॉट रोलिंग सुविधाओं से किया जाता है। इसके अतिरिक्त उत्पाद कर के रिकार्ड के अनुरूप उत्पादन पर विचार किया गया है जो विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन को स्पष्टतः प्रदर्शित करता है।

झ. उत्पाद के दायरे में परिवर्तन करने के उपरांत प्रमुख पैरामीटरों की स्थिति: जहां तक इस तर्क का संबंध है कि शुद्धिपत्र जारी करते समय कई प्रमुख पैरामीटरों को ध्यान में नहीं रखा गया है, यह नोट किया जाता है कि 1605 से अधिक की चौड़ाई वाले आयात नगण्य हैं और इसके अंतर्गत संगत शीषकों में यथा उल्लिखित प्रतिबंधित चौड़ाई वाले उत्पादों के संबंध में प्रस्तुत आकड़ों पर विचार करने के पश्चात केवल मामूली सा अंतर ही प्रतीत होता है। अतः, यह निष्कर्ष निकाला गया है कि प्रारंभिक निष्कर्षों में दिखे गये आंकड़ों को संशोधित करना अनिवार्य नहीं है। किसी मामले में प्रासंगिक निष्कर्ष वही बने रहे।

ज. इस तर्क के संबंध में कि केवल 12 प्रतिशत मूल्यहास अथवा आनुपातिक मूल्यहास जैसा कि तुलनपत्र में दर्शाया गया है, की ही अद्वितीय दी जानी चाहिए, यह नोट किया जाएगा।

है कि बिक्री और लागत के आंकड़ों को कपनी अधिनियम के अनुसार तैयार किये गये तुलनपत्र और रिकार्डों से लिया जाता है जो कि जीएएपी के संगत व्यवस्था है।

ट. दोहरा व्यापार उपचार: इस तर्के के संबंध में कि याचिकाकर्ता व्यापार उपचार कार्रवाई का प्रयोग करने का आदी है, यह नोट किया जाता है कि याचिका की जांच रक्षोपाय विधि के अनुसार की गई, जो, नियमानुसार किसी भी उद्योग को राहत प्राप्त करने से तब तक प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता है जब तक वह विधि के अंतर्गत निर्धारित शर्तों को पूरा करता है।

68. जांच की अवधि के उपरांत के आंकड़ों की जांच

उपर्युक्त परिस्थितियों में घरेलू उद्योग को संवर्धित क्षति की संभावना के बारे में स्पष्ट निष्कर्ष निकालने के लिए जांच की अवधि के पश्चात अर्थात् 2012-13 (दिनांक 1.4.2012 से 31.12.2012 तक) की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया। घरेलू उद्योग ने अपने दिनांक 24 मई, 2013 के पत्र के तहत कुछ उन आर्थिक पैरामीटरों के संबंध में आंकड़े प्रस्तुत किये जिन्हें उन्होंने चीन से आयातित “विचाराधीन उत्पाद” के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करने के लिए डीजीएडी के समक्ष प्रस्तुत अपनी याचिका में दायर किये थे। उपर्युक्त आंकड़ों संवीक्षा करने के उपरांत यह नोट किया जाता है कि पीओआई अवधि के उपरांत चीन से आयातों तथा समग्र आयातों में इतनी अधिक गिरावट आयी कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में 4 प्रतिशत की कमी आ गयी जबकि समसामयिक अवधि डॉ घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में 9 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। उत्पादन, निर्यात और माल सूची के स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ तथा घरेलू बिक्री में तीव्र वृद्धि हुई। तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में गिरावट आयी है, इसलिए, उपर्युक्त के आलोक जैसे चीन से आयातों में वृद्धि के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है।

69. निष्कर्ष

उपर्युक्त जांच तथा विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि

(क) चीन से आयातों में जांच की अवधि में आधार वर्ष की तुलना में समग्र रूप से भारी वृद्धि हुई है। तथापि, यह वृद्धि इतनी तीव्र नहीं है जितनी की यह तत्काल पूर्व के वर्ष में थी। तथापि यह वृद्धि बहुत महत्वपूर्ण है, इस मामले में यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि घरेलू

उत्पादन की तुलना में यह वृद्धि लगभग स्थिर बनी रही और जब कुल खपत के संबंध में तुलना की गई तो यह वृद्धि बहुत कम महत्वपूर्ण रही। अतः यह भी निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि चीन से आयातों में संपूर्ण जांच अवधि में अत्यधिक एवं अभिनव वृद्धि हुई है, तथापि यह नोट किया जाता है कि चीन से आयातों में इतनी वृद्धि हुई कि उससे बाजार विकृति अथवा बाजार विकृति की चुनौती उत्पन्न हो गयी है।

(ख) घरेलू उद्योग यह प्रदर्शित करने में यह सक्षम नहीं हुआ कि विचाराधीन उत्पाद के लिए बाजार में हुआ विकास अप्रत्याशित था। इसके विपरीत, उनके द्वारा प्रदान करायी गई जानकारी उनके मामले का समर्थन भी नहीं करती है जैसा कि उपर्युक्त संगत पैराग्राफों में विस्तृत जांच की गई है।

(ग) घरेलू उद्योग बाजार हिस्सा, उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग कारकों के कारण हुई बाजार विकृति अथवा गंभीर क्षति को प्रदर्शित करने में सक्षम नहीं हुआ है। तथापि, घरेलू उद्योग को लगाई गई पूंजी पर ऋणात्मक अर्जन के कारण वास्तव में नुकसान हो रहा है। चूंकि बढ़ते आयातों ने देश में मांग को पर्याप्त रूप से प्रभावित किया है, इसलिए घरेलू उद्योग को बिक्री तथा बढ़ते मालसूची स्तर में समस्याओं का सामना करना पड़ा है। इससे चीन से बढ़ते आयातों और जांच की अवधि के दौरान इस सीमा तक कारित बाजार विकृति के बीच कारणात्मक संबंध स्थापित होता है।

(घ) निष्पक्ष निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए जांच की अवधि के पश्चात की अवधि के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर यह पाया जाता है कि घरेलू उद्योग की स्थिति में बाजार हिस्सा, उत्पादन, बिक्री, निर्यात और मालसूची जैसे कारकों के संबंध में सुधार हुआ है। यहां तक कि निर्यातों में भी गिरावट आयी है। अतः घरेलू उद्योग को जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में बाजार विकृति अथवा बाजार विकृति की चुनौती संबंधी चिंता का कोई ऐसा कारण नहीं है जिससे उन्हें और अधिक संरक्षण अपेक्षित हो।

(ङ.) घरेलू उद्योग की आधारभूत समस्या न्यून कीमत प्राप्त के संदर्भ में है जो चीन के निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत न्यून कीमत के कारण हो सकती है। तथापि, घरेलू उद्योग ने निष्कर्षात्मक तुलनात्मक विश्लेषण करने के लिए कीमत के संबंध में पर्याप्त विवरण शायद इसलिए नहीं दिया है कि यह सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम की धारा 8ग के अंतर्गत एक जांच है।

सिफारिशें

उपर्युक्त विस्तृत चर्चा तथा किये गये निष्कर्षों के आलोक में यह सिफारिश की जाती है कि सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम की धारा 8ग में दी गयी शर्तों के अनुसार अनंतिम शुल्क द्वारा पहले से कवर की गई अवधि के बाद किसी अन्य शुल्क की सिफारिश करने का कोई सुदृढ़ आधार नहीं है। इसलिए, अनंतिम रूप से अधिरोपित शुल्क की संपुष्टि की जाती है और चीन से (अनंतिम निष्कर्षों/शुद्धिपत्रों में दिये गये के अनुरूप) विचाराधीन उत्पाद के सभी आयातों पर 4 जनवरी, 2013 से प्रारंभ करके 22 जुलाई, 2013 तक (दोनों दिनों को शामिल करते हुए) 200 दिनों की अवधि के लिए विस्तृत परिकलनों के अनुरूप अंतिम शुल्क 20 प्रतिशत यथामूल्य की दर से अधिरोपित करने की सिफारिश की जाती है।

[फा. सं. डी-22011/06/2012/पार्ट 2]

जी. एस. सरना, महानिदेशक

DIRECTORATE GENERAL OF SAFEGUARDS

(Customs and Central Excise)

NOTIFICATION

New Delhi, the 25th May, 2013

Sub : Safeguard investigation concerning imports of Hot Rolled Flat products of Stainless Steel of 304 grade into India from China PR- Final findings-Reg

G.S.R. 338(E).—

A. Procedure

1. An application had been filed before me under Rule 5 of the Custom Tariff (Transitional Product Specific Safeguard Duty)Rules, 2002 by M/s. Jindal Stainless Ltd. 12,Bhikaji Cama Place, New Delhi:-110066 for imposition of Safeguard Duty on imports of "Hot Rolled Flat Products of Stainless Steel of 300 series" to protect the domestic producers of "Hot Rolled Flat Products of Stainless Steel of 300 series" against market disruption and threat of market disruption caused by the increased imports of "Hot Rolled Flat Products of Stainless Steel of 300 series" into India from PR China.
2. Having satisfied that the requirements of Rule 5 were met with, safeguard investigation against imports of Hot Rolled Flat Products of Stainless Steel of 300 series from China PR was initiated vide Notice of Initiation dated 26th June, 2012 and published in the Gazette of India, Extraordinary on the same day.
3. A copy of the Notice of Initiation dated 26th June, 2012 along with copy of non-confidential version of the application filed by the domestic industry was forwarded to the Central Government in the Ministry dealing with Commerce and other Ministries concerned, Govt. of China PR through their embassy in New Delhi and other interested parties listed below in accordance with Rule 6(2) & 6(3) of the Safeguard Rules'02:

Domestic Producers

- a. M/s. Jindal Stainless Ltd. 12,Bhikaji Cama Place, New Delhi:-110066
- b. Steel Authority Of India Limited, Ispat Bhawan, Lodi Road, New Delhi - 110003
- c. Shah Alloys , Shah Alloys Corporate House Sola-Kalol road, Santej Ta. Kalol, Dist. Gandhinagar, 382721 Gujarat.

Importers

- a. Ratnemani Metals and Tubes & Survey Survey No. 474 Village Bhimasar Taanjar, Nr. Ghandhidham Distt. Kutch Pin-370240
- b. Bhandari Foils & Tubes Ltd Plot No. D1-D4, Phase I INDL, Area AB Road Dewas (M.P)
- c. Prakesh Steelage Ltd. Plot No. 26 Sector KWC, Kalamboli, Navi Mumbai Maharashtra
- d. Rajendra Mechanical Industries Ltd 11, Cama Industrial Estate Goregaon East Mumbai
- e. Phoenix Foils Pvt. Ltd. Plot No. 3, Expansion Area, New GIDC, Umbergao, Distt Valsad, Gujarat
- f. Domet Trading Pvt. Ltd Plot No. 1867, Road No. 25, KWC Steel Ware Housing Complex Kalamboli, Maharashtra
- g. Sangeeta Metal (India) 26/24, 68/1, Ground Floor, Sindhi Lane, Mumbai
- h. Ramani Steel House 65/73, CP Tank Road, Mumbai
- i. Nishant Infinn Pvt. Ltd 7, Taldhwaj Bhuvan, 1st Floor, Off No. 1, 3rd Panjrapole Lane, Mumbai
- j. A.C. Steel Sgop Laheri Building Ground Floor 282, S.V Road, Corner of 5th Khatwadi Lane, Mumbai
- k. Quality Foils (India) Pvt. Ltd. 3, Industrial Development colony Hisar, Haryana

Exporters

- a. Taiyuan Iron and Steel (Group) Co. Ltd. No. 2, Jiancaoping Taiyuan, Shanxi 30003, China.
- b. Lianzhong Stainless Steel Corporation No 1, Lianguang Road, East Section, Economic Technology Development Zone Guangzhou, 510760 China
- c. Baosteel Tower, 370 Pudian Road, Shanghai, 200122 China.
- d. Jiuquan Iron and Steel (Group) Co. Ltd. No 12 Xiongguan Dong Road, Jiayuguan, Gansu.
- e. Zhangjiagang Pohang Stainless Steel Co. Ltd. Daxin Riverside Road, Zhangjiagang City Jiangsu Province, China.

Associations:-

- a. Process Plant and Machinery Association of India (PPMA) 002 Loha Bhavan, 91/93, PD Mello Road, Masjid (E) Mumbai-400009, India
- b. All India Stainless Steel Industries Association (AISSIA) 302, Arun Chambers, Madan Mohan Malviya Road, Mumbai, Maharashtra, -400034, India
- c. Stainless Steel Exporters Welfare Association PD-4A, Pritampura, Delhi-110088 India
- d. M/s The Tamil Nadu Stainless Steel Merchants and Manufacturers Association, 13, Raghunayakulu street, 2nd Floor, Park Town, Chennai:-600003
4. Questionnaires were sent to the known exporters from China PR, known importers/users in India and other interested parties as per the information available including the Govt. of China PR with request to make their views known in writing within 30 days of the notice of Initiation.
5. The Notice of Initiation dispatched to (a) M/s Sangeeta Metal (India), 26/24, 68/1(F/H) Ground Floor, Sindhi Lane, Mumbai (b) Taiyuan Iron and Steel (Group) Co. Ltd. No. 2, Jiancaoping Taiyuan, Shanxi 30003, China and (c) Lianzhong Stainless Steel Corporation No. 1, Lianguang Road, East Section, Economic Technology Development Zone, Guangzhou, 510760 China have been received back as returned undelivered with the remarks incomplete address or left w/o address by the postal authorities. The copies of the returned notices were then placed on the notice board of the Directorate.
6. Request to consider them as interested parties were received from China Iron and Steel Association (CISA), China, Ministry of Commerce, GOC, China and The Tamil Nadu Stainless Steel Merchants and Manufacturers Association. All the requests were accepted.
7. The information presented by the applicant was verified to the extent possible, by onsite visits to the plants of the domestic producers. The non confidential version of verification report is kept in the public file.
8. The following parties have submitted their submission in response to Questionnaires sent by this Directorate.
 - a. M/s Remi Edelstahl Tubulars Ltd. Mumbai

- b. M/s Ramani Steel House, Mumbai
- c. M/s Fair Trade Practices, Advocates & **legal consultants** (on behalf of M/s The Tamil Nadu Stainless Steel Merchants and Manufacturers Association)
- d. M/s Steel Authority of India Limited
- e. Shri Rajeev Jain behalf of Bureau of Fair Trade, Ministry of Commerce, Government of People's Republic of China PR and China Iron and Steel Association, China
- f. Shri A.K.Gupta, TPM Consultants on behalf of M/s JSL Stainless Ltd.
- g. M/s Lakshmi Kumaran & Sridharan on behalf of M/s All India Stainless Steel Importers Association.

9. The non-confidential information received or acquired from the interested parties including domestic industry were kept in public file for inspection and filing further comments on the views of one interested party by the other interested parties. All the views have already been taken into account in making appropriate determination in the Preliminary Findings.

10. It is seen that the Notice of Initiation has been issued by considering the product under investigation as "Hot Rolled Flat Products of Stainless Steel of 300 series (of all widths) and encompassing all austenitic grades having minimum Nickel (Ni) content of 6%, compulsorily containing chromium with or without the presence of other alloying elements like molybdenum, titanium etc." classified under Customs sub-heading no. 721911, 721912, 721913, 721914, 721921, 721922, 721923, 721924, 722011, 722012 of the Customs Tariff Act, 1975". In response to this initiation it is found that several interested parties have raised the issue that the scope of the products has been flawed in many aspects of the facts and that to investigate and impose safeguard measures on whole range of 300 series of flat products of hot rolled stainless steel do not reflect the actual situation of the ordinary course of trade in the sector. On scrutiny of the submissions made by the interested parties including Govt. of China, M/s China Iron & Steel Association, M/s Ramani Steel House, Mumbai etc. and the response of the Domestic Industry to the said submissions, it was inferred that the scope of the product under consideration is large and it required modifying/narrowing down to a particular grade for the purpose of adequate and appropriate injury analysis. Considering that each consumer requires a specific grade of Hot Rolled Stainless Steel product, consumers of 304 grade products cannot consume non-304 grade product, the surge in imports is markedly different in respect of 304 grade and non- 304 grade products, performance of the domestic industry is markedly of the product under consideration to include only 304 grade products.

11. Accordingly, based on the available records, submissions of the interested parties and the DI, the scope of the product under consideration was therefore restricted/narrowed and Provisional Specific Safeguard Duty for 200 days at the rate of 20% ad valorem was recommended on import of "Hot Rolled Flat products of Stainless Steel containing chromium with or without the presence of other alloying elements like molybdenum, titanium etc., falling under sub-heading no. 72191111, 72191112, 72191190, 72191200, 72191300, 72191400, 72192111, 72192112, 72192121, 72192122, 72192131, 72192132, 72192141, 72192142, 72192190, 72192211, 72192212, 72192219, 72192291, 72192292, 72192299, 72192310, 72192320, 72192390, 72192411, 72192412, 72192413, 72192419, 72192421, 72192422, 72192423, 72192429, 72192490, 72201110, 72201121, 72201122, 72201129, 72201190, 72201210, 72201221, 72201222, 72201229, 72201290, of the Customs Tariff Act, 1975 from Peoples Republic of China PR vide order F. No.D-22011/06/2012 dated 24.9.2012.

12. A corrigendum was subsequently issued on 12th November, 2012 and 23rd November, 2012 for rectifying typographical error & restricting the width of the product under consideration to 1605mm respectively. Provisional safeguard duty was imposed vide Min. of Finance Notification No. 1/2013-Customs (SG) dated 4th January, 2013.

13. A public hearing was held on 27th December, 2012. Subsequently, due to the change of the Director General and the fact that the prescribed time period of 8 months as per Safeguard Rules was lapsing on 25th Feb'13, extension of time for issuing Final Findings was allowed by the Central Government vide Ntn. No. 24 / 2013-Customs (N.T.) dated 26th Feb'13. Thereafter, a second oral hearing was held on 11th April, 2013. The following interested parties made oral submissions at the time of Public hearing:

- a. Petitioners/Domestic Industry.
- b. Bureau of Fair Trade, Ministry of Commerce, Government of People's Republic of China PR
- c. China Iron and Steel Association, China
- d. China Embassy in India
- e. Ramani Steel House
- f. Pacific Metal Trading Co.

- g. All India Stainless Steel Importers Association
- h. Metal and Stainless Steel Merchants Association.
- i. Quality Foils (India) Pvt. Ltd.
- j. The Tamil Nadu Stainless Steel Merchants and Manufacturers Association (they appeared for Public Hearing, did not give oral submissions but provided written submissions).

14. Although M/s. JSS Steel Italia Ltd. and M/s Indian Stainless Steel Development Association were not an interested party but the representative of both parties were allowed to make oral submissions during the Public Hearing. M/s. JSS Steel Italia Ltd, has subsequently filed written submissions which have been taken note of, in **this finding**. However, as M/s Indian Stainless Steel Development Association has not filed their written submissions, their views are not considered at all.

15. In terms of sub rule (6) of rule 6 of the Custom Tariff (Transitional Product Specific Safeguard Duty) Rules, 2002, all the interested parties who participated in the public hearing were requested to file written submission of the views presented orally.

16. Copy of written submissions filed by one interested party was made available to all the other interested parties. Interested parties were also given an opportunity to file rejoinders, if any, to the written submissions of other interested parties.

17. All the views expressed by the interested parties in their written submissions in pursuant to the public hearing held on 11th April, 2013 were examined and have been taken into account in making appropriate determination. The non confidential version of the information received or acquired has been kept in the public file.

B. Viewsof Domestic Producer (Applicant)

18. The views of the applicant Domestic Industry on various issues are summarized as under:

- a. The product under consideration in the petition was "Hot Rolled Flat Product of Stainless Steel of 300 Series (of all widths) and encompassing all austenitic grades having minimum Nickel (Ni) content of 6%, compulsorily containing chromium, with or without the presence of other alloying elements like molybdenum, titanium etc.",, hereinafter referred to as Hot Rolled Stainless Steels. The subject goods are classified under Customs heading no. 721911, 721912, 721913, 721914, 721921, 721922, 721923, 721924, 722011, 722012 of the Customs Tariff Act, 1975. However, the DG(S) after examining the views of the interested parties and submissions made by us restricted the product scope to "Hot Rolled Flat products of Stainless Steel -304 grade and encompassing all austenitic grades having minimum Nickel (Ni) content of 6%, compulsorily containing chromium with or without the presence of other alloying elements like molybdenum, titanium etc., falling under sub-heading no. 72191111, 72191112, 72191190, 72191200, 72191300, 72191400, 72192111, 72192112, 72192121, 72192122, 72192131, 72192132, 72192141, 72192142, 72192190, 72192211, 72192212, 72192219, 72192291, 72192292, 72192299, 72192310, 72192320, 72192320, 72192390, 72192411, 72192412, 72192413, 72192419, 72192421, 72192422, 72192423, 72192429, 72192490, 72201110, 72201121, 72201122, 72201129, 72201190, 72201210, 72201221, 72201222, 72201229, 72201290, of the Customs Tariff Act, 1975", hereinafter referred to as Hot Rolled Stainless Steels in the Preliminary Findings, which is, at this stage, the Product under consideration. The subject goods are used for manufacture of process equipments, re-rolling, reactor vessels, material handling equipments, railways, pipes & tubes, automotive components, rolled formed sections, architecture, building & construction, industrial fabrication etc.
- b. The domestic industry has produced and supplied product of width upto 1230 mm from Hissar, whereas the new production facility set up in Odisha has developed facilities upto 1650 mm.
- c. The scope of safeguard investigations includes both like and directly competitive article. 'Directly competitive article' scope is not restricted to present competition. It extends to potential/future competition as well.
- d. It is established practice that only that product type shall be excluded from the scope of the domestic industry for which the domestic industry does not offers directly competitive article. The objective of safeguard law is to address injury to the domestic industry from imports. The scope of product under safeguard law includes identical and directly competitive article. Therefore, even if the domestic industry does not produce a particular type of the product under consideration, it is unarguably the directly competitive article to the product under consideration
- e. Most of the integrated producers globally produce HR products, CR products which are produced by rolling the HR products. Globally the producers can produce different types at the same plant/manufacturing facilities and

~~can~~ interchangeably produce different types. Producers may also first produce 'higher width' coils and then the same can be trimmed (either by them or slitters or re-rollers) to 'small widths' of size required by the 'end consumers'. As opposed to coils, producers produce plates of size required by end consumers.

- f. Plate and coil are merely two different form of the product. Secondly, both plates and coils have been imported from China and supplied by the domestic industry. Thirdly, the responding association itself has relied upon the decision of the Designated Authority on anti-dumping wherein both coil and plates were included within the **scope of the product under consideration** and yet, the association has sought exclusion of plates. Association ~~cannot play~~ dual standards. Fourthly, no product is consumed in coil form. Every coil is first cut and then ~~consumed~~. Exclusion of plates from product scope shall imply continued injury to the domestic industry. Fifthly, the scope of safeguard investigations includes both like and directly competitive article. Directly competitive article scope is not restricted to present competition.
- g. The end users such as milk dairy segments and tank storages use both smaller as well as higher width materials. Product with higher width may be imported and can be slit to be used for equipments requiring lower widths. Thus, if these consumers are allowed to import wider width product without restricting the application, the same shall imply circumvention of proposed safeguard duty. The exemption should therefore be restricted to particular application.
- h. There are two other producers of the goods but the applicant company M/s. Jindal Stainless Ltd account for more than 90% of production and hence is a major producer.
- i. The imports of the product under consideration have increased throughout the injury period in absolute terms with a sharp increase in imports in the recent period. There is a sudden, sharp and significant increase in imports in the recent period. Imports have also increased in relation to production in India throughout the injury period with a significant increase in the most recent period. It would thus be seen that imports of product under consideration have shown recent, sudden, significant and sharp increase. The condition prescribed under the rules in this regard is clearly met.
- j. The import and injury related data for 3 year period has been filed by the applicant.
- k. Unforeseen development which has led to increase in imports is the rapid capacity growth recorded by China at a rate which is far higher as compared to the growth in domestic demand, resulting in excess production and huge surpluses. China was a net importer of stainless steel products until 2009 and thereafter became the exporter of the same.
- l. Cost advantage to Chinese producers: Access to cheap Nickel in the form of Nickel Pig Iron has enabled Chinese Stainless Steel producers to have a lower cost of production as compared to their counterparts in other countries. Development in Nickel Pig Iron facilities has happened over the last 2-3 years. This has allowed the country to ramp up production and dominate the global market in recent years. Nickel pig iron was developed in China specifically for stainless steel production.
- m. Other advantages of Chinese producers: Coke forms the second highest cost item in Ferro Chrome production cost after chrome ore which is an essential element in the manufacture of stainless steel. China, having very large coking coal deposits has a huge advantage over India. Borrowing cost of Chinese companies is below 5%, as credit is regulated by the Chinese government / its agencies.
- n. Demand of the product concerned has increased throughout the injury period. Further, the evidences provided shows that by end of 2015, China's stainless steel products capacity will reach 20 million tons and output will reach 19 million tons and the demand in China will reach 16 million tons, leaving a surplus of 3 million tons. Considering the huge production capacities of the subject goods in subject country and their export orientation and the increasing demand for the subject goods in India, in all likelihood imports will continue to remain high, causing market disruption and grave threat of market disruption to the domestic industry.
- o. Market Share: Increased imports have led to increase in marketshare of imports and reduction in market share of the domestic industry. Decline in market share of the domestic industry has adversely impacted the production and capacity utilization of the domestic industry.
- p. Production and sales of the domestic industry declined significantly in 2010-11 with the surge in imports. The domestic sales and production of the domestic industry showed some improvement in 2011-12, however the same were still below the levels recorded in 2009-10.

q. **Capacity:** Domestic industry substantially enhanced its capacities and set up a fresh new green field plant at Odisha. The production of the domestic industry should have increased whereas the production did not even reach the levels achieved in 2009-10 because of increased imports from China and consequent adverse sales volumes of the domestic industry.

r. **Cost of production:** Increase in the Stainless Steel scraps prices and Nickel prices have led to a substantial increase in the cost of production. Domestic industry also increased the prices but the increase was lower to the cost to make and sell in order to vow the consumers. Despite such adverse and low prices, the volume of imports has surged from China in view of significantly low prices offered by the Chinese producers.

s. Landed price of imports is significantly lower than the selling price of the domestic industry. Landed price of imports is also lower than the cost of sales. The imports are significantly undercutting the domestic prices.

t. **Capacity utilization** of the domestic industry has severely suffered as a result of low production, and the same declined significantly even when the demand for the product under consideration has increased.

u. **Inventory:** Petitioner is faced with significant accumulated inventories. The levels of inventories have increased throughout the injury period with a significant increase in the most recent period.

v. **Shut Downs:** The petitioner has been forced to undertake too many and too frequent production suspension. It is relevant to note the peculiarities of steel plant in this regard. In case there is a stoppage of about three hours between the batches, the energy consumption after restarting would be higher by 15-20%. Therefore on account of the inherent technical nature of the plant, the furnace has to be run on a continuous basis or in other words at optimum levels of capacity utilization. A lowering of the capacity utilization will not only result in higher fixed overhead cost per unit of production but also in higher variable cost on account of excessive consumption of power. Therefore, any plant shut down is a last resort for any manufacturer.

w. **Profitability** of the domestic industry has steeply declined in the recent period. The cost of sales of the product under consideration has increased throughout the injury period. But the domestic industry was unable to increase its selling price in proportion to the cost of sales due to increasing price of raw material and presence of cheap imports. Consequently the profits earned by the domestic industry have declined throughout the injury period.

x. The return on investments also followed the same trend as that of profits. The return on investments declined due to presence of increased imports.

y. In addition to the market disruption already inflicted on the domestic industry, increased imports of product under consideration are threatening market disruption to the domestic industry.

z. There are no other factors that may be attributing to the market disruption to the domestic industry other than the low priced imports. The imports of product under consideration from third countries have declined as a result of imposition of anti dumping duties on these imports. Share of China in total imports has increased significantly and that of other countries declined significantly.

aa. The present scope in the notification is unambiguous and does not require any further clarification. It may be noted that apart from grade 301 and 304, there is no other grade in 300 series where the minimum nickel content is 6%. All other grades have minimum nickel content starting from 8%.

bb. Petitioner has also provided information of the domestic industry segregated into 304 grade and other than 304 grade. It has further submitted that

- imports of 304 grades have been increased in much higher volumes as compared to other than 304 grade.
- the volume of imports of 304 grade and other than 304 grade on one hand and the performance of the domestic industry in these segments on the other hand clearly establishes that the domestic industry is suffering marked disruption due to Chinese imports. The market disruption is higher in case of 304 grades. However, petitioner is also suffering market disruption in other than 304 grades. Further, should the safeguard duty be restricted to only 304 grades, the imports would increase in other than 304 grades
- Petitioner was advised to provide transaction-wise import data/ production/ sale/ export/inventory data and injury margin statement of Hot Rolled Flat Products of Stainless Steel 304 grade.

cc. Contrary to what is alleged by the interested parties, the monthly average of 300 series production for the three years is 11,512MT, 11875MT & 15126MT respectively. Similarly, the average monthly inventory of 300 series for the three years is 7236MT, 6175MT and 7658 MT respectively. Further, even going by the incorrect figures, the inventory as a % of production (for 300 series) has risen from 37% in base year to 71% in 2011-12 and inventory as a % of captive consumption should be ignored as captive consumption is not a relevant factor.

dd. The petitioner has provided all the required data pertaining to Hot Rolled Flat Products of Stainless Steel 304 grade.

ee. While an interested party has a right to participate in the investigations and advance its argument, its first obligation is to provide relevant information prescribed by the Director General. The Director General has prescribed a questionnaire for providing relevant information. This prescription cannot be circumvented by putting up a platform of an association, which itself has no locus.

ff. The threshold of injury may at the least be lower but not higher in a safeguard case. In any case, the issue is entirely irrelevant. The data/information relating to domestic industry and the preliminary findings clearly establishes that surge in imports of the product under consideration has caused injury to the domestic industry as per the requirements of the TPSSM law.

gg. The petitioner submits that the statements made by the company in the annual report are with regard to company performance and in respect of all the products produced or sold by the company. Further, these statements are meant for shareholder, financial institutions, Govt. of India and public at large and therefore deal with micro-and macro situations relating to company's operations both in the context of domestic and international market, covering raw materials, products produced by the company and products produced by downstream industry to any extent.

hh. Sales have been segregated between domestic merchant sales, captive sales and exports. Impact of increased imports cannot and was not on the captive consumption and therefore segregated performance alone shall show whether injury to the domestic industry is due to increased imports or some other factors.

ii. The decisions cited by the interested party shows that the Authority should examine all parts of the domestic industry. However, it does not restrict the Authority to base the finding on any one part of a domestic industry after examining all the aspects of domestic industry.

jj. The Director General has examined injury with regard to the product under consideration and has included captive consumption as well.

kk. Petitioner has analyzed the data with respect to the restricted width and it was seen that there is only marginal difference in the data, after excluding higher width. Therefore, the restricted width could not have changed the conclusion derived by the Authority.

ll. All India Stainless Steel Importers Association lacks *locus standi* to make submissions. There does not appear to be any registered association in the name and style of All India Stainless Steel Importers Association. Since association has not established its credentials, the response should not be admitted.

C. Views of Interested Parties:

19. Following are the submissions on behalf of Bureau of Fair Trade, Ministry of Commerce, Government of People's Republic of China PR and China Iron and Steel Association, China

Violation of Principle of Natural Justice

a. The Preliminary Findings dated 24th Sept. 2012 has been issued in gross violation of the Principles of Natural Justice and Safeguards Agreement as Director General (Safeguards) has unilaterally changed the scope of product under consideration without informing other interested parties and no comments were sought on revised information obtained from the Domestic Industry.

b. Article 3 of Agreement on Safeguard puts an onus responsibility on the Investigating Authority to give reasonable notice to all interested parties so that the other interested parties may respond to the claims of the Domestic Industry and other interested parties.

Product scope

c. Product under consideration description needs to be revised as otherwise a lot of non-304 grades will also be covered by Safeguard Duty. Nickel contents in 304 series ranges between 8 to 12 % and not 6% and above. All types of products manufactured under 304 series by Domestic Industry contains Nickel between 8 to 10.50%. It is submitted that the DG Safeguards should define the PUC in accordance with the product specification produced by the Domestic Industry.

Injury not due to increased imports:

d. FF No 14/12/2010- DGAD dated 11th Oct 2011 issued by the Designated Authority where for all the same Hot Rolled Flat Products of Stainless Steel the Petitioner claimed a capacity of 880000 MT for the period 2007-08. In the present Petition it has been claimed that for Hot Rolled Flat Products of Stainless Steel (same product) the combined capacity for 2009-10 was 720000. This shows that the Petitioner made false claims before the investigating authorities and his information cannot be trusted and relied upon.

e. In the present investigation, petitioner has claimed that they have enhanced capacity from 78000 Mt to 138000, whereas in the Press release issued by the Company, it has been stated categorically that the plant at Odisha will be operational only in 2012-13. In view of this fact, it is clear that there has been no expansion of capacity at Odisha during the period of investigation and the claim of the Petitioner that they have an installed capacity of 1380000 Mt during period of investigation is totally incorrect.

f. The Investigating Authority should base its investigation only on the basis of Hissar Plant and not on the basis of Odisha Plant information.

g. Directorate General (Safeguards)'s finding of increased imports is wrong. Because there cannot be a causal link between increased imports and serious injury or threat thereof caused to the Domestic Industry. Had the Investigating Authority properly considered reasons for the decline in capacity utilization of Indian producers, it could not have found a causal link between other factors and injury. Other factors demonstrate that the Domestic Industry's theory of imports as the cause of the domestic industry's injurious situation is untenable.

Losses on account of other factors not examined

h. The Preliminary Findings has failed to address and provide a non-attribution analysis for other factors that have caused and threatened to have caused market disruption to the domestic industry at the same time as imports. The Preliminary Findings states that "increased imports have caused market disruption and threat thereof to the domestic industry at the same time. However, this statement is conspicuously wrong.

i. The applicant fails to demonstrate the existence of causality between increased imports and the decline in its financial performance or the material injury suffered by itself. Some temporary, short-term phenomenon stated by the applicant is not caused surge in imports

j. Reasons for decline in profitability have been highlighted by the Management of the Company in its Annual Audit Report as well as in the Press statements made by the Management from time to time during the period of investigation.

20. China Embassy in India

In addition to other issues which have already been brought out hereinabove, the Chinese Government has expressed serious concern over flaws in procedural and factual aspects of this investigation, e.g. changing the scope of the investigation without informing all the interested parties, and strongly urged the Indian Authority to ensure justice and terminate the investigation.

21. M/s Ramani Steel House, Pacific Metal Trading Co., All India Stainless Steel Importers Association and Metal and Stainless Steel Merchants Association.

Product scope

- a. Product modified in the corrigendum requires further modification. Definition does not specifically excludes other grades. Elaborate conditions have twisted the product under consideration. Description "encompassing all austentic grade". Austentic grade produced by Electrovek Steel includes grades other than 304.
- b. Production process of plates differs from coils. Due to less rolling and high thickness the physical properties of plates differs from coils. DGAD in AD investigation has held that plate are different from coil. Volume of import of plate is less than 2%. AD investigation also held plate to be different from coil.
- c. Goods not produced nor imported should be excluded. In the case of Oxo Alcohol anti dumping case, CESTAT held that products not manufactured by the domestic industry, the import of the same cannot cause injury to the domestic industry. Products to be excluded are (a) Tear drop/ chequered /Anti slip (b) coil of thickness below 3 mm and above 10mm (c) plate of thickness below 6mm and above 63 mm (D) Hot Rolled black Coil Semi finished.

Causal link & Injury

- d. Article 16(4) of TPSSM as incorporated under section 8C of the Customs Tariff Act defines market disruption. It requires that the article imported should cause market disruption and such imports must be a significant cause of injury to the domestic industry. Threshold of injury is quite high.
- e. Preliminary findings do not establish that imports were a significant cause of injury as mandated under Section 8C of the Customs Tariff Act. Instead finding has been made on lesser threshold criteria under Section 8B. This is due to the fact that imports were in fact not a significant cause of injury.

Market disruption & Serious injury

- f. Following factors cause injury to the domestic industry
 - a. Non availability of chrome core
 - b. Odisha plant was not fully operational
- g. Considering the fact that overall level of utilisation of plant capacity (based on Annual Report) was only 12%, the max PUC which could have been produced is 14530MT (the level of capacity utilisation could not have been more 12% because of ramp up and stabilisation). The actual PUC production in Odisha is 24000MT which clearly shows that capacity utilisation was 160%.
- h. Petitioner is a habitual user of trade remedy action as and when the capacity is put to use to show high production capacity, low production and low capacity utilization, high cost of production etc.
- i. There are clear discrepancies in the data filed by the domestic industry. The combined trend cannot exceed the individual trend for 304 and non 304 products.

Incomplete information in respect of captive as well as merchant market

- j. The domestic producer has bifurcated the market into two separate segment as (i) the merchant market and (ii) captive consumption market. For merchant market production, dispatches from factory and sales from the depots of the PVC have been shown as above. It is apparent when dispatches from factory and sales from the depots of the PUC is more than the production of the PUC and even thereafter inventory is increasing, then the inventory shown in the last column is being maintained only as raw material for captive consumption.
- k. However, even if consolidated volume of inventory is to be analysed as % of production and captive consumption, it is evident that during the P01 the inventory got stabilized in terms of production as well as captive consumption, though the domestic producer was experiencing high fluctuation in inventory during base year.
- l. Authority cannot bifurcate the market segment into two segment based on captive market and merchant market. Finding based on any one segment is inconsistent and incorrect as has been held by the WTO Appellate Body.

Losses on account of other factors

- m. There is no injury to the domestic producer in 2011-12. The capacity utilization was 100%, and therefore there was no scope to increase production beyond it.
- n. Whenever production increased there was a corresponding increase in captive consumption of the subject goods.
- o. Whenever a plant commences production, it produces rejects and sub standard quality in the beginning. However, no production has been shown separately which means it has been taken up in inventory.

Non-Injurious Price or Fair Selling Price of the domestic producer

- p. Director General (Safeguard) should allow only 12% of the depreciation or proportionate depreciation as shown in Balance Sheet as per company law for the subject goods. The Director General (Safeguard) should also allow only 12 % of the standing and fixed costs as the domestic producer only able to achieve such capacity overall.

Other cause of injury

- q. The Odisha plant was conceived as a SEZ unit and the entry into the domestic market by the new plant was not by choice but by compulsion.

Comments in rejoinder & other submissions

- a. Applicant domestic producer has not provided complete information on captive markets, which is against WTO Panel and Appellate Authority rulings: US- Anti-dumping measures against Hot-rolled Steel products from Japan (WT/DS184/AB/R) and US – Transitional safeguard measure on combed cotton yarn from Pakistan (WT/DS192/AB/R)
- b. Domestic Industry does not consist of only applicant producers. Therefore authority should collect injury data of total production.
- c. The claim that inventories has increased in not correct.
- d. The facts and reasons leading to width restriction have not been made known to interested parties. Corrigendum regarding width was issued without accounting for changes in injury parameters linked to import volumes.

Violation of Principle of Natural Justice

- e. Referring to the change in product scope from 300 series to 304, the requirement of hearing cannot be fulfilled unless the relevant facts/evidence/documents necessary for the hearing are made available before the public hearing.
- 22. M/s. Quality Foils (India) Pvt. Ltd. has argued that their company procures 304 grade stainless steel hot rolled coils from China, from Ningbo Quanxing Company. It found that the chemical composition of the material is not consistent. When complained regarding variation in chemical composition and surface finish, corrective actions were not taken. Due to this, they have incurred heavy losses in the market. It is claimed that they have lost their goodwill and had to decrease the price by 100 USD per MT and sell in the local market.
- 23. The Tamil Nadu Stainless Steel Merchants and Manufacturers Association) submitted as under:

Violation of Principle of Natural Justice

- a. Present investigations are in violation of Principles of Natural Justice. Interested parties came to know about the change in scope of product under consideration only after the issuance of interim findings.
- b. Product under consideration has been changed by the Director General (Safeguards) unilaterally in consultation with the Domestic Industry. The process of investigation should not only be fair but should appear to be fair.

c. On account of non-supply of all the information provided by the Petitioner and no opportunity to comment on the revised information given, the Directorate has committed a grave error.

Safeguard remedy- In case of emergency situations only:

d. The safeguard measures are extraordinary remedies to be taken only in emergency situations. The domestic industry has failed to establish any such emergency.

e. Petitioner has not provided information with respect to both its the plants individually. Separate information is essential since it is admitted position that Orissa Plant was not commissioned before Aug. 2011. JSL Odisha Plant was SEZ Unit until 2011. The sales from SEZ Unit should be considered as import into India since the same cannot enter into India without payment of applicable duty. Hence its data should not be included in injury information.

f. Odisha Plant has suffered long and often delays right from its inception and therefore, the Authorities should not take risk of imposing Safeguard Duty on imports made by the domestic user industry as it may directly hurt market competitiveness of Domestic User Industry.

Product scope

g. The authority should analyse whether the domestic industry has started commercial production of product under consideration width of 1520mm/1530 mm and in case of the same, the scope of the product is required to be specified upto width of 1520mm/1530 mm.

h. Application must be for the product range available and commercially produced by the petitioner. Product under consideration scope should be restricted to coil form (3mm-6mm thickness x 1000mm upto max. upto 1250 mm width) and plate (quarto) (5mm-6mm thickness x 1000 upto max. upto 1250 mm width).

i. Each grade of 300 Series has different levels of Nickel, Chromium, Molybdenum, Titanium content. Therefore to say that product under consideration encompass 6% or more Nickel, Chromium, Molybdenum, Titanium content would also include products which do not fall under 304 Grade. Hence the Directorate should amend/alter/modify the description of product under consideration as "Hot Rolled Flat Products of Stainless Steel of ASTM Grade 304 with all its variants including products of equivalent specifications in other standards like UNS, IS, Chinese DIN, JIS, BIS, EN, etc.

Non-Substitutability

j. To meet the consumer requirement and specification the user industry has to necessarily use raw material of requisite width and thickness only. For example, Stainless Steel Welded Pipe Manufacturer submitted that the minimum width required of Coils and Plates is important to produce Longitudinal Welded Pipe.

k. Cutting of higher width coils into smaller sizes is not feasible because (a) Higher width products would cost more as compared to normal width (b)There would be significant wastages which would further increase the cost.

Injury not due to increased imports

l. Imposition of ADD and increased demand has forced users to resort to imports from China as the Domestic Industry cannot supply the requisite sizes and thicknesses.

m. Imports increased on account of increased demand in Indian market.

n. Stainless steel products in India were used mainly for utensils and domestic producer may not satisfy demand for high quality stainless steel products.

Enhanced Capacity

o. The decrease of the petitioner's capacity utilization resulted from the sharp expansion of the petitioner's capacity. As the relevant market in India is still yet to digest and absorb such changes in the market, so the production of the petitioner did not increase at the same pace.

Performance of domestic industry:

- p. Performance of DI cannot be evaluated without knowing the status of Odisha Plant.
- q. Odisha Plant was de-bonded only in Aug. 2011 (i.e., after lapse of 5 month period in the FY 2011-12).
- r. Production, inventory and other economic data for period prior to Aug. 2011 cannot be loaded as part of D.I. since the plant was deemed to be foreign plant being part of SEZ.
- s. That the performance of the both the plants be separately analyzed.

Public Interest

- t. If safeguard duty is imposed on PUC which is the main raw material for the user industry, then products made by the User Industry would become uncompetitive and would result in loss of market to Chinese Producers.

24. M/s. J.S.S. Steelitalia submitted that the basic physical and chemical properties of the Stainless Steel Coils of Grade 304 that were imported from P.R. China did not conform to international standards like ASTM & EN. There was lack of consistency in terms of the chemistry of the material being supplied by Chinese mills especially in terms of the percentage of various alloying elements e.g. while the minimum guaranteed nickel content was 8%, the actual nickel content was lower than the minimum level. The surface finish of the material was extremely poor and way below the accepted benchmarks. There was no effort from the supplier to resolve the issue.

E. Examination and Findings of the Director General (Safeguards):

25. Submissions made by various interested parties and by the Domestic Industry have been considered in the present order. Rejoinder submissions made by the interested parties have also been considered appropriately. Submissions made by the various parties and the issues arising therefrom, to the extent considered relevant, have been dealt with at appropriate places in the findings below.

Product under Consideration:

26. The scope of the product under consideration for which investigations have been initiated includes Hot Rolled Stainless Steel products of 300 series including a number of grades, which includes, inter-alia, 301, 304, 321, 309, 310, 316, 317, 321, 347, etc. A number of interested parties who have responded to the Notice of Initiation stated that the scope of the product under consideration is too wide and should be restricted, as the majority of the imports are only of 304 grades. The interested parties also argued that different grades have different applications and non-304 grade products cannot meet the requirements of 304 grade products. Responding to the arguments of the interested parties, the domestic industry also contended that the surge in imports is primarily in 304 grade and the domestic industry has suffered market disruption in respect of 304 grade. While objecting to restricting the scope of the product under consideration to only 304 grade, the domestic industry has stated that in case the safeguard duty is restricted to only "304 grade Hot Rolled Stainless Steels products", the surge in imports will shift to non-304 grade products and the domestic industry will suffer injury in those products. However, it is noted that the domestic industry has not rebutted the contention of the interested parties that the consumers of 304 grade products cannot use non 304 grade products. Consumers require specific grades of Hot Rolled Stainless Steel products and, therefore, consumers of 304 grade products cannot consume non-304 grade products. Accordingly, the scope of the present investigation is restricted to 304 grade products only.

27. Interested parties also argued that the product under consideration should be restricted to the width produced by the domestic industry. In the Preliminary Findings, it was considered appropriate to restrict the scope of the product under consideration to include only 304 grade products of width upto 1605mm. However, subsequent to the preliminary findings, the domestic industry provided evidence showing production and sale of 1625 mm width also. It may be recalled that the product scope was restricted in the preliminary findings on the basis of the submissions made by various interested parties that the domestic industry produced and sold upto 1605mm product only. Since the evidence on record shows that the domestic industry has produced and sold goods upto 1625 mm, it is considered appropriate to consider the scope of the product under

consideration upto 1625 mm. Accordingly, the scope of the product under consideration is restricted to only 304 grade products of width upto 1625 mm.

28. Domestic industry submitted that the nomenclature 300 series is applied to the group of Austenitic (Chromium-Nickel) grades as per ASTM (American Society for Testing and Materials). Domestic industry further submitted that the grades such as 304 are ASTM grades. Domestic industry provided a table showing variants of 304 and equivalent grades in other standards (other than ASTM).

USA	USA	Europe	India	China	Germany	Japan
ASTM	UNS	EN	BIS	Chinese	DIN	JIS
304	S30400	1.4301	X04Cr19Ni9	0Cr18Ni9	X5CrNi 18-10	SUS 304
304H	S30409/ S30415	1.4948			X6CrNi 18-10	
304L	S30403	1.4306/ 4307			X2Cr Ni18-9/X2 CrNi9 -11	SUS 304L
304LN	S30453	1.4311			X2CrNiN18-10	SUS 304LN
304N	S30451					
XM21	S30452					
						SUS304N1
						SUS304N2
						SUS304J1
						SUS304J2

29. In view of the above, it would be appropriate to specify that the scope of the product under consideration extends to ASTM 304 grades (including all variants of 304 grade) with all its variants and the equivalent specifications in other standards.

30. A number of interested parties have sought exclusion of specific product types within 304 grades. The claims made by the interested parties were examined and the same is dealt herein below.

- Exclusion of plates – Some interested parties sought exclusion of plates from the scope of the product under consideration on the grounds that the imports of the product under consideration are only in coil form. The detailed import data was examined, transaction by transaction and it is found that there are imports of plates from China. It is found that if the product under consideration is having width below 600 mm, it is classifiable under 7220 and is normally (almost always) in coil form. Further, if the product under consideration is 600 mm or above, it is classifiable under 7219. Under 7219, coils are classifiable under 721911, 721912, 721913 & 721914; whereas product not in coil form (i.e., sheet/plates) are classifiable under 721921, 721922, 721923 & 721924. The only difference in the product falling under 7219 and 7220 is the width of the product. Similarly, coils being of lesser thickness can be rolled relatively long, whereas plates will have to be of limited length. Plates and coils do not constitute distinctly different articles. Moreover, the domestic industry has produced and supplied both coils and plates. Both coils and plates have been imported from China. Since there is production and import of both types, they are required to be kept within the product scope.
- A number of interested parties have also argued that the product scope should be restricted to products having a width above 600mm only. In this regard, it is noted that it would not be appropriate to exclude

these product types also for the reason that there are imports of HR products below 600mm and the domestic industry has also supplied HR products below 600 mm.

c. Some interested parties have sought exclusion of 904L/1.4539/UNS 08904, SMO 254/ UNS 3125, 32750, 32760, 321H/1.4878, 347H/1.4961. While disputing the claims for exclusion of these product types, the domestic industry clarified that all these product types are of non-304 grades. It is noted that since the scope of the product under consideration itself has been restricted to include only 304 grade, all these product types are in any case beyond the revised scope of the product under consideration and proposed measures.

31. Considering the above facts and issues, the scope of the product under consideration for the purpose of the present findings is as follows –

"Hot Rolled Flat products of Stainless Steel -304 grade (upto a maximum width of 1625 mm) encompassing all austenitic grades having minimum Nickel (Ni) content of 6%, compulsorily containing chromium with or without the presence of other alloying elements like molybdenum, titanium etc.".

These products are classifiable or imported under sub-heading nos. 72191111, 72191112, 72191190, 72191200, 72191300, 72191400, 72192111, 72192112, 72192121, 72192122, 72192131, 72192132, 72192141, 72192142, 72192190, 72192211, 72192212, 72192219, 72192291, 72192292, 72192299, 72192310, 72192320, 72192390, 72192411, 72192412, 72192413, 72192419, 72192421, 72192422, 72192423, 72192490, 72201110, 72201121, 72201122, 72201129, 72201190, 72201210, 72201221, 72201222, 72201229, 72201290 of the Customs Tariff Act, 1975. It is clarified that the HS codes are only indicative and the product description shall prevail in all circumstances.

Domestic Industry:

32. Section 8C(7)(a) of the Customs Tariff Act, 1975 defines domestic industry as follows:

(a) "Domestic industry" means producers -

- i. as a whole of the like article or a directly competitive article in India; or
- ii. whose collective output of the like article or a directly competitive article in India constitutes a major share of the total production of the said article in India

33. The application has been filed by M/s JSL Ltd, 12, Bhikaji Cama Place, New Delhi – 110066. There are two more known producers of Hot Rolled Flat products of Stainless Steel of 304 grade in India namely, Steel Authority of India Limited, Ispat Bhawan, Lodi Road, New Delhi – 110003 and Shah Alloys, Shah Alloys Corporate House Sola-Kalol Road, Santej Taluka: Kalol, District: Gandhinagar 382721, Gujarat. These two producers are not petitioners in the present case. The applicant accounts for more than 90% of the Indian production and hence is a major producer of the product under consideration in India. Production of the applicant constitutes a major share of the total production of the product under consideration in India.

SN	Year	Petitioner	Other Indian producers	All Indian producers
A Volume (MT)				
1	2009-10	100,265	8,777	109,042
2	2010-11	98,448	5,645	104,093
3	2011-12	129,900	5,450	135,351
B Share (%)				
1	2009-10	91.95	8.05	100.00
2	2010-11	94.58	5.42	100.00
3	2011-12	95.97	4.03	100.00

After taking into account the information on record, it is determined that the domestic producer filing the petition constitutes a major share of the total production of the said article in India. Accordingly, the petitioner constitutes 'Domestic industry' as per Section 8C(7)(a) of the Customs Tariff Act 1975.

Period of Investigation (POI):

34. The Customs Tariff Act, 1975, the Customs Tariff (Transitional Product Specific Safeguard Duty) Rules, 2002, do not specifically define the Period of Investigation. However the issue of period of investigation has been dealt in detail in Panel findings in US-Line Pipe Case against Korea. The Panel in this case ruled that it is up to the discretion of the investigating authority of the importing Member to decide the "length of the period of investigation" and its "breakdown":

"We note that the Agreement contains no requirements as to how long the period of investigation in a safeguards investigation should be, nor how the period should be broken down for purposes of analysis. Thus, the period of investigation and its breakdown is left to the discretion of the investigating authorities. In the case before us the period selected by the ITC was five years and six months, which is a period similar in length to the one used by the Argentine investigating authority in Argentina — Footwear Safeguard. However, we note that the Appellate Body, in the findings relied upon by Korea to argue the question of the length of the period of investigation, emphasized not the length of the period per se, but that there should be a focus on recent imports and not simply trends over the period examined. In the case of the line pipe investigation the ITC did not merely compare end points, or look at the overall trend over the period of investigation (as Argentina had done in the investigation at issue in Argentina — Footwear Safeguard). It analyzed the data regarding imports on a year-to-year basis for the 5 complete years, and also considered whether there was an increase in interim 1999 as compared with interim 1998. We are of the view that by choosing a period of investigation that extends over 5 years and six months, the ITC did not act inconsistently with Article 2.1 and Article XL. This conclusion is based on the following considerations: first, the Agreement contains no specific rules as to the length of the period of investigation; second, the period selected by the ITC allows it to focus on the recent imports; and third, the period selected by the ITC is sufficiently long to allow conclusions to be drawn regarding the existence of increased imports." (paras. 7.196, 7.199 and 7.201¹)

35. The Panel in the same US-Line pipe case ruled that:

"In a safeguard investigation, the period of investigation for examination of the increased imports tends to be the same as that for the examination of the serious injury to the domestic industry. This contrasts with the situation in an anti-dumping or countervailing duty investigation where the period for evaluating the existence of dumping or subsidization is usually shorter than the period of investigation for a finding of material injury. We are of the view that one of the reasons behind this difference is that, as found by the Appellate Body in Argentina — Footwear Safeguard, "the determination of whether the requirement of imports "in such increased quantities" is met is not a merely mathematical or technical determination." The Appellate Body noted that when it comes to a determination of increased imports "the competent authorities are required to consider the trends in imports over the period of investigation". The evaluation of trends in imports, as with the evaluation of trends in the factors relevant for determination of serious injury to the domestic industry, can only be carried out over a period of time. Therefore, we conclude that the considerations that the Appellate Body has expressed with respect to the period relevant to an injury determination also apply to an increased imports determination." (Para 7.209)²

36. From the above, it is clear that neither the domestic laws on Transitional Safeguard measures nor the Agreement on Safeguards and Article XIX of GATT nor the Accession Protocol of the Peoples Republic of China provide specific guidelines on the selection of the Period of Investigation. However, having regard to the nature and purpose/objective of such investigations, it is important that the investigation period should be sufficiently long to allow conclusions to be drawn with regard to increased imports as well as market disruption and consequent

¹ WT/DS202/R DT, 29.10.2001 Panel report in US-Line Pipe case

² WT/DS202/R DT, 29.10.2001 Panel report in US-Line Pipe case

injury. Considering these facts, it is considered appropriate to adopt the data for the period 2009-10 to 2011-12 for the purpose of the present investigations.

Source of Information:

37. Imports of the product under consideration are being reported in a number of customs classifications 721911, 721912, 721913, 721914, 721921, 721922, 721923, 721924, 722011, 722012. Further, these customs classifications are not dedicated to the product under consideration alone. Imports of other types of Hot Rolled products of stainless steel and of different grades are also being reported in these classifications. In view of the same, it is noted that the summary information published by the DGCI&S is not useful in determining volume of imports of the product under consideration in the country because transaction wise data is required in this case. The Domestic Industry has submitted transaction wise import data from IBIS, Mumbai which has been considered.
38. The data on various economic parameters submitted by the domestic industry in their petition have been verified by this Directorate to the extent possible and the non-confidential version of verification report was placed in public file. The verified data based on excise records has been taken into consideration for injury analysis.

Confidentiality of Information submitted

39. The domestic industry has provided certain information on confidential basis and sought confidentiality on the information/data submitted. The domestic industry provided non-confidential version of the application for safeguard measure as per the provisions of Safeguard Rules 2002 and Trade Notice No. SG/TN/1/97 dated 06.09.1997. Further the domestic industry has submitted reasons for seeking confidentiality at the time of filing the application.
40. Rule 7 of the Customs Tariff (Transitional Product Specific Safeguards Duty) Rules, 2002 and Article. 3.2 of WTO Agreement on Safeguards provides for confidentiality treatment to certain information (there is no provision under Accession Treaty of the People's Republic of China in this regard). The rules provide that an interested party is not required to disclose such information on actual basis which is confidential information of the company and disclosure of which can cause serious prejudice to the business interests of such party.

Increased Imports

41. Section 8C of Customs Tariff Act, 1975 deals with the power of the Central Government to impose safeguard duty and provides as follows:

"1. Notwithstanding anything contained in Section 8B, if the Central Government, after conducting such enquiry as it deems fit, is satisfied that any article is imported into India, from the People's Republic of China, in such increased quantities and under such conditions so as to cause or threatening to cause market disruption to domestic industry, then, it may, by notification in the Official Gazette, impose a safeguard duty on that article"
42. Rule 2(iii) of Transitional Safeguard Duty Rules under the Customs Tariff Act, 1975 provides as follows:

"Increased quantity" includes increase in imports whether in absolute terms or relative to domestic production.
43. The rules mandate increase in imports as a basic prerequisite for the application of a safeguard measure. Thus, to determine whether imports of the product under consideration have "increased in such quantities" for purposes of applying a safeguard measure, the rules require an analysis of the increase in imports, in absolute terms or in relation to domestic production.
44. In its evaluation of whether the investigation by the Argentine authorities demonstrated the required increase in imports under Articles 2.1 and 4.2(a), the Panel in Argentina-Footwear case stated the following:

... the Agreement requires not just an increase (i.e., any increase) in imports, but an increase in "such...quantities" as to cause or threaten to cause serious injury. The Agreement provides no

numerical guidance as to how this is to be judged, nor in our view could it do so. But this does not mean that this requirement is meaningless. To the contrary, we believe that it means that the increase in imports must be judged in its full context, in particular with regard to its "rate and amount" as required by Article 4.2(a). Thus, considering the changes in import levels over the entire period of investigation, as discussed above, seems unavoidable when making a determination of whether there has been an increase in imports "in such quantities" in the sense of Article 2.1.

15. The analysis of the increased imports of the product under consideration has been conducted in the light of the above mentioned provisions.

(i) **Increase in Imports from China in absolute terms:**

The imports of the product under consideration have increased throughout the injury period in absolute terms. Imports from China increased from 5264 MT in 2009-10 to 35741MT in 2011-12 which is an increase of 679%. However, it is important to note that while the imports increased sharply from 2009-10 to 2010-11, the increase is also significant in the subsequent period i.e., the Period of Investigation.

Year	Imports into India (grade 304 HR SS)			Share in imports	
	China	Third countries	Total	China	Third countries
	MT	MT	MT	%	%
2009-10	5,264	28,439	33,703	15.62%	84.38%
2010-11	26,702	19,662	46,364	57.59%	42.41%
2011-12	35,741	19,164	54,905	65.10%	34.90%

(ii) **Increase in imports in relation to production of the domestic industry**

The imports of the product under consideration in India during the POI have also increased in relation to production of the domestic industry when compared with the base year, but have remained almost at the same level when compared to the immediately preceding year.

Financial Year	Imports from China (grade 304)	Domestic industry Production	China imports in relation to production
			%
2009-10	5,264	100,265	5.25
2010-11	26,702	98,448	27.12
2011-12	35,741	129,900	27.51

(iii) **Imports in relation to Consumption/Demand**

For the purpose of the present investigations, the consumption or demand for the product under consideration is determined as the imports of the product into India from China and third countries, domestic sales of the domestic industry (DI) and domestic sales of other domestic producers. Changes in demand/consumption so determined over the period has been compared with the changes in the imports from various sources and supplies by the domestic industry in order to determine whether imports of the product under consideration in India have increased significantly in relation to consumption or demand for the product in the country.

Year	Imports from China (Grade 304)	Indian consumption (grade 304)	China imports in relation to consumption
		MT	MT
2009-10	5,264	87,281	6.03

2010-11	26,702	88,781	30.07
2011-12	35,741	102,002	35.03

The imports of the Chinese product under consideration in India have increased sharply in relation to the Indian consumption of the product under consideration during 2010-2011 when compared to the base year. However, the increase is less significant during the POI as compared to the immediately preceding year.

46. It is apparent from the above that there is a surge in imports during the Period of Investigation as compared to the year 2009-10 both in absolute terms as well as in relation to domestic production. At the same time, it is important to note that the same trend is not sustained in the following period. While it is true that the authorities are free to consider the imports over longer periods to determine "increased imports", it must be recognized that safeguard investigations have to give due recognition to the imports and trends in the recent past also. In the facts and circumstances of this case, it is also important to note that the initial increase in imports from China in 2010-11 over the immediately preceding period could be on account of the fact that the imports from China were very low in the base year itself as compared to the high level of imports from other sources. Further, it would not be appropriate to ignore the fact that low priced imports from China appeared to have filled in the gap created by drying up of other sources subsequent to the imposition of anti-dumping duties. This fact is clearly revealed by the fact that the imports from China in the POI 2011-12 rose much less in absolute terms as compared to the previous year. The imports in relation to domestic production also remained constant at around 27%. However, in relation to domestic consumption, the imports have increased marginally. It is recognized that for determining "increased imports", it is not necessary that such increases should be in absolute as well as in relative terms. However, analysis of increased imports in relation to production and consumption assumes greater significance in the facts and circumstances of the Product under Consideration and the concerned industry.

Unforeseen developments

47. It has been contended by the domestic industry that that there is no express obligation/requirement on the Director General (Safeguards) to analyse unforeseen circumstances as there is no specific requirement either in the Indian Rules or under Accession Treaty of the People's Republic of China on the methodology that should be followed for analysing unforeseen developments. The Agreement on Safeguards read with Article XIX of the GATT, however, obligates the national authorities to examine the "unforeseen developments" which led to the market disruption or serious injury to the Domestic Industry. It is understood that this Directorate has consistently been examining the issue of "unforeseen developments" in its investigations. It is, therefore, considered important to examine the unforeseen developments or circumstances which have led to increased imports.

48. In Argentina — Footwear (EC) and Korea — Dairy, the Appellate Body held that "any safeguard measure imposed after the entry into force of the WTO Agreement must comply with the provisions of both the Agreement on Safeguards and Article XIX of the GATT 1994³.

49. Article XIX of GATT 1994 states as follows:

1.(a)If, as a result of unforeseen developments and of the effect of the obligations incurred by a contracting party under this Agreement, including tariff concessions, any product is being imported into the territory of that contracting party in such increased quantities and under such conditions as to cause or threaten serious injury to domestic producers in that territory of like or directly competitive products, the contracting party shall be free, in respect of such product, and to the extent and for such time as may be necessary to prevent or remedy such injury, to suspend the obligation in whole or in part or to withdraw or modify the concession.

50. The Appellate Body in Argentina — Footwear (EC case) held that the phrase "Unforeseen Developments" means the developments which were unexpected. 'Unforeseen developments' requires that the developments which led

³ Appellate Body Report on Argentina — Footwear (EC), para. 84 and Appellate Body Report on Korea — Dairy, paras. 76-77.

to a product being imported in such increased quantities and under such conditions as to cause or threaten to cause serious injury to domestic producers must have been 'unexpected'. The Appellate Body in Korea-Dairy case held that unforeseen developments are developments not foreseen or expected when the member incurred that obligation.

51. The Appellate Body, in Argentina — Footwear (EC), then held that the requirement of "unforeseen developments" did not establish a separate "condition" for the imposition of safeguard measures, but described a certain set of "circumstances".
52. The panel on US- Steel Safeguards⁴ concluded that the confluence of several events can unite to form the basis of an unforeseen development:

"The United States argues that the robustness of the US dollar was a development which combined with the other developments, namely, the currency crises in Asia and the former USSR and the continued growth in steel demand in the United States' market as other markets declined, lead to increased imports."

53. The domestic industry has pointed out the following factors that in their opinion have led to the increased imports of the product from China:

Shift in production from SS 200 series to 300 series in China leading to increased production of 300 series

Global production pattern: - Hot Rolled Stainless Steels production can be broadly categorised into 200, 300 and 400 series. Hot Rolled Stainless Steels having Austenitic Chromium Manganese Alloy with Nickel content less than 6% is classified into 200 series products, whereas products having Austenitic Chromium Nickel Alloy with minimum Nickel content of 6% are classified into 300 series products and products having Ferritic Chromium type with negligible or not more than 0.75% Nickel are classified into 400 series products. Different Hot Rolled Stainless Steels products have different specific end applications. The consumers cannot use the two interchangeably. The Table below shows worldwide consumption of Stainless steel of 200, 300 and 400. It is seen that the 300 series constitutes the majority product in Hot Rolled Stainless Steel production.

SN	Series	2007	2008	2009	2010	2011
1	200	13%	13%	14%	13%	13%
2	300	57%	57%	57%	55%	57%
3	400	28%	29%	28%	30%	28%
4	Others	2%	1%	1%	2%	2%

Source:-Weekly Fax service-Heinz H. Pariser Report

304 grade product accounts for significant proportion in 300 series product

It is submitted by the Domestic Industry that a number of product types are produced within the 300 series, some of which include 301, 304, 321, 309, 310, 316, 317, 321, 347, etc. It is further submitted that out of these products, production and consumption of 304 grade product is significantly higher and constitutes the majority in production and consumption in the country:

SN	Description	2009-10	2010-11	2011-12
1	Production(MT)			
	304 grades	1,00,265	98,448	1,29,900
	Non 304 grades	37,874	44,048	51,612
	Total	1,38,139	1,42,496	1,81,512
2	Share in production (%)			
	304 grades	72.58	69.09	71.57

⁴ Para 86 of Korea Dairy case Appellate Body Report Of WTO 36

	Non 304 grades	27.42	30.91	28.43
3	Consumption(MT)			
	304 grades	87,281	88,782	1,02,002
	Non 304 grades	39,429	39,684	44,083
	Total	1,26,710	1,28,466	1,46,085
4	Share in consumption(%)			
	304 grades	68.88	69.11	69.82
	Non 304 grades	31.12	30.89	30.18
5	Import from China(MT)			
	304 grades	5,264	26,702	35,741
	Non 304 grades	100	607	442
	Total	5,364	27,309	36,183
6	Share in imports from China(%)			
	304 grades	98.14	97.78	98.78
	Non 304 grades	1.86	2.22	1.22

54. From the above Tables, it is seen that Series 300 constitutes more than half of the total stainless steel production. It is further noted that as per the submissions of the Domestic Industry, Grade 304 constitutes a majority within the Series 300. It can surely be appreciated that Series 300 as well as Grade 304 are significant in the overall production as well as consumption of stainless steel products. At the same time, it is pertinent to note that as per the information supplied by the Domestic Industry itself, the global production pattern of Series 300 has remained strikingly constant from 2006 to 2011 at around 57%. Moreover, the domestic production as well as consumption pattern in the country has also remained strikingly constant over the injury investigation period. The composition of imports from China has also remained constant at around 98% of the total imports from China. Under the circumstances, it is hard to appreciate as to how the facts brought out by the Domestic Industry itself support their claim of "unforeseen developments". On the contrary, the constant pattern domestically as well as globally suggests that the share of Series 300 as well as Grade 304 is fairly predictable and certain.

The Chinese production pattern

The Domestic Industry has submitted the production and consumption pattern of various types of Hot Rolled Stainless Steel production in China. It is further submitted that there has been a shift in the production and consumption of Stainless Steel from 200 series to 300 series in China over the years.

Production of Stainless Steel-China %								
Series	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011
200	60.00%	40.00%	30.00%	25.39%	26.80%	26.63%	30.63%	27.88%
300	25.00%	34.85%	45.00%	50.41%	47.76%	46.73%	44.62%	48.70%
400	15.00%	25.15%	25.00%	24.20%	25.44%	26.63%	24.75%	23.43%

Source:-Weekly Fax service-Heinz H. Pariser Report

It is submitted by the domestic industry that while 200 series earlier constituted the majority product amongst the HR Stainless Steel production in China, the consumption pattern has undergone a significant change in the recent years. Consumption of 300 series now constitutes a much larger share in production of Hot Rolled Stainless Steels consumption in China. It has overtaken consumption of 200 series product in both absolute terms and in relation to production of various products. From the above data, what emerges is that the demand in China for the Series 300 is growing significantly, *inter alia*, for the reason that Series 200 is also getting substituted by Series 300. Under the circumstances, it is hard to appreciate that there is reason to expect any major surge of imports from China at least for the reason canvassed by the Domestic Industry.

55. The Domestic Industry has also submitted various published information on production, consumption and profitability of various products which is as follows;

Source: International Stainless Steel Forum, Media Release, dated 21st March, 2012

“....Over the past few years, the stainless steel market has seen major changes in the grades of stainless produced. Chromium-manganese grades have become increasingly important in this time. More recently, production of chromium grades has also increased. Table 3 shows the market share of the three main categories of stainless steel. The data is based on reports from ISSF's stainless steel producing members.

Table 3 Stainless steel production by grade (percent of steel production- preliminary estimates)

Grade category	Quarter 1	Quarter 2	Quarter 3	Quarter 4	2011(p)
Chromium manganese steels (200 series)	13.4	13.6	13.7	14.4	13.8
Chromium nickel steels (300 series)	59.5	57.3	58.4	57.6	58.2
Chromium steels (400 series)	27.1	29.1	28	28	28

56. It is observed from the information filed by the Domestic Industry that the global production of series 300 has remained constant in relative terms. Under the circumstances, the above information yet again proves that there is nothing unforeseen or sudden about the pattern of consumption of the Series 300 or Grade 304 in India or elsewhere.

Increasingly excessive capacities with Chinese producers leading to rising surplus production:

57. The Domestic Industry has given certain information with regard to their claim of excessive capacities in China. These evidences are in the form of quotations from various journals and news reports. Unfortunately, not much reliance can be placed on such reports for a number of reasons. First, these reports are not specific to the Product under Consideration but refer to the larger segment of the stainless steel industry. Secondly, the information is not complete or comprehensive enough to form any cogent views. Thirdly, even if it is assumed that there is excessive capacity in China, it has not been demonstrated that these capacities are imminently or even likely to find their way into the Indian market. Lastly, the apprehension expressed by the DI is self-contradictory inasmuch as if the Chinese demand pattern is claimed to be shifting from 200 series to 300 series, it cannot be claimed that there would be any pressure on the demand of the 300 series. For the aforesaid reasons, it is considered appropriate to conclude that the Domestic Industry has failed to bring any concrete information which could sustain their claim of unforeseen developments. On the other hand, the information supplied by them and as discussed above, leads to an inescapable conclusion that consumption, production and demand of the Product under Consideration remained highly predictable not only in the context of the global trends but also for China in particular.

Market Disruption and Threat of Market disruption

Market Disruption

58. Under the Rules, “market disruption” shall be caused whenever an article is imported into India, from the People’s Republic of China, in such increased quantities and under such conditions so as to cause or threatening to cause market disruption to domestic industry. “Market disruption” shall be caused whenever imports of a like article or a directly competitive article produced by the domestic industry, increase rapidly, either absolutely or relatively, so as to be a significant cause of material injury, or threat of material injury, to the domestic industry. “Threat of market disruption” means a clear and imminent danger of market disruption.

59. Annexure to Rule 8 of the Customs Tariff (Transitional Product Specific Safeguard Duty) Rules, 2002 requires that certain listed factors as well as other relevant factors must be evaluated to determine market disruption or threat of market disruption. Any such evaluation will be different for different industries in different cases depending on the facts of the particular case and the situation of the industry concerned.

(i) Accordingly, while analyzing market disruption or threat of market disruption, all factors which are mentioned in the rules as well as other factors which are relevant for determination of market disruption or threat of market disruption, have been considered. The determination of market disruption or threat of market disruption is based on evaluation of the overall position of the domestic industry in the light of all the relevant factors having a

bearing on the situation of that industry.

(a) **Market share:** For the purposes of determining market share, the sales volume of the domestic industry considered is as per excise records maintained by the domestic industry. Market share has been determined considering dispatches by the Indian industry and imports into India. It is seen that the market share of the domestic industry has declined from 51.33% in 2009-10 to 40.88% in 2011-12. This was the period when the imports entered the Indian market at a significant rate capturing the Indian market. However, the market share has remained constant at around 40% in the POI as compared to the preceding financial year.

The Domestic Industry has submitted that the decline in the market share of the domestic industry was despite increase in demand and imposition of anti-dumping duty on imports from various sources. The domestic industry has contended that it had expected increase in its market share with the imposition of anti dumping duty for two reasons - (i) the domestic industry should have gained market share with fair market conditions being restored in the Indian market by imposing anti dumping duty, (ii) the domestic industry significantly augmented its capacity by undertaking green field expansion of the plant and wider product size (including PUC of width 1250 mm and above). This expansion of capacity & product size/type should have enabled the domestic industry to meet the increasing share of the demand of the product in the market.

	2009-10	2010-11	2011-12
Total Imports (MT)	33,703	46,364	54,906
Imports from China (MT)	5,264	26,702	35,742
Non China Imports(MT)	28439	19662	19164
Domestic Sales by Industry (MT)	44802	36772	41646
Sales of other Domestic Producers	8777	5645	5450
Total Demand (MT)	87,282	88,781	102,002
Market Share of Imports from China(%)	6.03	30.08	35.04
Market Share of Imports from Non-China(%)	32.58	22.15	18.79
Market Share of Domestic Industry (%)	51.33	41.42	40.83
Market Share of other Producers (%)	10.06	6.36	5.34

It can be appreciated that with the imposition of anti-dumping duties on certain sources of supply, the Domestic Industry would expect to increase its prices due to the protective cover of anti-dumping duties or to improve its market share. However, it cannot be overlooked that after the initial drop in the market share of the Domestic Industry in the year 2010-11 as compared to the preceding financial year, the market share of the Domestic Industry stabilized at around 41% during the POI. It may also be seen that the production from the Odisha plant was not available in the domestic market until around July-August of 2011.

(b) **Production:-** The production of the domestic industry has been determined on the basis of production reported by the domestic industry in its excise records. It is submitted by the Domestic Industry that due to the increasing demand for the product under consideration, the domestic industry increased its capacity. The domestic industry has set up a 0.6 million MT green field plant at Odisha for production of various hot and cold rolled steel products, including the product under consideration. The Domestic Industry has further submitted that it has three broad market segments – (a) merchant domestic market; (b) captive consumption for various cold drawn steel products, and; (c) exports. It is claimed by the Domestic Industry that capacities have been set up by them considering the domestic and global demand for the product under consideration.

Year	Available capacity for 304 grade	Total Production		Total Demand
		MT	MT	
2009-10	109,189	100,265		87,281
2010-11	114,258	98,448		88,782
2011-12	235,347	129,900		102,002

The domestic industry contended that domestic sales declined despite increase in production due to surge in imports. The domestic industry further contended that the increase in production in 2011-12 as compared to 2010-11 is because of the enhancement of the production facility in July 2011. Given commencement of production at new production facilities and imposition of anti dumping duty, the petitioner contended that the domestic industry had a legitimate expectation to significantly increase its production.

It is seen that the overall production of the domestic industry increased over the period with significant increase in 2011-12 after commencement of production at the new plant in July, 2011. It is also seen that the production of the domestic industry for the product under consideration is more than the demand in the country. Thus, it is obvious that the production by the Domestic Industry is not only a function of the domestic demand of the Product under Consideration but is significantly dependent upon the movements in the export market and the level of captive consumption. Thus, it cannot be conclusively said that there has been any negative effect on the production for domestic consumption on account of the increased imports from China.

(c) **Capacity Utilization:** The domestic industry enhanced its capacities by setting up a fresh new green field plant at Odisha, which commenced commercial production in July 2011. The domestic industry contended that the addition to capacity was in view of present and potential demand of the product in the domestic and international market. However, capacity utilization of the domestic industry declined significantly in 2011-12 despite increase in the demand for the product under consideration. Capacity utilization fell from 91.82% in 2009-10 to 55.19% in 2011-12. The domestic industry contended that the production process demands that the producers should continuously produce in order to keep the furnace running. The rate of production is regulated based on the ability of the company to store the product and the potential market situation. The domestic industry contended that low capacity utilization is a horrid situation for any producer of the product under consideration.

Financial Year	Production	Available capacity for 304 grade	Capacity Utilisation
	MT	MT	%
2009-10	100,265	109,189	91.82
2010-11	98,448	114,258	86.16
2011-12	129,900	235,347	55.19

While a cursory look at the capacity utilization figures would suggest a fall, the fall in the capacity utilization of the Domestic Industry does not decisively show any kind of market disruption. First, the available capacity is clearly a function of the demand and profitability situation for other series and grades. Secondly, it has been contended by the interested parties that it was the green field project at Odisha which was operating at lower levels of capacity utilization.

(d) **Inventories:** The level of inventories is considered as per excise records maintained by the domestic industry. The levels of inventories have increased significantly throughout the injury period. The table below depicts the inventory levels which have witnessed a massive surge from 2120 MT in 2009-10 to 13663 MT in 2011-12, almost six times in 2011-12 from the 2009-10 level, reflecting the plight of the domestic industry.

Year	Inventory
	MT
2009-10	2,120
2010-11	2,876
2011-12	13663

(e) **Sales:** The sales of the Domestic Industry, as verified from their excise records, are as under:

Year	Production	Sales	Total Demand
	MT	MT	MT

2009-10	100,265	44,802	87,281
2010-11	98,448	36,772	88,782
2011-12	129,900	41,646	102,002

(i) it is noted that domestic sales of the domestic industry declined in 2010-11 with the surge in Chinese imports. The domestic sales of the domestic industry improved in 2011-12 in view of the enhanced capacity and imposition of anti-dumping duties against certain sources of supply. However, the same were still below the levels achieved in 2009-10, even when demand for the product increased significantly. It is noted that whereas the demand for the product under consideration increased by 1501 MT in 2010-11 as compared to 2009-10, the domestic industry lost sales by 8030 MT over this period. Thereafter, in 2011-12, whereas the demand increased by 14720, the increase in sales of the domestic industry was merely 4874 MT, i.e., even less than the volume of 8030 MT lost by the domestic industry in 2010-11.

(ii) It is also noted in relative terms, sales as percent of demand declined from 51.33% of demand in 2009-10 to 41.42% in 2010-11 and then marginally to 40.82% of demand in 2011-12. This shows possible adverse impact on the sales volumes of the domestic industry due to surge in Chinese imports.

Year	Sales	Demand	Sales as % of demand
	MT	MT	%
2009-10	44,802	87,281	51.33
2010-11	36772	88,782	41.42
2011-12	41,646	102,002	40.82

(iii) The domestic industry claimed that the rising imports of product under consideration have prevented the domestic industry from selling its production in the domestic market in proportion to the increase in demand.

(iv) Whereas the demand of the product increased by 14720 MT in 2011-12 as compared to 2009-10, the Chinese imports increased by 30477 MT and the sales of the domestic industry declined by 3156 MT over the period. This clearly shows that increase in Chinese imports was far more than increase in demand of the product in India and consequently the Chinese imports have captured significant market share affecting the sales of the domestic industry.

(f) **Employment and Productivity:** The Domestic Industry itself has admitted that the overall productivity has deteriorated during the year 2011-12 despite the fact that the employment increased during 2011-12 due to the setting up of the new unit in Odisha which started functioning from July, 2011.

Financial Year	Production	Employment	Productivity
	MT	No.	MT/No.
2009-10	100,265	511	196
2010-11	98,448	526	187
2011-12	129,900	802	162

Thus, the lower level of productivity, which appears primarily on account of the new facility, cannot be attributed to the increased imports from China.

(g) **Profit/loss:** The domestic industry has reported profit before tax, duly certified by a practicing Chartered Accountant, which shows as follows:-

SN	Particulars	Units	2009-10	2010-11	2011-12
1	Profit/loss	Indexed	100	(222)	(726)
2	Profit in domestic sales	Indexed	100	(182)	(675)

The profit reported by the domestic industry has been considered in respect of the product under consideration relating to its domestic operations only. It is claimed by the Domestic Industry that the landed price of the imports is significantly below the selling price of the domestic industry. As a result of the significant price difference between the domestic and the Chinese product, the consumers resorted to significantly higher sourcing from China. It is claimed that the domestic industry has been prevented from increasing its prices in proportion to the increase in the cost of production. Thus, whereas the costs have increased due to the increase in the input costs, the domestic industry was unable to increase its selling price in proportion to the increase in costs. It is further claimed that whereas the selling price was above the cost of the production earlier in 2009-10, it was below the cost of the production in 2010-11. The extent of the difference increased significantly in 2011-12. According to the Domestic Industry, the profit per unit of the domestic sales declined significantly with the increase in imports to an extent that the domestic industry suffered significant financial losses in 2010-11 and 2011-12.

It is seen that there has been a significant decline in the profitability of the Domestic Industry since 2009-10.

Price undercutting, suppression/depression: It is observed that the weighted average landed price of the imports of PUC from China is significantly lower than the selling price of the domestic industry. There is a significant price difference between the domestic and imported product.

SN	Particulars	Units	2009-10	2010-11	2011-12
1	Import Volume	MT	5,264	26,702	35,741
2	Import Value	Rs. Lacs	5,960	37,812	52,793
3	CIF	Rs/MT	112,099	140,203	146,245
4	Assessable Value	Rs/MT	113,220	141,605	147,708
5	Landed Value	Rs/MT	119,051	148,897	155,315
6	Landed Value(indexed)		100	125	130
7	Selling Price of DI(indexed)		103	131	135
8	Cost of Sales(indexed)		101	136	151

It is seen from the above table that whereas the cost of the sale and the selling price both increased, the increase in the cost of sale is far higher than the increase in the selling price of the domestic industry. The imports were thus suppressing the domestic industry prices in the market. It is found that the prices of major inputs increased very significantly over the period.

Return on investment: The domestic industry has reported its return on investment considering profit before interest and taxes earned in the domestic operations relating to the product under consideration. It is seen that the return on investments showed the same trend as that of the profitability. The return on investment declined significantly over the period.

Financial Year	Return on investments(Indexed)
	%
2009-10	100
2010-11	(97)
2011-12	(161)

61. Threat of Market Disruption

(i) The rules provides as follows –

(1) *In the investigation to determine whether increased imports have caused or are threatening to cause "market disruption" to a domestic industry, the Director General shall evaluate all relevant factors of an objective and quantifiable nature having a bearing on the situation of that industry, in particular, the rate and amount of the increase in imports of the article concerned in absolute and relative terms, the share of the domestic market taken by increased imports, changes in the level of sales, production, productivity, capacity utilization, profits and losses, and employment.*

7a. "threat of market disruption" means a clear and imminent danger of market disruption.

(ii) The Panel on US — Lamb⁵ considered that a focus on the recent data available pertaining to the end of an investigation period was logical in view of the future-oriented nature of a threat of serious injury analysis. The relevant extracts are as follows:

"In our view, due to the future-oriented nature of a threat analysis, it would seem logical that occurrences at the beginning of an investigation period are less relevant than those at the end of that period. While the SG Agreement does not specify the appropriate duration of the time-period to be considered in an investigation, the Panel and Appellate Body in Argentina — Footwear both considered this issue to some extent. Both concluded that (for an actual serious injury finding) the most recent data were clearly the most relevant. In particular, the Appellate Body stated that 'the relevant investigation period should not only end in the very recent past, the investigation period should be the recent past'.

Given that a threat of serious injury pertains to imminent significant overall impairment, i.e., an event to take place in the immediate future, the same principle should hold true a fortiori for threat determinations compared with present serious injury determinations. This supports the view that the USITC was correct to focus on the most recent data available from the end of the investigation period. We also consider that data from 1997 and interim-1998 cover an adequate and reasonable time-period if complemented by projections extrapolating existing trends into the imminent future so as to ensure the prospective analysis which a threat determination requires.

Therefore, we consider that, by basing its determination on events at the end of the investigation period (i.e., one year and nine months) rather than over the course of the entire investigation period, the USITC analyzed sufficiently recent data for making a valid evaluation of whether significant overall 'impairment' was "imminent" in the near future. By the same token, we also consider that, by basing its determination at all on data about events from the recent past, rather than relying exclusively on projections for the various industry indicators into the future, the USITC made its threat determination on the basis of objective and quantifiable facts, and 'not merely on allegation, conjecture or remote possibility'.

(iii) The Panel Report on US — Lamb, in a finding subsequently not reviewed by the Appellate Body, addressed the question whether once imports have increased to already cause some degree of injury, there is no requirement of additional increased imports in order to legitimately determine the existence of a threat of serious injury. The relevant extracts are as follows:

"The complainants further claim that the US reference to projections of future increases in imports in defending its threat analysis amounts to equating a 'threat of increased imports' with a 'threat of serious injury', which the Argentina — Footwear panel found not to be permissible....

We agree in general with the complainants' argument that a threat of increased imports as such cannot be equated with threat of serious injury. However, in our view, this is not what the USITC has done in this case. Moreover, we also deem it possible that imports continuing on an elevated level for a longer period without further increasing at the end of the investigation period may, if unchecked, go on to cause serious injury (i.e., may threaten to cause serious injury). That is, if increased imports at a certain point in time cause less than serious injury, it is not necessarily true that a threat of serious injury can only be

⁵ . Panel Report on US — Lamb, paras. 7.192-7.194

caused by a further increase, i.e., additional increased imports. In our view, in the particular circumstances of a case, a continuation of imports at an already recently increased level may suffice to cause such threat.

62. It has been argued by the Domestic Industry that there is a significant shift in the imports from the third countries to China. Import from countries other than China has decreased from 84.38% in 2009-10 to 34.90% in 2011-12, whereas the imports from China increased from 15.62% to 65.10% during the same period. According to the Domestic Industry, the threat of serious market disruption is established by the following factors:-

- a) The price difference between the domestic and imported product is quite significant, thus making Chinese product significantly attractive vis-à-vis domestic industry product.
- b) The Chinese producers are holding significant unutilized capacities. Resultantly, they are continuously looking for additional markets to the extent possible.
- c) The advantages of having lower cost of production owing to the availability cheap nickel, abundant coke, low borrowing rate etc. is likely to lead the Chinese producers to intensify its activities in the Indian market.
- d) The demand of the product is growing and the Indian market is large and price sensitive.
- e) The domestic industry is faced with significantly high level of inventories, which increased from 2120 MT to 13663 MT.
- f) The nature of production process is such that the producers tend to optimize the same. Resultantly, both the Chinese producers and domestic industry are trying to increase production. Increased imports are threatening market disruption under the circumstances.
- g) Chinese producers have significantly increased production of 300 series products (304 grade products forms significant proportion in 300 series production) both in absolute and relative terms. Chinese production of 300 series products increased significantly from 0.7 million MT in 2004 to 6.935 million MT in 2011.

63. It is seen that the threat perception expressed by the Domestic Industry is based on the reports showing production-consumption gap of almost 1.4 million tonnes in 2011, which was essentially a result of capacity and production growing at a higher pace as compared to consumption in the domestic market of China. They claimed that the huge growth in volumes in China has forced Chinese producers to sell their products at lower prices as compared to Indian producer prices. It has been held by the Appellate Body in the decision cited above that it is the recent period which is of greater significance while carrying out a threat analysis. The figures of the POI when compared to the immediately preceding period do not support the claim of any serious threat of market disruption. Domestic Industry's reliance on the figures of 2009-10 as the base year is misplaced also for the purpose of threat analysis. However, it can be seen that some of the difficulties being faced by the Domestic Industry could be on account of the low prices from China.

64. Other Factors of Injury:

- (i) Annexure to the Rules provides as follows:

The determination referred to in paragraph (1) shall not be made unless the investigation demonstrates, on the basis of objective evidence, the existence of the causal link between increased imports of the article concerned and "market disruption" or threat thereof. When factors other than increased imports are causing "market disruption" to the domestic industry at the same time, such "market disruption" shall not be attributed to increased imports. In such case, the Director General may refer the complaint to the authority for anti-dumping or countervailing duty investigations, as appropriate.

- (ii) According to the Appellate Body's decision concerning US-Anti-Dumping Measures on Certain Hot-Rolled Steel Products from Japan, the injurious effects of the import should be separated and distinguished from all the other factors which affected the local industry.

(iii) In the light of the above, other factors that may possibly be attributed to the injury to domestic industry have been examined as follows –

- a) Demand of the product: There is no contraction in demand of the product under consideration in India. Demand of the product in India has shown significant increase over the years.
- b) Changes in the patterns of consumption: It is claimed by the Domestic Industry that there is no evidence on record that the pattern of consumption with regard to the product under consideration has undergone any material change as far as the Indian market is concerned. None of the interested parties has also brought out any evidence to dispute this claim of the Domestic Industry.
- c) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers: There is no evidence on record that trade restrictive practices or competition between the foreign and domestic producers could have contributed to the injury to the domestic industry.
- d) Developments in Technology: There is no evidence on record that technology for production of the product has undergone any such significant change and that the same could have caused injury to the domestic industry.
- e) Export performance: The claimed injury to the domestic industry is on account of domestic operations. Domestic industry has provided injury information for domestic operations. It is noted that the exports made by the domestic industry have significantly increased. It would be seen that (a) the export volumes of the domestic industry have increased, and (b) profitability of the domestic industry in exports is worse than the domestic market.

Particulars	Units	2009-10	2010-11	2011-12
Exports (Qty.)	MT	2,776	6,045	13,093
Exports (value)-indexed		100	252	550
Export Profits (indexed)		100	22	18.1

- (iv) With regard to the contention that the ramp up of recently operationalised facility at Odisha caused injury to the domestic industry, the Domestic Industry has claimed that the Annual Report does make a reference to Odisha ramp up as a reason for the lower performance of the product under consideration, but the same has to be read in the context of the fact that the Annual Report refers to the ramp-up of the finishing facilities and not the Hot Rolling facilities. The petitioner is producing a number of products at Odisha plant. The petitioner is producing hot rolled products and thereafter cold rolled products. The petitioner has clarified that it has referred to ramp-up of production facilities in the context of cold rolled facilities.
- (v) With regard to the contention that adverse exchange fluctuations arising on account of sharp depreciation of Indian Rupee has caused injury to the domestic industry, it is noted that the information provided by the domestic industry with regard to the injury does not include the injury suffered by the domestic industry because of exchange fluctuations.
- (vi) With regard to the contention that the entry of Odisha plant into domestic market has caused injury, it is noted that the domestic industry has furnished the information of both the plants separately. It is also noted that both the plants individually are suffering injury.

Table below shows separate performance of the two plants

Both Plants

SN	Description	UOM	2009-10	2010-11	2011-12
1	Capacity	MT	109,189	114,258	235,347
2	Production	MT	100,265	98,448	129,900

3	Capacity Utilisation	%	92	86	55
4	Domestic Sales	MT	44,801	36,772	41,646
5	Export	MT	3,598	9,944	13,098
6	Inventories	MT	2,120	2,876	13,663
7	Cost Of sales(indexed)	Rs/MT	100	135	150
8	Selling Price(indexed)	Rs/MT	100	128	131
9	Profit and loss(indexed)	Rs/MT	100	(222)	(726)

Hissar Plant

SN	Description	UOM	2009-10	2010-11	2011-12
1	Capacity	MT	109189	114258	117,119
2	Production	MT	100265	98448	105,937
3	Capacity Utilisation	%	92	86	90
4	Domestic Sales	MT	44,801	36,772	36355
5	Export	MT	3,598	9,944	6,397
6	Inventories	MT	2,120	2,876	1,692
7	Cost Of sales(indexed)	Rs/MT	100	135	147
8	Selling Price(indexed)	Rs/MT	100	128	130
9	Profit and loss(indexed)	Rs/MT	100	(222)	(662)

Oddisa Plant

SN	Description	UOM	2011-12
1	Capacity	MT	118,227
2	Production	MT	23,964
3	Capacity Utilisation	%	20
4	Domestic Sales	MT	5,291
5	Export	MT	6,701
6	Inventories	MT	11,971
7	Cost Of sales	Rs/MT	****
8	Selling Price	Rs/MT	***
9	Profit and loss	Rs/MT	-ve

(vii) With regard to the contention that the lack of availability of chrome ore which forms 16-20% of the raw material used, it is noted that production records do not show disruption of production due to the non availability of the raw materials.

65. Causal Link between Increased Import and Market disruption or Threat of Market disruption:

(i) The Panel on Korea — Dairy set forth the basic approach for determining “causation”:

“In performing its causal link assessment, it is our view that the national authority needs to analyse and determine whether developments in the industry, considered by the national authority to demonstrate serious injury, have been caused by the increased imports. In its causation assessment, the

national authority is obliged to evaluate all relevant factors of an objective and quantifiable nature having a bearing on the situation of that industry. In addition, if the national authority has identified factors other than increased imports which have caused injury to the domestic industry, it shall ensure that any injury caused by such factors is not considered to have been caused by the increased imports.

To establish a causal link, Korea has to demonstrate that the injury to its domestic industry results from increased imports. In other words, Korea has to demonstrate that the imports of SMPP cause injury to the domestic industry producing milk powder and raw milk. In addition, having analyzed the situation of the domestic industry, the Korean authority has the obligation not to attribute to the increased imports any injury caused by other factors.⁶

(ii) For the purpose of determining causation, all relevant factors of an objective and quantifiable nature having a bearing on the situation of that industry have been evaluated. The product is largely sold in competition with imports. The landed price of imports is significantly lower than the selling prices of the domestic industry. It has been claimed that the domestic industry is compelled to offer non-remunerative prices. It is seen that the cost of production for the product under consideration increased. Even when the domestic industry increased its prices, the rate of increase in the cost of production was higher than the rate of increase in the selling price. Thus, there are indications that the Domestic Industry is suffering on account of lower prices being offered by the Chinese exporters. The domestic industry has suffered decline in profits and return on investment to such an extent that the domestic industry suffered financial losses from a situation of profits and negative return on investment from a situation of positive return on investment.

66. Public Interest:

(i) Article 3 of the Agreement on safeguards states as follows:

*"A Member may apply a safeguard measure only following an investigation by the competent authorities of that Member pursuant to procedures previously established and made public in consonance with Article X of GATT 1994. This investigation shall include reasonable public notice to all interested parties and public hearings or other appropriate means in which importers, exporters and other interested parties could present evidence and their views, including the opportunity to respond to the presentations of other parties and to submit their views, *inter alia*, as to whether or not the application of a safeguard measure would be in the public interest. The competent authorities shall publish a report setting forth their findings and reasoned conclusions reached on all pertinent issues of fact and law."*

- (ii) In an economy there are varying and sometime competing interests of different economic players. The imposition of safeguard duty can affect different players differently and the impacts may not always be most suitable for all the different economic players when they have competing interests. Therefore interests of various economic player groups have been analyzed based on the available information.
- (iii) Some interested parties have argued that imposition of safeguard duty would not be in public interest. The issue has been examined. In this respect, it is important to keep the prime objective of transitional safeguard laws in mind, which is to address injury to the domestic industry because of increased Chinese imports. It is in the interest of all to keep a healthy and competitive Industry. It is apparent that if the safeguard measures are not taken, both the prices and market share of domestic industry will further decline, resulting in financial losses to the domestic industry to the extent of getting the domestic industry unviable and consequent loss of employment as well as loss of strategic and economic interest to keep the domestic market competitive. The imposition of safeguard duty would allow the domestic industry to remain competitive and, at the same time, users/buyers will have a wider choice to source their material requirements, that too at competitive prices.
- (iv) The domestic industry has argued that public interest should be examined in light of the interests of the producers, consumers and public at large. The measure would prevent injury to the domestic industry from increased imports from China. Domestic industry is suffering significant injury and imposition of safeguard duty would prevent this injury to the domestic producers of the product under consideration. Imposition of safeguard duty would be in the interest of domestic consumers, as it is in the consumers' long term interest to have a competitive Indian domestic industry capable of supplying the product under consideration to the consumers and compete with foreign producers. This is possible only when the domestic industry is able to recover from the injury suffered due to the increased imports. It is in the interest of the public at large to

⁶ *Panel Report on Korea – Dairy*, paras. 7.89-7.90

have a strong, competitive Indian domestic industry. This will not be possible if injury to the domestic industry as a result of increased imports is allowed to be continued.

(v) Domestic industry has also submitted that if increased imports are allowed unchecked, injury to domestic industry will continue and worsen. If domestic industry is allowed to deteriorate to a condition in which it can no longer operate, Indian consumers will be almost completely dependent on foreign producers.

(vi) Domestic industry further contended that imposition of safeguard duty shall be in public interest on the basis of its quantified claim on the downstream industry. The domestic industry concluded that the imposed of the proposed safeguard duty on the consumers shall not be significant. It is noted that these quantified claims of the domestic industry have not been refuted by opposing interested parties.

(vii) It is noted that while arguing that the imposition of the safeguard duty shall not be in public interest, none of the interested parties has provided any quantified claim in this regard.

(viii) It is also noted that already anti dumping duty has been imposed on the imports of the product under consideration from other sources. It has not been established by any interested party that imposition of these anti dumping duties has caused any significant distortion in the market. It has not been demonstrated by the consumers either that the impact of safeguard duty on the consumers will be unbearable. At the same time, the domestic industry has argued that given the market share of China, the impact of proposed safeguard duty on the consumer industry shall be insignificant. The domestic industry has further stated that it shall not increase its prices as a result of imposition of the proposed safeguard duty. Even in the Public Hearing, none of the interested parties raised any concern whatsoever of the coercive/excessive impact of the 20% ad-valorem provisional safeguard duty already in vogue or that this imposition has caused any market distortion or has impacted the user industries significantly. On the contrary, complete absence of any reference to the possible adverse impact of provisional safeguard duty imposed on interested/user parties confirms that the overall incidence of the current safeguard duty is very minimal.

(ix) According to the claim of the Domestic Industry, the consumer profile and the impact of the proposed safeguard duty on each of the consumer industry and eventual impact on the cost of the end products is insignificant as can be seen from the following Table:

SN	Application Sector	% Share in total sales of 304 series
1	Power Sector	43%
a	Coal Based	
b	Nuclear Installations	1.50%
2	ABC Sector	
a	Elevator/Escalator	43%
b	Architecture, Building and Construction sector	
3	Process	6%
a	Petroleum & Petrochemicals	
b	Paint Shop	
c	Fertilizer	2.50%
D	Other Process & Chemical(including Pharma & Paper)	
4	Food Processing	6%
5	Biofuel	2.50%

6	Dairy	2.50%
7	Transportation(Auto, Railways etc)	1.50%
SN	Application Sector	Impact on consumer
1	Power Sector	
A	Coal Based	0.01%
B	Nuclear Installations	0.02%
2	ABC Sector	
A	Elevator/Escalator	0.24%
B	Architecture, Building and Construction sector	0.04%
3	Process	
A	Petroleum & Petrochemicals	0.20%
B	Paint·Shop	0.20%
C	Fertilizer	0.20%
D	Other Process & Chemical(including Pharma&Paper)	0.20%
4	Food Processing	0.08%
5	Biofuel	0.08%
6	Dairy	0.32%
7	Transportation(Auto, Railways etc)	0.08%

67. Other Issues:

a. **Principles of natural justice Violated:** As regards the contention that scope of product under consideration was modified without intimating the interested parties violating the principles of natural justice, it is noted that the Notice of Initiation issued considered the product under investigation as “Hot Rolled Flat Products of Stainless Steel of 300 series (of all widths) and encompassing all austenitic grades having minimum Nickel (Ni) content of 6%, compulsorily containing chromium with or without the presence of other alloying elements like molybdenum, titanium etc.” classified under Customs sub-heading no. 721911, 721912, 721913, 721914, 721921, 721922, 721923, 721924, 722011, 722012 of the Customs Tariff Act, 1975”. In response to this initiation it was found that several interested parties have raised the issue that the scope of the products was flawed in many aspects of the facts and that to investigate and impose safeguard measures on whole range of 300 series of flat products of hot rolled stainless steel do not reflect the actual situation of the ordinary course of trade in the sector. On scrutiny of the submissions made by the interested parties including Govt. of China, M/s China Iron & Steel Association, M/s Ramani Steel House, Mumbai etc. and the response of the Domestic Industry to the said submissions, it was noted that the scope of the product under consideration is large and it requires modifying/narrowing down to a particular grade for the purpose of adequate and appropriate injury analysis. Therefore, based on the available records, submissions of the interested parties and the domestic industry, the

scope of the product under consideration was restricted/narrowed from 300 series to grade 304. Hence it is seen that the scope of product under consideration was altered in view of the submissions made by the interested parties and there is no violation of the principles of natural justice in any manner whatsoever.

- b. **Opportunity of hearing before changing product scope:** As regards the contention of the interested parties that no opportunity was given to comment on the data of 304 grade, it is noted that the domestic industry was asked to submit data for 304 grade separately which was furnished by the domestic industry and was kept in the public file much prior to the issuance of preliminary finding. However, none of the interested parties filed comments on the same. Further, the preliminary findings were issued based on data only for 304 grade. The Director General held two oral hearings and wherein submissions were made by domestic industry based solely on data for 304 grade. Further, the interested parties got a number of opportunities to comment on the data relating to revised scope of the product under consideration and defend their interests.
- c. **Further modification in product scope:** With regard to the argument that product under consideration should be further modified as a lot of non-304 grades will also be covered by safeguard Duty, it is noted that the product under consideration is well defined. It is seen that preliminary finding categorically mentions that the scope of the product under consideration covers ASTM 304 grades (including all variants of 304 grade) with all its variants and equivalent specifications in other standards. If products sought to be imported do not satisfy any of the criteria mentioned in the product description, safeguard duty in any case shall not apply.
- d. With regard to the argument that the preliminary finding does not deal with the emergency situation for the imposition of provisional duty, it is noted that paragraph 2, 3 and paragraph 50 of the Preliminary findings earlier issued, brings out the specific circumstances establishing need for and justifying the imposition of provisional duty. The recommendations of the Director General were accepted by the Board on Safeguards and the Central Government had imposed interim measures.
- e. **Circumvention by importing larger sizes:** As regards the submission of the interested parties that cutting of higher width coils into smaller sizes is not feasible, it is noted that the evidence provided by the domestic industry clearly shows that there are stand alone companies who are engaged in cutting and slitting operations only. Further, it is noted that the domestic industry has not reported significant difference in cost of production for products having different width. It is also noted that product is cut to desired size and width for eventual use. In any case, the product scope has been restricted to the widths produced by the domestic industry and the argument of the petitioner to extend the scope of the product under consideration to widths not produced by the petitioner has not been accepted.
- f. **Quality of Products:** As regards the argument that domestic producer may not satisfy demand for high quality stainless steel products, it is noted that the capacity for production of product under consideration with the domestic industry is far higher than demand for the product under consideration in the country. Goods are produced conforming to national and international standards. The goods produced by the domestic industry and imported from China are like articles and conform to the same standards required by the consumers. It is factually not correct that the Indian industry cannot meet the demand for high quality stainless steel products. Further, the domestic industry has been producing and supplying these goods from its Hissar plant for past several years.
- g. **Installed Capacity:** As regards the argument on false claims made by domestic industry with regard to the different capacity claims before different investigating authorities, it is to be noted that in the present case, this Directorate has considered melting capacity and production as per Excise records. There is no occasion for this Directorate to get into the issue of the treatment given to capacities by the Designated Authority for Anti-dumping.
- h. As regards the statement on annual reports that enhanced capacity has not stabilized, it is noted that the domestic industry has clarified that the statements in annual report of published documents are in respect of finishing lines, i.e., cold rolling facilities and the same does not pertain to hot rolling facilities. The product under consideration is produced from hot rolling facilities. Moreover, production records as per excise have been considered, which clearly show production of the product under consideration.
- i. **Figures of Major parameters subsequent to the change in product scope:** With regard to the contention that major parameters have not been revisited while issuing the corrigendum, it was noted that imports for the width above 1605 are negligible and there are only marginal differences in the data after considering data for the

restricted width, as is elaborated under the relevant heading hereunder. Therefore, it was concluded that it was not necessary to modify the figures in the preliminary findings. The eventual conclusion would have, in any case, remained the same.

- j. With regard to the argument that only 12% of the depreciation or proportionate depreciation as shown in Balance sheet should be allowed, it is noted that the figures of sales and cost are taken from the Balance Sheet prepared as per the Companies Act and records that are consistent with GAAP.
- k. Dual trade remedy: As regards the argument that petitioner is a habitual user of trade remedy action, it is noted that the petition has been examined in accordance with the safeguard law. There is no restriction for any industry from seeking relief under the Rules so long as the conditions laid down under the law are met with.

68. Examination of Post POI data:

In the given circumstances, an attempt was made to analyse the trend in the period after the POI i.e. 2012-13 (from 01-04-2012 till 31-12-2012) to draw a clear inference about the possibility of accentuation of the injury to the domestic industry. The domestic industry vide their letter dated 24th May '13 submitted the data pertaining to certain economic parameters which they have filed with their petition before the DGAD for initiating anti dumping investigation for the subject "product under consideration" imported from China. On scrutiny of the said data it is noted that during the post POI period, there is a decline in the overall imports as well as imports from China so much so that the market share of imports have declined by about 4% as against the corresponding rise of the market share of the domestic industry by about 9%. There is a significant improvement in the production, exports and inventory position with a very sharp increase in domestic sales. Even though there appears to be a fall in profitability for the domestic industry, in all fairness, in view of the above, it cannot at least be attributed to the surge in the imports from China.

69. Conclusion:

On the basis of the above examination and analysis above, it is concluded that:

- a. There has been a significant increase in imports from China in absolute terms in the POI as compared to the base year. However, this increase is not as sharp as compared to the immediately preceding year. Even though this increase is significant, it is important to note that in this case, the increase as compared to the domestic production has remained almost constant and there has been less significant increase when the comparisons are made in relation to the total consumption. Thus, even if it cannot be concluded that there is a rapid or recent surge in imports from China over the entire POI, it is noted that there has been significant increase in imports from China so as to cause or threaten to cause market disruption.
- b. The Domestic Industry has not been able to demonstrate that the developments in the market for the Product under Consideration were unforeseen. On the contrary, even the information supplied by them does not support their case, as examined in detail in the relevant paragraphs above.
- c. The Domestic Industry has not been able to show market disruption or serious injury on account of factors of market share, production, sales and capacity utilization. However, the Domestic Industry is indeed suffering losses with a negative return on capital employed. As the rising imports have affected the demand in the country considerably, the domestic industry has faced problems in sales and rising inventory levels. It establishes the causal link between the rise in imports from China and market disruption caused to this extent during the POI.
- d. On analysis of the data for the post POI period to arrive at a fair conclusion, it is observed that the position of the domestic industry has improved on account of factors of market share, production, sales, export and inventory. Even the imports have declined. Thus, there exists no cause of concern for any form of market disruption or threat of market disruption to the domestic industry in the post POI period to the extent that no further protection is required.
- e. The basic problem of the Domestic Industry is in the context of low price realization which could be on account of the low prices offered by the Chinese exporters. The Domestic Industry has, however, not given enough details on the price front so as to carry out a conclusive comparative analysis perhaps due to the fact that this is an investigation under Section 8C of the Customs Tariff Act.

70. Recommendations:

In view of the discussions detailed above and the conclusions reached, it is recommended that there are no strong grounds to recommend any further duty beyond the period already covered by the provisional duty in terms of Section 8C of the Customs Tariff Act. The duty imposed provisionally is therefore confirmed and the final duty as per the detailed calculations for the period of 200 days starting from 4th January, 2013 till 22nd July 2013 (both days inclusive) is recommended to be imposed at a level of 20% ad valorem on all imports of the product under consideration (same as in provisional findings/corrigendum) from China.

[F. No. D-22011/06/2012/Part II]

G. S. SARNA, Director General